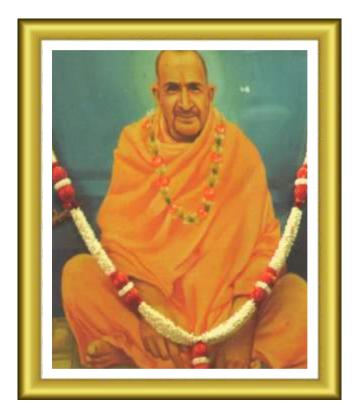
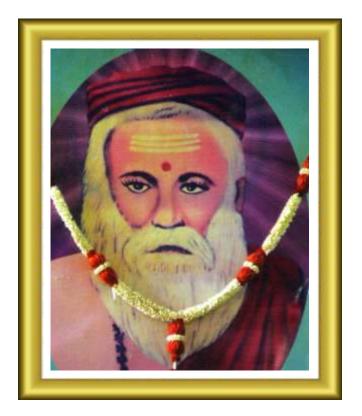


श्री लालनाथ हिन्दू महाविद्यालय रोहतक 2017-18



संत शिरोमणि स्वामी गुरूचरण दास जी महाराज



संत शिरोमणि बाबा लालनाथ जी महाराज



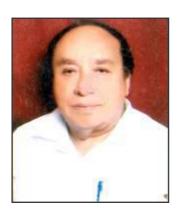
माननीय डॉ. मंगलसेन जी संस्थापक

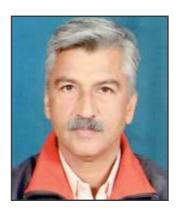
Governing Body Hindu Education Society, Rohtak



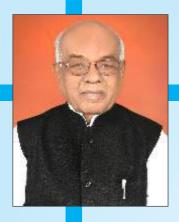
New Members of Governing Body Hindu Education Society, Rohtak











मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि श्री एल.एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक शैक्षणिक सत्र 2017-18 के लिए अपनी वार्षिक पत्रिका "अर्चा" का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें महाविद्यालय की उपलब्धियों और गतिविधियों का विस्तार से वर्णन किया जाएगा।

शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे शिक्षण संस्थानों का सराहनीय योगदान है। आज हम जिस विकसित हिरयाणा की स्वर्ण जयंती मनाते हुए गर्व महसूस कर रहे हैं उसे बनाने में यहां के कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों की बड़ी भूमिका रही है। वर्ष 1971 में स्थापित श्री एल.एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक का नाम भी ऐसी ही प्रगतिशील शिक्षण संस्थाओं में आता है। ऐसी शिक्षण संस्थाओं के अथक प्रयासों का परिणाम है कि आज हरियाणा में पुरुषों की साक्षरता दर 84.06 प्रतिशत है व महिलाओं की साक्षरता दर 65.94 प्रतिशत है। इस तरह 1971 में एक चौथाई साक्षर आबादी वाला राज्य अब तीन–चौथाई से भी ज्यादा पढ़े–लिखे लोगों का प्रदेश बन गया है जबिक राष्ट्रीय औसत 74.04 है।

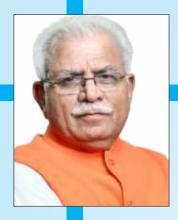
मुझे विश्वास है कि श्री एल.एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक की वार्षिक पित्रका "अर्चा" शिक्षा क्षेत्र में इस महाविद्यालय की उपलब्धियों को प्रकाशित करने में सफल रहेगी। मैं इस महाविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए वार्षिक पित्रका "अर्च" के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

- Compression

श्री सत्यदेव नारायण आर्य

राज्यपाल हरियाणा





मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि श्री एल.एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक द्वारा शैक्षणिक सत्र 2017-18 के लिए अपनी वार्षिक पत्रिका ''अर्चा'' का प्रकाशन करने जा रहा है

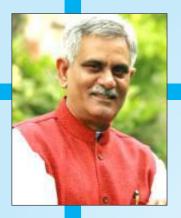
शिक्षा समाज के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। शैक्षणिक संस्थान निरक्षरता के अन्धकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाने में अहम् भूमिका निभाते है। हमें विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान देने के साथ-साथ जीवन के नैतिक मूल्य सिखाने पर बल देना चाहिए क्योंकि नैतिकता के बिना शिक्षा वैसे ही है जैसे आत्मा के बिना मानव देह।

मुझे आशा है कि यह कॉलेज विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा के इस दौर में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करके उन्हें जीवन की हर चुनौती का सामना करने के योग्य बनाने के अपने प्रयासों को ऐसे ही जारी रखेगा।

मैं पत्रिका 'अर्चा' के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

अने हा लाल श्री मनोहर लाल खट्टर मुख्यमंत्री, हरियाणा चंडीगढ़





यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री एल.एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'अर्चा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

हरियाणा एक नवंबर 1966 को अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया था। तब से लेकर आज तक प्रदेश ने हर क्षेत्र में प्रगति की है और एक छोटा राज्य होते हुए भी हरियाणा ने पूरे देश में एक अलग पहचान बनाई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी राज्य ने नई बुलंदियों को छुआ है।

देश की भावी पीढ़ी के भविष्य को उज्ज्वल बनाने व उन्हें सभ्य, अनुशासित एवं एक सफल नागरिक बनाने में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वैश्वीकरण के इस युग में यह आवश्यक है कि हम विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करके उन्हें जीवन की हर चुनौती का सामना करने के योग्य बनाएं। इस दिशा में हरियाणा सरकार ने शिक्षा के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रदेश में सभी स्तरों पर शिक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने के लिए सफल प्रयास किए हैं।

श्री एल.एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक प्रदेश का एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है जहां से शिक्षा प्राप्त कर अनेक विद्यार्थी सम्मानित पदों पर आसीन होकर राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कॉलेज शिक्षा के क्षेत्र में अपनी जिम्मेदारियों को और बेहतर ढंग से निभाते हुए देश की उन्नित में अहम् भूमिका अदा करता रहेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

श्री मनीष कुमार ग्रोवर राज्य मंत्री, सहकारिता

(32491 2) De





Message

It is a matter of great pleasure that Sh. L.N. Hindu College is bringing the Annual Magazine "ARCHA" for the session 2017-18. This magazine is a mirror of all creativities of the students in the field of academics, cultural and sports. It gives the students a welcome opportunity to express their hidden talent of writing. The unskilled writers of today will one day blossom into the renowned authors of tomorrow. It is a sincere and valuable advice to all the students to work hard and show their ability to the maximum.

I congratulate all the staff members and the students associated with the publication of this magazine.

With all good wishes

Sh. Rajesh Kumar Sehgal, Advocate

President, Governing Body





प्रिय विद्यार्थियों!

पत्रिका के माध्यम से हमारा विकास होता है। जीवन को दिशा मिलती है।

Do everything with a great heart and expect nothing in returen and you will never be disappointed.

शिक्षा से संस्कार प्राप्त होते हैं। अजय, शिक्त, सुशील, श्रुत, वीरव्रत तथा ध्येय निष्ठा जैसे गुण विकसित होते हैं। व्यक्ति का निर्माण होता है। सोच सकारात्मक बनती है। इसिलये स्वयं में विश्वास रखो और समाज, राष्ट्र, परिवार की सेवा करो।

The history of the world is the history of a few men who had faith in themselves.

स्वामी विवेकानन्द कहते थे : Arise, Awake and Stop not till the goal is reached.

'अर्चा' के प्रकाशन पर आप सबको शुभकामनाएं। सर्वेभवन्तु सुखिनाः सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत।

Japan antiss!

श्री सुदर्शन कुमार धींगड़ा महासचिव, हिन्दू एजुकेशन सोसायटी





Message

It has given me a great pleasure that Shri L.N. Hindu College Rohtak is bringing out their annual feature, their Magazine "ARCHA". The college magazine is a mirror of the activities and achievement under taken by the college. The students & the faculty members should contribute their ideas to the every edition of the magazine. My good wishes and congratulations to the everyone who is contributing to this Magazine and to the every student who achieved something in any field during the previous session.

With all good wishes

Sh. R.K. Katyal C.A.

Manager, Shri Lal Nath Hindu College Rohtak





Message

It is a matter of great pride that the College has made consistent progress, year on year, in academic and co-curricular activities and is bringing out the College Magazine "Archa" for the Session 2017-18. The college magazine exemplifies the voyage transverse and exhibits the literary skills of our students. We at Sh. L N Hindu College, Rohtak are propelled by the vision and wisdom of our leaders and are continuously striving to discharge our duties for the overall improvement of quality of education and to make sure that the courses we offer remain relevant to our society and useful to our students in the globalized work environment.

The main aim of the college is to provide quality education so that the students passing out of the college are quality persons possessed with high moral and ethical values so that they can serve the nation and humanity in the large.

On this occasion, I wish the management, staff and students of the college success in their future endeavors.



Shri Lal Nath Hindu College Rohtak





सम्पादकीय.....

जीवन में आगे बढ़ने के लिए साहस, गितशीलता और पहल करने की क्षमता का होना अनिवार्य है। प्रतियोगिता के इस युग में ये सभी गुण आप में होने चाहिए, किन्तु कभी भी अहंकार मत पालिए। इसे कभी अपना गुण न बनाएं। अहंकारी व्यक्ति साहसी होने का ढोंग करता है, पर होता नहीं। स्वयं को श्रेष्ठ व दूसरों को हेय समझने की प्रवृत्ति ही अहंकार को जन्म देती है। अहंकार होने पर आप दूसरों की नेक सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं। अपनी बातों में स्पष्ट व दृढ़ होने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन अहंकारी होने में हैं। अपने मन में सकारात्मक विचारों को पनपाएं और एक बात याद रखें- जीवन में परिवर्तन चलता रहता है, दिन बदलते हैं। कोई भी अग्निपरीक्षा अनंत काल तक नहीं चल सकती है। अंतत: आप कुंदन की तरह दमकते हुए इससे बाहर आएगें। आपको अपने लक्ष्य निर्धारित कर अपने भीतर ऊर्जा का संचार करना है। एक स्पष्ट लक्ष्य, सफल होने के लिए दृढ़ संकल्प, साहस, कड़ी मेहनत तथा लगन से आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

'अर्चा' पत्रिका के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए मैं इतना ही कहना चाहंगी कि –

देख उत्ताल तरंगों को कर्मरत कब घबराता है, शक्ति कुंभज सी धारण कर पयोनिधि को पी जाता है॥

> मधु अरोड़ा मुख्य सम्पादिका प्राध्यापिका हिन्दी विभाग





यज्ञ रूप प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए। छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए। स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो 'इंद न मम्' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।



NEW APPOINTMENTS



Dr (Mrs.) Deepti Sharma Asst. Prof. in Commerce



Dr (Mrs.) Shalu Juneja Asst. Prof. in Commerce



Mr. Rajesh Gahlawat Asst. Prof. in Commerce



Ms. Harshita Chhikara Asst. Prof. in Commerce



Ms. Raunak Rathee Asst. Prof. in English



Dr (Mrs.) Sumit Kumari Dahiya Asst. Prof. in English



Dr (Mrs.) Sunny Kapoor Asst. Prof. in Mathematics



Dr. Sandeep Kumar Asst. Prof. in Economics



Mrs. Chandna Jain Asst. Prof. in Economics



Dr. (Mrs.) Rajni Kumari Asst. Prof. in Pol. Sc.



Dr (Mrs.) Promila Yadav Asst. Prof. in Pol. Sc.



Mr. Parveen Sharma Asst. Prof. in Sanskrit



Dr. Neelam Rathee Asst. Prof. in History



Dr. Hardeep Singh Asst. Prof. in History



Dr. (Mrs.) Suman Rani Asst. Prof. in Hindi



Dr (Mrs.) Suman Lata Asst. Prof. in Hindi



Mr. Naveen Asst. Prof. in English



Dr (Mrs.) Chitra Sharma Librarian



Mr. Pawan Dhingra Deputy Superintendent



Mrs. Shweta Clerk



Mr. Rajbir Peon

हमारा उद्दश्य

''ऐसे आदर्श चरित्रवान एवं देशभकत नागरिक निर्माण करना जिनके मुखमण्डल पर आभा और प्रसन्नता, जीवन में तेजस्विता, व्यवहार में कुशलता, बुद्धि में कुशाग्रता तथा संस्कारों में भारतीय महापुरुषों के उच्चादर्श झलकते हों और जिन्हें देखते ही हमें अपने पूर्वजों की वीरतापूर्ण गाथाँए याद आने लगे।''





श्री लाल नाथ हिन्दू महाविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

वार्षिक प्रतिवेदन 2017-18

श्री लाल नाथ हिन्दू महाविद्यालय, जो कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है पिछले कई वर्षों से शिक्षा के प्रचार व प्रसार में अपना योगदान दे रहा है। किसी भी देश, समाज तथा लोकतन्त्र के सशक्त भविष्य के लिए एकमात्र साधन है – शिक्षा। इसलिए उच्च शिक्षा की उपयोगिता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सन् 1970 में हिन्दू शिक्षण संस्थान पंजीकृत हुआ। सन्त शिरोमणि 1008 स्वामी श्री गुरुचरण दास जी के आशीर्वाद तथा माननीय डॉ॰ मंगलसेन जी के सद-प्रयासों एवं दानवीर महापुरूषों के योगदान से 1971 में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की गई।

हिन्दू शिक्षण संस्थान के कुशल संचालन में गत 47 वर्षों में इस महाविद्यालय ने हरियाणा के शैक्षणिक मानचित्र पर रोहतक जिले में अपना एक विशेष स्थान बनाया है।

संकाय

वर्तमान में महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला, वाणिज्य, विज्ञान, कम्प्यूटर, प्रबन्ध व स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए. हिन्दी, एम.एससी. (गणित), एम. कॉम, पत्रकारिता एवं जनसंचार इत्यादि विधाओं में शिक्षा प्रदान की जा रही है। पाठ्यरूप संकाय कला, वाणिज्य और विज्ञान तीनों ही संकायों में, खेलकूद के क्षेत्र में और सांस्कृतिक गतिविधियों में यह महाविद्यालय सदैव अग्रणीय रहा है।

प्राध्यापक वृन्द

वर्तमान सत्र में सितम्बर माह में नियमित प्राचार्य के रूप में डॉ० विजय कुमार अरोड़ा जी ने कार्यभार सम्भाला। प्रबन्ध समिति के कुशल निर्देशन तथा प्राचार्य श्री विजय कुमार अरोड़ा जी के भरसक प्रयत्नों से महाविद्यालय को 17 नए नियमित प्राध्यापकों का सहयोग मिला इस सत्र में महाविद्यालय में कुल 29 नियमित तथा 48 तदर्थ प्राध्यापक नियुक्त हैं। हमारे लगभग सभी प्राध्यापक डाक्टरेट की उपाधि, एम० फिल० की डिग्री प्राप्त किए हुए हैं। कॉलेज के लिए यह बहुत गर्व का विषय है कि हमारे पास उच्च शिक्षा प्राप्त योग्य तथा अनुभवी प्राध्यापकों का स्टॉफ है। शिक्षा के अलावा अन्य क्षेत्रों में कॉलेज की गुणवत्ता को देखते हुए वर्ष 2016 में NAAC द्वारा 'B'ग्रेड (CGPA 2.74) प्रदान किया गया।

परीक्षा परिणाम

क्रम.	नाम	कक्षा	विश्वविद्यालय में स्थान
1.	रिया मल्हौत्रा	बी० कॉम० तृतीय सेमेस्टर	प्रथम
		चतुर्थ सेमेस्टर	बारहवां
2.	अलका	बी॰ कॉम॰ प्रथम सेमेस्टर	द्वितीय
3.	पलक ढ़ल	बी॰ कॉम॰ चतुर्थ सेमेस्टर	द्वितीय
4.	अंकिता	बी॰ सी॰ ए॰ तृतीय सेमेस्टर	द्वितीय
		चतुर्थ सेमेस्टर	बाईसवां
5.	नीलम रानी	बी॰ कॉम॰ तृतीय सेमेस्टर	चतुर्थ
		षष्टम सेमेस्टर	षष्टम
6.	महिमा	बी॰ कॉम॰ (वोकेशनल) प्रथम सेमेस्टर	पंचम
		द्वितीय सेमेस्टर	पन्द्रहवाँ
7.	गौरव	बी॰ सी॰ ए॰ तृतीय सेमेस्टर	अष्टम
8.	विजेन्द्र	बी॰ कॉम॰ (वोकेशनल) पंचम सेमेस्टर	अष्टम
		चतुर्थ सेमेस्टर	द्वितीय

9.	लक्ष्य	बी० कॉम० प्रथम सेमेस्टर	नवम
10.	लव	बी० सी० ए० प्रथम सेमेस्टर	दशम
		षष्टम सेमेस्टर	प्रथम
11.	निशा	बी० कॉम० प्रथम सेमेस्टर	दशम
12.	यश	बी० कॉम० प्रथम सेमेस्टर	ग्यारह
13.	पीयूष	बी० सी० ए० प्रथम सेमेस्टर	तेरह
		द्वितीय सेमेस्टर	बाईसवाँ
14.	जसलीन कौर	बी०कॉम० आनर्स	चतुर्थ
15.	हिमालय	बी०सी०ए० षष्टम सेमेस्टर	तृतीय
16.	हिना	बी० कॉम० द्वितीय सेमेस्टर	दसवां
17.	ध्रुव	बी०कॉम० आनर्स षष्टम सेमेस्टर	इक्कीसवाँ
18.	गीता	बी० कॉम० द्वितीय सेमेस्टर	सतरहवाँ
19.	मुस्कान	बी० कॉम० आनर्स द्वितीय सेमेस्टर	उन्नीसवां

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

हमारे कॉलेज में सांस्कृतिक गितिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए सत्र 2017-18 में श्रीमती उमा शर्मा के नेतृत्व में एक सिमित गठित की गई इनके सहयोगी प्राध्यापकों श्रीमती रिशम छाबड़ा, डॉ॰ शिखा फौगाट, डॉ॰ मीनाक्षी गुगनानी, डॉ॰ नीलम मग्गू तथा अन्य सहयोगी प्राध्यापकों के सहयोग से समय-समय पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस वर्ष वैश्य कॉलेज, रोहतक में आयोजित क्षेत्रीय युवा समारोह में हमारे विद्याधियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और उसी के अनुरूप अच्छे स्थान भी पाए। केवल क्षेत्रीय ही नहीं अपितु अर्न्तक्षेत्रीय युवा समारोह में भी अपनी प्रस्तुतियां दी।

क्षेत्रीय युवा समारोह में बी॰ कॉम॰, द्वितीय वर्ष की छात्रा हिमानी ने कोलाज में प्रथम स्थान तथा बी॰ ए॰, प्रथम वर्ष की छात्रा वंशिका ने Best out of waste में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बी॰कॉम॰, द्वितीय वर्ष की छात्रा ज्योति ने रंगोली में दूसरा तथा बी॰ कॉम॰ द्वितीय वर्ष की छात्रा तान्या ने English Poem Recitation में तृतीय स्थान प्राप्त कर



कॉलेज का नाम रोशन किया।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित Poster Making Competition में बी॰ कॉम॰ तृतीय वर्ष की छात्रा किनका ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा संस्कृत श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता में (सत जिन्दा कल्याणा कॉलेज, कलानौर में) महाविद्यालय की बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष की छात्रा मोनिका ने द्वितीय स्थान और प्रियंका बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष की छात्रा ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया।

करियर मार्गदर्शक प्रकोष्ठ

सत्र 2017-18 में महाविद्यालय का करियर मार्गदर्शक प्रकोष्ठ पुरूष विभाग में श्रीमती वंदना रंगा व महिला विभाग में श्रीमती उमा शर्मा के नेतृत्व में सुचारू रूप से कार्यरत है। इस प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया -

- सितम्बर माह में 'हिन्दी सप्ताह' का आयोजन किया जिसमें विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में रुचि जागृत करने के लिए निबन्ध लेखन, नारा लेखन, पत्र वाचन, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, कविता पाठ इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
- 2. आर्थिक मुद्दे, ''जी॰ एस॰ टी॰, संचार कौशल्य, नैतिक मूल्य, व्यक्तिगत विकास, व्यक्तित्व विकास, 'रामचिरतमानस' की आधुनिक युग में प्रासंगिकता, ध्यानयोग के द्वारा परीक्षा तनाव को दूर कैसे किया जाए?, नारी सशक्तिकरण, कौशल विकास, शिक्षा का महत्त्व'' इत्यादि विषयों पर विद्यार्थियों की जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रसार व्याख्यानों का आयोजन किया गया।
- 3. विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों के सिक्रय सहयोग से राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रश्नोत्तरी, प्रसार व्याख्यान, प्रशिक्षण कक्षाओं इत्यादि का सफल आयोजन किया गया ताकि विद्याथियों की सोचने की क्षमता को विकसित किया जा सके।
- 4. अक्तूबर माह में गणित विभाग के सहयोग से विद्याथियों की तार्किक क्षमता में वृद्धि करने के लिए मानसिक योग्यता परीक्षा का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना 2017-18

सत्र 2017-18 में महाविद्यालय का राष्ट्रीय सेवा योजना (पुरूष विभाग) श्री विरेन्द्र बलोदा व (महिला विभाग)



का संचालन डॉ॰ अंजु देशवाल के नेतृत्व में किया गया। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया-

- सत्र के आरम्भ में सदस्यता अभियान चलाया गया जिसमें 95 छात्राओं व 50 छात्रों ने नाम दर्ज करवाया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय योजना के उद्देश्य व महत्व से अवगत कराया गया।
- 2. दिनॉॅंक 2017 को महाविद्यालय प्रागंण में एक दिवसीय शिविर लगाया गया जिसमें वृक्षारोपण व स्वच्छता अभियान चलाया गया।
- 3. 1 जनवरी, 2018 से 7 जनवरी 2018 तक महाविद्यालय परिसर में सात दिवसीय शिविर लगाया गया। जिसमें 65 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। शिविर के दौरान डॉ॰ सुमित मुखर्जी, डॉ॰ वेद प्रकाश श्योराण, डॉ॰ सुभाष बल्हारा, श्री अमित कुमार, डॉ॰ संजय सोनी, श्री सुदर्शन घीगडा, डॉ॰ सत्यवान बरोदा व डॉ॰ मेहर सिंह देशवाल आदि विभिन्न क्षेत्रों से शिक्षाविद आए और अपने विचारों व अनुभवों से स्वयंसेवकों को जागरूक व प्रेरित किया। 'यातायात सुरक्षा व कानून' विषय पर जनचेतना रैली निकाली गई।
 - कैम्प के समापन के अवसर पर प्रबन्ध सिमित के प्रधान श्री राजेश सहगल, महासचिव श्री सुदर्शन घीगंडा, प्रबन्धक श्री राजेश कत्याल व प्राचार्य डॉ० विजय कुमार ने स्वयंसेवकों को प्रमाणपत्र व स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया। कैम्प के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर बी० ए० तृतीय वर्ष के छात्र गौरव व छात्रा सिवता को बेस्ट कैम्पर चुना गया।
- 4. 25 जनवरी, 2018 को 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' पर 'जागरूकता अभियान' के अन्तर्गत स्वयंसेवक व सेविकाओं ने गद्दी खेड़ी गांव में भ्रमण कर लोगों को मतदान के महत्व की जानकारी दी व उससे सम्बद्ध ग्रामीणों की समस्याओं को जाना व उसका निदान किया।
- 5. 17 फरवरी, 2018 को 11 स्वयंसेवकों ने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत 'प्राकृतिक खेती' पर आधारित संगोष्ठी में भाग लिया।
- 6. 20 फरवरी 2018 से 28 फरवरी 2018 तक राष्ट्रीय स्वयं सेवा के अन्तर्गत आठ दिवसीय नर्सिंग एवं फर्स्ट एड कैम्प लगाया गया।
- 7. 21 फरवरी 2018 को कॉलेज परिसर में रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें 50 स्वयंसेवकों ने रक्तदान किया।

क्रीड़ा जगत

सत्र 2017-18 में महाविद्यालय की विभिन्न टीमों में कुश्ती (पुरूष व महिला वर्ग), कबड्डी नेशनल स्टाईल

(पुरूष), कबड्डी हरियाणा स्टाईल (पुरूष), हैण्डबाल (पुरूष), बास्केट बाल (पुरूष), सॉफ्ट बाल (पुरूष), बेसबाल (पुरूष), क्रिकेट (पुरूष), मुक्केबाजी (पुरूष), फुटबाल (महिला), कुरास (पुरूष), वुडबाल (पुरूष), खो-खो (पुरूष) आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त की :-

- 1. महाविद्यालय की कुश्ती (महिला वर्ग) टीम ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता में ओवरऑल ट्रॉफी प्राप्त की तथा व्यक्तिगत मुकाबलों में मन्जू (बी० ए० द्वितीय वर्ष) ने स्वर्ण पदक, पूजा (बी० ए० द्वितीय वर्ष) ने स्वर्ण पदक, पिंकी ने (बी० ए० द्वितीय वर्ष) स्वर्ण पदक, किरण ने (बी० ए० प्रथम वर्ष) स्वर्ण पदक, निशा ने (बी० ए० द्वितीय वर्ष) रजत पदक प्राप्त किया तथा म० द० वि० अंतर विश्वविद्यालय की टीम में स्थान प्राप्त किया।
- 2. महाविद्यालय की कुश्ती (पुरूष वर्ग) टीम ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित फ्री स्टाईल (अंतर महाविद्यालय) में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा व्यक्तिगत मुकाबलों में दीपक (बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष) स्वर्ण पदक, साजन (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष) स्वर्ण पदक, रिव कुमार (बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष) स्वर्ण पदक, बलराज (बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष) स्वर्ण पदक, राजकुमार (बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष) स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा म॰ द॰ वि॰ अंतर विश्वविद्यालय की टीम में स्थान प्राप्त किया।
- 3. मन्जू, पूजा, रिवता, किरण व निशा ने उच्चतर विभाग द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय कुश्ती (महिला) प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 4. महाविद्यालय की कबड्डी (पुरूष वर्ग) टीम ने नेशनल स्टाईल में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा रिंकू (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष) सुनील (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष), बिन्टू (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष), जगदीप (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष) प्रवीन (एम॰ ए॰ हिन्दी, प्रथम वर्ष) ने म॰ द॰ वि॰ अंतर विश्वविद्यालय की टीम में स्थान प्राप्त किया तथा म॰ द॰ वि॰ की टीम ने अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- 5. महाविद्यालय की कबर्डी (पुरूष वर्ग) टीम ने हरियाणा स्टाईल अंतर महाविद्यालय कबर्डी प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 6. महाविद्यालय की हैंडबाल (पुरूष वर्ग) टीम ने अंतर महाविद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 7. महाविद्यालय की फुटबाल (महिला वर्ग) टीम ने अंतर महाविद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा पूजा (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष) कीर्ति (बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष) का म॰ द॰ वि॰ अंतर महाविद्यालय की टीम में स्थान प्राप्त किया।
- 8. ओमबीर (बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष) ने कुरास में महाविद्यालय में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

- 9. उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय जूडो (पुरूष) प्रतियोगिता में ओमबीर (बी० ए० प्रथम वर्ष) ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 10. म० द० वि० द्वारा आयोजित मुक्केबाजी (पुरूष) अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता में हरीश (बी० ए० द्वितीय वर्ष) ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा अंतर विश्वविद्यालय टीम के लिए चयन किया गया।

प्राचार्य जी की प्रेरणा और उनके अतुल्य सहयोग व खेल प्रशिक्षक की कड़ी मेहनत व कुशल निर्देशन से महाविद्यालय के खिलाड़ियों ने जिलास्तरीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक और ट्राफी प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया, जिनकी सूची निम्न प्रकार है:-

क्रम.	नाम	कक्षा	खेल	स्थान
1.	मंजू	बी०ए० द्वितीय वर्ष	कुश्ती	प्रथम
2.	पिंकी	बी०ए० द्वितीय वर्ष	कुश्ती	प्रथम
3.	रविता	बी०ए० द्वितीय वर्ष	कुश्ती	तृतीय
4.	पूजा	बी०ए० द्वितीय वर्ष	कुश्ती	रजत पदक
5.	किरण	बी०ए० प्रथम वर्ष	कुश्ती	द्वितीय
6.	साजन	बी०ए० द्वितीय वर्ष	ग्रीको रोमन कुश्ती	कांस्य पदक
7.	रवि कुमार	बी०ए० प्रथम वर्ष	कुश्ती	द्वितीय
8.	बलराज	बी०ए० प्रथम वर्ष	कुश्ती	तृतीय
9.	राजकुमार	बी०ए० प्रथम वर्ष	ग्रीको रोमन कुश्ती	तृतीय
10.	नवीन	बी०ए० द्वितीय वर्ष	कुश्ती	प्रथम
11.	रिंकू	बी०ए० द्वितीय वर्ष	कबड्डी	द्वितीय
12.	मोहित	बी०ए० तृतीय वर्ष	बास्केट बॉल	प्रथम
13.	दीपक	बी०ए० प्रथम वर्ष	कुश्ती	प्रथम

शोध समिति (2017-18)

सत्र 2017-18 में महाविद्यालय में शोध सिमिति का गठन डॉ॰ मीनाक्षी गुगनानी के नेतृत्व में हुआ। इनके सहयोगी डॉ॰ नीलम मग्गू, श्रीमती रिश्म छाबड़ा, डॉ॰ अंजू देशवाल, डॉ॰ शिखा फौगाट रहे। इस कमेटी की देखरेख में निम्नलिखित व्याख्यान व राष्ट्रीय संगोष्ठी करवाई गई:-

- 1. दिनांक 19.01.2018 को "How to get success in examination by time management" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य वक्ता श्री सुदर्शन ढींगड़ा जी (Gen. Sec., Hindu Education Society) रहे।
- 2. दिनांक 13.02.2018 को ''आधुनिक युग में रामचिरतमानस की प्रासंगिकता'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसकी मुख्य वक्ता श्रीमती मधु अरोड़ा रहीं।
- 3. दिनांक 23.02.2018 को ''व्यक्तित्व का विकास कैसे करें'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसकी मुख्य वक्ता डॉ नीलम मग्गू रहीं।
- 4. दिनांक 08.03.2018 को प्रो० ए० एस० राणा द्वारा ''परीक्षा के तनाव पर ध्यान योग का प्रभाव'' विषय पर व्याख्यान दिया गया और डॉ० ए० के० जैन ने ''नारी सशक्तिकरण'' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

महाविद्यालय में दिनांक 20 मार्च, 2018 को एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका विषय ''मानवीय विकास में सूचना, संचार व तकनीक की भूमिका'' रहा। सम्मेलन में विभिन्न महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों, शोधार्थियों इत्यादि ने 250 शोध पत्र प्रस्तुत किए जोकि सम्मेलन के मुख्य विषय पर आधारित रहे। सम्मेलन के मुख्य अतिथियों का विवरण इस प्रकार है –

- 1. डॉ॰ संजय कौशिक (डायरेक्टर, ICSSR-NWRC, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ)
- 2. श्री अश्वनी गुप्ता (डायरेक्टर, हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी)
- 3. डॉ॰ युद्धवीर सिंह (अधिष्ठाता, महाविद्यालय विकास परिषद, म॰ द॰ वि॰, रोहतक)
- 4. डॉ॰ राहुल ऋषि (डायरेक्टर, UIET, म॰ द॰ वि॰, रोहृतक)
- 5. श्री नवीन नागपाल (वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग, पी० डी० एम०, रोहतक)
- 6. प्रो॰ राधेश्याम (वरिष्ठ प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग व समन्वयक, यूथ रेडक्रॉस, म॰ द॰ वि॰, रोहतक)
- 7. डॉ॰ सुषमा (सहायक प्रोफेसर, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा)
- 8. डॉ॰ शिश बहल (डायरेक्टर, HIMT) सम्मेलन के सफलतापूर्वक संचालन में संयोजिका डॉ॰ मीनाक्षी गुगनानी व सह-संयोजिका श्रीमती रिश्म छाबडा़ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।



पुस्तकें विद्यार्थियों की सफलता की आधारशिलाएं होती हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमारे कालेज का पुस्तकालय इस दृष्टि से काफी समृद्ध है। पूरे पुस्तकालय का कम्प्यूट्रीकरण हो चुका है। निर्धन विद्यार्थियों तथा परीक्षा में अव्वल आने वाले विद्यार्थियों के लिए पुस्तक कोष से वर्ष भर के लिए पुस्तकें प्रदान की जाती हैं। पुस्तकालय के ठीक ऊपर लगभग 200 विद्यार्थियों के बैठने के लिए वाचनालय है। इस समय पुस्तकालय में लगभग 40235 पुस्तकें तथा 40 से अधिक समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं नियमित रूप से मंगवाई जाती है। विभिन्न विषयों पर जर्नल्स तथा Periodicals भी मंगवाए जाते हैं।

University Outreach Programme

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में शिक्षण संस्थानों को कारगर भूमिका निभाने के लिए आहवान किया है। इसी के तहत महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने श्री लालनाथ हिन्दू कॉलेज का इस काम के लिए चयन किया है। चयन से उत्साहित हिन्दू कॉलेज ने भी तुरंत प्रभाव से गाँव गद्दी खेड़ी को गोद ले लिया है। इसकी कमान संयोजिका के रूप में प्राध्यापिका श्रीमती मीनाक्षी गुगनानी को सौंपी गई है।

टीम द्वारा गोद लिए गए गाँव गद्दी खेड़ी के राजकीय विद्यालय में 5 सितम्बर 2017 को शिक्षक दिवस मनाया गया। जिस अवसर पर गाँव के सरपंच श्री नरेंद्र सिंह सिंहत गाँव के गणमान्य व्यक्ति व टीम के सदस्य उपस्थित थे। टीम के सदस्य विद्यार्थियों ने किवता, स्किट, भाषण आदि के माध्यम से स्कूल के विद्यार्थियों को जीवन में शिक्षकों का महत्त्व समझाया व टीम के द्वारा विद्यार्थियों के लिए क्विज का आयोजन किया।

दिनांक 15 सितम्बर 2017 को वन महोत्सव मनाते हुए गद्दी खेड़ी गाँव में प्रदूषण से बचाव के लिए वृक्षों का महत्त्व बताते हुए टीम के सदस्यों द्वारा पौधा रोपण किया गया।

24 अक्टूबर 2017 को एन० एस० एस० यूनिट के संयुक्त तत्वाधान में एक जागरूकता रैली का आयोजन किया गया जिसमें गाँव के लोगों को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता अभियान आदि विषयों के बारे में जानकारी दी गई तथा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया।

25 जनवरी 2018 को राष्ट्रीय मतदाता के उपलक्ष्य में एन० एस० एस० व यूथ रेड क्रॉस के विद्यार्थियों ने गाँव के आंगनवाड़ी में भाषण व व्यक्तिगत प्रश्नों के माध्यम से मतदान के महत्त्व के विषय में बताया और एक जिम्मेदार नागरिक बनने हेतु प्रेरित किया।

21 फरवरी 2018 को आउट रीच कार्यक्रम के तहत आठ दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें रक्तदान शिविर में कॉलेज के विद्यार्थियों ने रक्तदान करके पचास यूनिट रक्त एकत्रित किया। शिविर में रक्तदान के प्रति जागरूक करते हुए इस से जुड़ी भ्रामक धारणाओं को भी दूर किया गया।

इस प्रकार पूरे सत्र के दौरान यूनिवर्सिटी आउट रीच प्रोग्राम के अंतर्गत उपरोक्त गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन किया गया।

सड़क सुरक्षा क्लब

पुरूष व महिला विभाग सत्र 2017-18 में सड़क सुरक्षा क्लब के तत्वाधान में संयोजक प्राचार्य डॉ॰ विजय कुमार अरोड़ा, कार्यक्रम अधिकारी डॉ॰ नीतू अनेजा, विष्ठ सदस्यगण श्रीमती उमा शर्मा, श्रीमती पूजा चावला विद्यार्थियों में रितेश व राकेश, क्षेत्रीय प्रतिष्ठित सदस्य डॉ॰ वेद प्रकाश श्योरण इस क्लब के सदस्य मनोनीत हुए। इस क्लब के तहत सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित निबन्ध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर मेंकिंग इत्यादि गतिविधियाँ की गई जिसमें विभिन्न विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे – पोस्टर मेंकिंग में मुस्कान, बी॰ कॉम॰ आनर्स, द्वितीय सेमेस्टर ने प्रथम, गरिमा बी॰ कॉम॰ आनर्स, चतुर्थ सेमेस्टर ने द्वितीय स्थान तथा तान्या बी॰ कॉम॰, द्वितीय सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध लेखन में काजल, बी॰ कॉम॰, द्वितीय, चतुर्थ सेमेस्टर ने प्रथम तथा भारती, बी॰ ए॰ चतुर्थ सेमेस्टर ने द्वितीय स्थान, चिराग चावला, बी॰ बी॰ ए॰, छठा सेमेस्टर तथा किरण, बी॰ एस॰ सी॰, चतुर्थ सेमेस्टर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में राजेश, बी॰ ए॰, छठा सेमेस्टर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मैंटरिंग एवं प्रोक्टोरियल डयूटिज्

विद्याथियों के अधिगम, उपस्थिति एवं समग्र विकास को सुनिश्चित करने हेतु सभी प्राध्यापकों को विद्यार्थियों के ग्रुप का मेण्टर बनाया गया है। इस प्रकार प्राध्यापक छात्र-छात्राओं की गतिविधियों पर नज़र रखते हुए उनका भविष्य के लिए मार्गदर्शन करते हैं। सभी प्राध्यापक प्रोक्टोरियल डयूटिज़ के माध्यम से महाविद्यालय के अनुशासन में सार्थक भूमिका निभाते हैं।

ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन

सन् 2001 में गठित कॉलेज की ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन, कॉलेज के विद्यार्थियों के हित में निरंतर कार्य कर रही है। ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन प्रत्येक वर्ष कॉलेज के मेधावी और जरूरतमंद विद्यार्थियों को वार्षिक छात्रवृत्ति और पाठ्यपुस्तकें प्रदान कर सहायता करती है। विश्वविद्यालय की वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले कॉलेज के विद्यार्थियों को एसोसिएशन अपने वार्षिक सम्मलेन में पुरस्कृत एवं सम्मानित करती है। इस समय इस एसोसिएशन के 56 संस्थापक एवं कार्यकारी सदस्य तथा 275 आजीवन सदस्य है। कॉलेज के कई पूर्व छात्र, जो सरकारी अथवा प्राइवेट क्षेत्र में ऊँचे पदों पर आसीन हैं, उन्हें एसोसिएशन के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाता है। कॉलेज के पूर्व विद्यार्थियों को कॉलेज के विकास में अपना योगदान देने हेतु प्रेरित करने के लिए ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन समय-समय पर पारिवारिक मिलन समारोह का आयोजन करती रहती है।

स्वच्छ भारत इंटर्निशिप कार्यक्रम

कॉलेज प्राचार्य एवं प्राध्यापकों की देखरेख में कॉलेज की तरफ से तीन गांवों को सफाई अभियान के लिए चुना गया। तीनों गांवों में टीम के सदस्यों ने ग्राम पंचायत व सरपंच के सहयोग से घर-घर जाकर स्वच्छता अभियान चलाया। ग्रामीणों को अपना घर तथा गांव को साफ सुथरा रखने के लिए प्रेरित किया। कॉलेज प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में टीम के सदस्यों ने स्कूल, आंगनवाड़ी, गलियों में, नालियों में पनपने वाले मच्छरों से होने वाली बीमारियों के बारे में गांव वालों को अवगत कराया।

यूथ रेडक्रॉस

यूथ रेडक्रॉस के तत्त्वाधान में कॉलेज के प्रांगण में रक्तदान शिविर का आयोजन करवाया गया। जिलास्तर पर सात दिवसीय स्वास्थ्य जागरुकता कैम्प का आयोजन किया गया। कॉलेज में पर्यावरण दिवस तथा सफाई अभियान संबंधी गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। जिलास्तर पर प्राथमिक चिकित्सा संबंधित कैम्प में कॉलेज के विद्यार्थियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आभार प्रदर्शन

मैं, कॉलेज की प्रबन्धन सिमित के माननीय कर्मठ, उत्साही सदस्यगणों, सहयोगी, परिश्रमी प्राध्यापकवृंद, कार्य के प्रति समर्पित गैर शिक्षिक कर्मचारियों, सेवाकिमयों का तहेदिल से आभार प्रकट करता हूं, जिनके प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग से हमारी संस्था की सभी शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियां सफल हो पाई। कॉलेज उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है और भविष्य में इस प्रगति को ओर भी अधिक तीव्र करने हेतु हम पूरी ईमानदारी, लगन एवं निष्ठा से प्रयासरत है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हम अपने प्रयास में सफल होंगें।

PARKS OF EXCELLENCE

MERITORIOUS STUDENTS



Riya Malhotra B.Com., 3rd Sem



Alka B.Com. ,1st Sem



Ankita BCA, 3rd SEM



Neelam Rani B.Com., 3rd SEM B.Com. (Voc.), 1st Sem



Mahima



Gaurav BCA, 3rd SEM



Vijender B.Com. (Voc.), 5th Sem



Lakshay B.Com., 1st Sem



Love BCA, 5th Sem



Nisha B.Com., 1st Sem



Suraksha B.A., Illrd Sem.



Piyush BCA, Ist Sem



Karishma B.A., 3rd Sem



B.Com., Ist Sem.



Himanshi B.A., 3rd Sem



Sonia B.Com., 3rd Sem



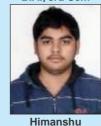
Sangeeta B.A., Ist Sem



Seema B.A., 3rd Sem



B.Com., Ist Sem



B.A., 3rd Sem



Yashina B.Com., 1st Sem



Prateek BCA. Ist Sem



B.Com. (Hons), 1st Sem B.Com. (Hons), 3rd Sem



Shubham



Geeta B.Com., Ist Sem



Jayant Batra BCA. IInd Sem



Muskan Katyal B.Com., Ist Sem



Manjesh



Iknoor B.Com., 2nd Sem



BBA, 4th Sem.



Manisha



Pooja



Sweety B. Com. (Hons)



BBA, 4th Sem.



Pooja



Rinku MA, II (Hindi)



Yash B.Com, 2nd Sem.



Prateek BCA, 2nd Sem.



Jyoti



Neha B.A., IInd Sem.



Savita MA, II



Dhruv Sachdeva B.Com. (Hons.)



Nidhi M.Com., IInd



Ayush BCA, IInd Sem.



Payal M.Sc., IInd



Ashu Dua B.Com (Hons.)



Riya Wadhwa M.Sc. (Maths)



Chashika B.Com. (Hons.)



Shubhamtuli 39th Rank



Nandini B.Com. (Hons.)



Mahima Chugh



B.Com.(Hons.), IInd Sem.



Sumit B.Com. (Hons.)



Gaurav Madaan B.Com.

BEST VOLUNTEERS OF NSS



BCA IIIrd Year



SAVITA JANGRA **B.A., 3RD YEAR**



GAURAV B.A. 3rd year

BEST PERFORMERS: SPORTS



Sumit **B.A. 2nd Year**



Manju **B.A. 2nd Year**



Rinku B.A. 2nd Year



Mohit **B.A. 2nd Year**



Jagdeep B.A. 2nd Year



Kabaddi Sunil B.A. 2nd Year



Silver Medal in Common ealth Wrestling Championsh **Ravita** B.A. 2nd Year



Wrestling Championship

Kiran

B.A. 1st Year



Vikas B.A. 2nd Year



ver Medal in Common Wealtl Wrestling Championship **Pinki** B.A. 2nd Year



Bintu B.A. 2nd Year

The Start of New Session with Holy Yajna











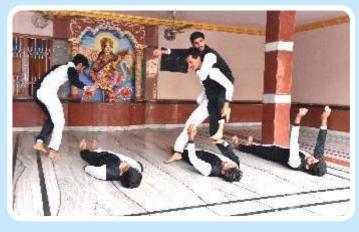






Cultural Activities

















Celebration of Independence Day

















Different Activities

















Different Activities

















Different Activities

















Dr. MANGAL SAIN JAYANTI

















Dr. MANGAL SAIN JAYANTI

















National Conference

















NSS & YRS

















Sports: Competition & Cooperation

















Sports: Competition & Cooperation















Bidding Farewell

















Swachta Abhiyan

















Swachta Abhiyan

















कालेज

ष वर्ग अंतर महाविद्यालय की टीम ने डीजीसी राया। इसरे मैच में जाट गढ़ को 27-7, गबर्नमेंट को 40-31 और हिंद त को 26-18 के अंतर से इडा, प्रवीण राठी, दिनेश और भूपेंद्र शामिल रहे।

इंसान कहते हैं व्यान दोग से मिलता

है आसंदः हाका

कंप हो. यहा प्रश्न का क्ष्मिक्त को अपूर्विक्य देवन सम्प्राणि किया क्ष्मा का ४० को से मेंग में जूरे हैं। अपूर्व का केपा किया मा 250 विकासी अप्र अंतर्रहीय का का अपनी स्थापन का समझ जाता

सदस्यों ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। जितेंद्र प्रीतम, लंबी कृद में राहल प्रथम रहे। विद्या निर्म के लोगों को किया जागरूक

लवकीत, राहल और हिना बने बेस्ट एथलीट

श्रीतालनाय हिंदु कालेज में खेलकूद प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत करते मुख्यअतिथि ! • जागरण जागरण संवाददाता. रोहतक : भिवानी रोड स्थित भारहाज ने विजेता जिलाडियों को उनके उत्कर्य

एथलीट चुना गया। समापन समारोह में आयोजित में हिना, 200 मीटर रेस में मोनिका, मटकी रेस में

जितंद्र भारद्वाज ने मुख्यातिथि के रूप में जिस्कत की। स्कोपिंग में रखी, थ्री लेग रेस में मोनिका व रखी

श्रीलालनाथ हिंदू महाविद्यालय में चल रही 45वीं

दो दिवसीय वार्षिक खेलकद स्पर्धा में विभिन्न

खेल प्रतियोगिताओं में ज्ञानदार प्रदर्शन करने वाले

लबकीत, राहल, मोनिका और हिना को बेस्ट

परस्कार वितरण समारोह के लिए मदवि के राजिस्ट्रार

हिंदु शिक्षण संस्थान के प्रधान राजेश कुमार सहगल,

प्रिसिपल डा. विजय कमार व स्वागत समिति के

हरिमुनि नयुज भगरोहतक

श्रीलाल नाथ हिंदू कॉलेज में **भू** यूनिवर्सिटी आउटरीच कार्यक्रम व एनएसएस युनिट के संयुक्त तत्वावधान में स्वच्छता. बेर्ट

> श्रीलाल नाथ हिंदू कॉलेज के विद्यार्थियों ने निकाली रैली

बचाओ-बेटो पढाओ आदि विषयो पर गांव गद्दी खेडी में जागरूकता रेली निकली गई। कॉलेज प्राचार्य डॉ. विजय कुमार ने रैली को स्वाना



प्रदर्शन के लिए पुरस्कार वितरित किया। खेलकृट

स्पर्धा का सफल संचालन डा. शिखा फोगाट. विरेंद्र

ये रहे विजेता : लड़किवें की डिस्कस थी

सोमवती, शॉटपुट में मीनिका, बाधा रेस में होना,

प्रथम रहे। लड़कों की डिस्कस थ्रो में सुमित, शॉटपुट

में निखल, बाधा रेस में लक्की, 1500 मीटर रेस में

बलोटा व मनीप की देखरेख में हुआ।

रोहतक। जागरूकता रैली निकालते श्रीलाल नाथ हिंदू कॉलेज के विद्यार्थी।

विद्यार्थियों ने जागरूकता रैली व नुक्कड नाटक के माध्यम से गांव के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों व में पूरा सहयोग दिया।

की संयोजिका डॉ. शिखा फोगाट के गांव के लोगों को स्वच्छता, वेटी कुशल निर्देशन में हुआ। कॉलेज के अचाओ-बेटी पढाओ आदि विषयों पर प्रेरित किया। राजकीय विद्यालय के प्राचार्य शमशेर खत्री ने कार्यक्रम

हेल्मेट पहनना जरूरी

न शौक न मजबरी

रपोरेट सेक्टर तक आईटी निभा रहा भूमिका



हैं. अंतिकों गुरा ने कहा कि वर्गमान बैट ने कुछन एवं संबंध तकनीक के कहर इस मेरितवार की कृष्टि है तो अने बढ़ रहे हैं परन्तु आंधानिकाल, मेरिकाल व सन्वात की वृष्टि है विकड़ रहे हैं। इसका उरिता और संप्रीता प्रयोग ही उसस्पूरी क्षेत्रम प्रकार कर सकता है । इसे के तथा ही, युद्धारित दिए से अपने विचार राजते हुए कहा कि इस तकरीना से हमार जीवर त्सन व द्वाराओं तो बन है परन्तु अन हम तकनेक को नहीं, तकनेक हमें हरोमान कर रही है. यह प्रश्न दिवारचीय है। इस मैंकि पर दिख्य विकास संस्थान के पायन सर्वेत सम्बन्ध, प्रकारक उत्तेत करवाल, वितियन ही दिख्य राजार अनेह . राप्ये किए हाराई है, अरुपा केंद्र, ही, बाँच बहुत्त, ही, तुस्त , हीएत्त्रवाच् हीन ही, राजकुमार आहे केंद्रह हो

गओं को मिलेंगे नौकरी के अवसर

देवस पर पहुंचे उद्योग मंत्री, बोले-रोजगार के लिए सरकार ने किए तीन लाख एमओय साइन



रोब विश्वित के संयुक्त राज्यकरान में छठा दिन रहा। जिसमें मुख्य के शत का शुधारंथ स्वयंत्रेषिकाओं ने सर्थन से किया कर्णक्रम रियोलका हो. और देशकात के रहाब में स्थानीसकी ने साहया

बीतात नाम हिंदू प्रतितंत्र में यूप रेक्क्टीस व राष्ट्रीय सेवा विश्वित के संवक्त समाज्यान में किया गया.

 स्वयस्त्रवर्धा को यस का नहाप बलाय और उसे बचने का

सका नियमें को अपनाने पर बल तकावारिओं को जनसक करने के

वार्थ व नुक्रमा बार्थ । उन्हें बाद्य कि किए एक्ट बैंक में बेक्स पाँच क्रांतियों के स्व के नहीं सम्बद्धियों के स्व व नहीं क्रांतियों के स्व व नहीं क्रांतियों क्रांतियों स्वक्रमीय सम्बद्धियों क्रिय मेशन सर्वट पर शेवर व करे अरोने कहा कि धोबारही ने

श्रीलालनाथ हिन्दू कॉलेज ने



महिला कुश्ती चैंप्रियनशिप में छाई लाल

रोहतक | इंटर कॉलेज महिला कुरती

चैपियनशिप में श्री लालनाथ हिंदू कॉलेज

के पहलवानों ने लगातार दूसरी बार चैंपियन

बनने में सफलता हासिल की। महर्षि दयानंद

विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में हुए

मुकाबलों में 57 किया भार वर्ग में पिंकी ने

प्रथम, 59 किया भार वर्ग में मंजू ने प्रथम, 55

किया भार वर्ग में किरण ने प्रथम, 68 किया

भार वर्ग में निशा ने प्रथम, 76 किया भार

वर्ग में पजा ने गोल्ड मेडल हासिल किया है।

इस अवसर पर हिंदू शिक्षण संस्थान के प्रधान

राजेश सहगल, प्राचार्य डॉ. विजय अरोड़ा व

वीरंट बलोडा ने विजेताओं को बधाई दी है।

नाय हिंद कॉलेज की पहलवान

श्री लालनाथ हिन्दू कॉलेज में प्रतिभा खोज प्रतियोगिता, कैनवास पर भी जादू वि

लया गद्दीखेड़ी गांव को गोद भ्रष्टाचार और भ्रूण हत्या पर 20 ने दिया भाष धर्म व राजनीति की सांठ-गांठ पर साधी चु



कार में पूरी जीवनावर प्रेमाने प्राप्ति के स्थाप महत्त्व अंग्रजी में ख़ाँच जीती

प्रेक्ट प्रकरित स्थान महान को देक्टक में हुई डॉक्टन को छिएँ भारत क्रेन्टिंग में विशेष सरत के ने जिल्लियों को संस्था जनम य अपनि द्वित्त को अपने

व्याख्यान में छात्राओं क जीएसटी के बारे में बतार

हरिभूमि न्यूज भगरोहतक

ब्रो लाल नाथ हिन्दू महाविद्यालय के गुल्मां में सोमकार को वाणिज्य विषय पर विस्तार ज्याख्यान रखा ्या। इसमें महिला महाविद्यालय की ब्रोफेसर डॉ. सुनीता अरोड़ा ने कहा क सरकार ने जीएसटी एक जुलाई से विशेष क्षेत्रों में लाग की थी। जीएसटी में टैक्स देने वाली को काफी सुविधा मिलेगी। उन्होंने एक राष्ट्र एक कर नीति के बारे में बताते हए सर्विस टैक्स, एक्साइज इयुटी कस्टम इयुटी को खत्म करके एक कर लागू करने के बारे में जिस्तारपूर्वक बताया। इस दौरान



प्रोफेसर डॉ. सुनीता अरोडा

राजाओं ने जीएसटी प्रेक्टिश रूप में कार्य करने के बारें में र जवाब किए। इस मौके पर विंग इंचार्ज डॉ. केशी त प्रोफेसर जमा शर्मा, रहिम १

एलएन हिंदू कालेज ने जीता खिताब **स्वयंसेवकों को स्वदे** अपनाने पर बल दि

बहुरी प्रतियोगित में एसएन हिंदू नेत रोतक ने एआइमेएचएव लेज रोहतक को हराकर त्नल का खिलाय जीता। तीवरे न पर डोएवी कालेज फरीदबाद

बंगलवर को एमडीव में यह रही नानंज कबहुरी प्रतिशेषिता का रंथ खेल निदेशक देवेड निश दूस

रोहरक ने हीएकी करतेज फरीदाबाद कालेज रेडाक ने गामधीय कालेज विवानी की टीम को 29-24, मलास हिंदू कालेज रोहरू ने हीएवी कालेज

तिसम्म कलका सिंद बालेज ग्रहतक निसम्बद्धानसम् कालेज संस्कृतकः व जा सके। एअस्चित्रसम्बद्धान कालेज संस्कृतकः व जा सके। ीम को 44-36 के अंकों से हरा करनेज रोहरूक की टीम और सेम शिक्त किया। प्रशिवेतिक में विकास

प्रकार चाहना हमारे व्यापन की ्रभाग प्राचित्रकार कालेज रोहतक व इताल चारते हैं। वह बार देश के मुखाओं को समझनी जनगे हैं ताकि देश का गौरव खडित होने से बयाय और प्रतियंशित का खिताब जीत वे दीने काताओं ही स्थेपान व ही

दूसरा स्थान एआहर्केएपए भीने का आधा व्यक्त बरते हुए ज रहतक भी टीम और तीस इक्सोनको से बहा कि जीवन मे अतिअक्तवक है। याः ग्रीनी सामान के

हरिसुनि न्यूज 🕪 रोहतव

शैलालनाथ हिंदू कालेज में पृथ इक्ष्मीम और राष्ट्रीय मेखा योजना को और में चल रहा सात विक्रमीय क्रिका सत्र में जिश्रा भारती स्कूल के ब्रह्मनाचार्य हाँ, संजय सीनी ने चीन अधानाकाच वर्ग को चुनौतियां विकल पर बात करते हुए म्बपंगेवली को जानवारी ही कि किन

ाठी, राजेश नत्याल, दिनेश कृमार अतिथि वृथ रेडकींस ग्रेस्ट्या

सफलता के लिए संचार कौशल जरूरी: मुखर्जी



श्री वीरेन्द्र दुआ

श्रद्धांगलि

डॉ. महेन्द्र कुमार छाबड़ा



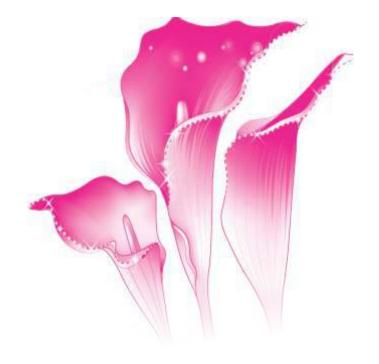
मेरे तो गिरघर गोपाल दूसरो ना कोई



प्राध्यापक संपादिका **डॉ. अंजु देशवाल**

आलेख सूची

विषय
जो अच्छा नहीं था, आज याद आता है
भ्रष्टाचार – कारण और निवारण
थैंक्यू जिंदगी
सार-सूत्र : प्रसन्नता
कीमत
अनमोल वचन
हास्य कविता
आनन्द की पांच राहें
आज का युवा
कुछ कहना चाहती हूं
बच्चों पर बढ़ता टीवी का असर
पिता
मां
भ्रूण
जिंदगी जीने के तरीके
डिजीटल इंडिया
स्वयं से प्रेम करें
खुद की पहचान
जीवन के 17 मूल आधाार
नारी
वो बचपन के दिन
बेटियां
देश क्या आजाद है?
शिक्षक महान
आज का इंसान
छोटी बहन



राम्पादकीय...

बुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात। एक परबा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात ।

- जयशंकर प्रसाद

प्रिय विद्यार्थियो,

सुख और दुःख दोनों स्थितियों से गुजरने का नाम ही जीवन है। जिस तरह जीवन में खुद्दियों के आंचल में सुख पतला है वहीं गमों की आंधियां दुःखों की ओर ले जाती है। पर जो व्यक्ति इन परिस्थितियों में संयम नहीं खोता है, वह अपना जीवन सुखमय बना लेता है। जीवन में खुद्दियां सरलता से नहीं मिलती, अपितु संघर्ष के बाद उन्हें प्राप्त किया जाता है। सुख को प्राप्त करने के लिए सबसे आवश्यक है – जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण।

यिं हमारी सोच सकारात्मक होगी तो वही कार्य करेंगे तथा उसमें सफलभी होंगे। लेकिन यिं नकारात्मक सोच मन में हावी रही तो आवर्यक ही निराज्ञा प्राप्त होगी। अगर व्यक्ति अपने आत्मविञ्चास और लगन के साथ मेहनत करे तो वह अवश्य इच्छित परिणाम पा सकता है। कोई अगर अपने कार्य में असफल भी रहता है ततो उसे हताश होकर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठना चाहिए अपितु आज्ञा का दीप जलाकर साहस डोरी थामकर दुःख की लहरों से संघर्ष करके पार जाने का प्रयत्न करना चाहिए। बार-बार प्रयत्न करने से सफलता अवश्य मिलती है और यही सफलता आपके जीवन को खुशहाल बना देगी।

> डॉ॰ अंजु देशवाल हिंदी विभाग



खुशी का भेद

शैली विरमानी बी.ए. प्रथम वर्ष

बहुत समय पहले की बात है। शिवगढ़ में रतनसेन नाम का एक प्रतापी राजा राज्य करता था। उसके खज़ाने में अपार धन था फिर भी उसे शांति नहीं मिल रही थी। अत: एक दिन वह भेष बदलकर राजमहल से अकेले निकल पड़ा। रास्ते में देखा कि एक किसान, जिसके तन पर ठीक से वस्त्र भी नहीं थे, मस्ती में गीत गाता खेत में काम कर रहा है। किसान की दयनीय दशा को देखकर राजा को दया आ गई। वह उसके पास जाकर सोने की एक मुद्रा दिखाते हुए बोला – यह मुद्रा मुझे तुम्हारे खेत में मिली है। इसलिए तुम्हें दे रहा हूँ। किसान बोला – यह मेरी नहीं है। किसी और की होगी, मैं नहीं लूँगा। किसान की बातों को सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा बोला – धन की आवश्यकता किसे नहीं होती। इसे ले लो। किसान ने कहा – मैं रोज़ चार पैसे कमाता हूँ, उसी में प्रसन्न हूँ। इसे आप स्वयं रख लें या किसी अन्य को दे दें। राजा ने कहा – ''दिनभर में तुम चार पैसे कमाते हो उसी में खुश रहते हो। लोग तो अकूत सम्पत्ति के होते हुए भी खुश नहीं रह पाते।''। ''खुशी अधिक धन से नहीं बिल्क इससे मिलती है कि आप जो कमाते हैं उसका उपयोग कैसे करते हो? किसान का उत्तर था।

''तो तुम चार पैसों का उपयोग कैसे करते हो?'' राजा ने सवाल किया।

राजा के सवाल पर किसान ने कहा- ''मैं चार पैसे में से एक कुएँ में डाल देता हूँ, दूसरे से कर्ज चुकाता हूँ, तीसरे पैसे को उधार दे देता हूँ और चौथे को मिट्टी में गाड़ देता हूँ।'' कहकर किसान अपने काम में लग गया। किसान की बातें राजा की समझ में नहीं आई। वह रातभर सोचता रहा। जब कोई हल नहीं निकला तो दूसरे दिन दरबारियों से इसका अर्थ बताने को कहा। परन्तु कोई भी संतोषजनक उत्तर न दे सका, तब राजा ने किसान को दरबार में लाने का आदेश दिया।

किसान डरते-डरते राजदरबार में उपस्थित हुआ परन्तु उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस अपराध में उसे आने को कहा गया है। राजा उपस्थित होकर भेष बदलकर उससे मिलने की बात बतायी और उसके भय को समाप्त कर दरबार में सम्मान से आसन देकर बैठाया। फिर कहा-''उस दिन मैं तुम्हारी बातों से बहुत प्रभावित हुआ। लेकिन तुमने चार पैसों के बारे में जो बताया, वह समझ में नहीं आया। यही जानने के लिए तुम्हें बुलाया गया है।''

किसान जब भय मुक्त हो गया तो बोला – राजन, चार पैसे की कमाई में से एक पैसा कुएं में डालने का अर्थ है कि इससे अपने परिवार का भरण-पोषण करता हूँ। दूसरे से कर्ज चुकाता हूँ इसका अर्थ है कि इस पैसे को अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करने में खर्च करता हूँ। तीसरे पैसे को उधार देने का अर्थ है कि इस पैसे को अपने बच्चों के पालन-पोषण में लगाता हूँ और चौथे पैसे को जमीन में गाड़ देने का अर्थ है कि इस पैसे को भविष्य की सुरक्षा में लगाता हूँ, जिससे बुरे दिनों में किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े।

किसान की बातों से राजा को उसके खुश रहने का भेद मालूम हो गया कि खुश रहना है तो अर्जित धन का सीमा के अन्दर रहकर सही उपयोग करना होगा।



निडरता

ज्योति बी.ए. तृतीय वर्ष

एक बार एक व्यवसायी पूरी तरह से कर्ज़ में डूब गया था। उसका व्यवसाय बंद होने की कगार पर था। वह बहुत चिंतित व निराश होकर एक बगीचे में बैठा सोच रहा था कि काश कोई उसकी कंपनी को बंद होने से बचा ले।

तभी एक बूढ़ा व्यक्ति वहाँ पर आया और बोला – आप बहुत चिंतित लग रहे हैं, कृपया अपनी समस्या मुझे बताइये शायद मैं आपकी मदद कर सकूँ। व्यवसायी ने अपनी समस्या उस बूढ़े व्यक्ति को बताई। व्यवसायी की समस्या सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने अपनी जेब से चेक बुक निकाली और एक चेक लिखकर व्यवसायी को दे दिया और कहा – ''तुम यह चेक रख लो और ठीक एक वर्ष बाद हम यहाँ फिर मिलेंगे तो तुम मुझे यह पैसे वापस लौटा देना।''

व्यवसायी ने चेक देखा तो उसकी आँखें फटी रह गयीं उसके हाथों में 50 लाख का चेक था जिस पर उस शहर के सबसे अमीर व्यक्ति जॉन रोकफेलर के हस्ताक्षर थे।

उस व्यवसायी को यह विश्वास नहीं हो पा रहा था कि वह बूढ़ा व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि उस शहर का सबसे अमीर व्यक्ति जॉन रोकफेलर था। उसने उस बूढ़े व्यक्ति को आस-पास देखा लेकिन वह व्यक्ति वहाँ से जा चुका था।

व्यवसायी बहुत खुश था कि अब उसकी सारी चिंताएं समाप्त हो गयी है और वह इन पैसों से अपने व्यवसाय को फिर से खड़ा कर देगा। लेकिन उसने निर्णय किया कि वह उस चेक को तभी इस्तेमाल करेगा, जब उसे इसकी बहुत अधिक आवश्यकता होगी और उसके पास कोई दूसरा उपाय नहीं होगा।

उस व्यवासायी की निराशा और चिंताएं दूर हो चुकी थी। अब वह निडर होकर अपने व्यवसाय को नए आत्मविश्वास के साथ चलाने लगा क्योंकि उसके पास 50 लाख रूपये का चेक था जो ज़रूरत पड़ने पर काम आ सकता था। उसने कुछ ही महीनों में व्यापारियों के साथ अच्छे समझौते कर लिए जिससे धीरे-धीरे उसका व्यवसाय फिर से अच्छा चलने लगा और उसने उस चेक का इस्तेमाल किए बिना ही अपना सारा कर्ज़ा चुका दिया।

ठीक एक वर्ष बाद व्यवसायी ही चेक लेकर उस बगीचे में पहुँचा जहाँ पर एक वर्ष पहले वह बूढ़ा आदमी उससे मिला था।

वहाँ पर उसे वह बूढ़ा आदमी मिला, व्यवसायी ने चेक वापिस करते हुए कहा – धन्यवाद आपका जो आपने बुरे वक्त में मेरी मदद की। आपके इस चेक ने मुझे इतनी हिम्मत दी कि मेरा व्यवसाय फिर से खड़ा हो गया और मुझे इस चेक का उपयोग करने की कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

वह अपनी बात पूरी करता तभी वहाँ पर पास ही के पागलखाने के कुछ कर्मचारी आ पहुँचे और उस बूढ़े आदमी को पकड़कर पागलखाने ले जाने लगे। यह देखकर व्यवसायी ने कहा – ''यह आप क्या कर रहे हैं? आप जानते हैं, यह कौन है? यह इस शहर के सबसे अमीर व्यक्ति जॉन रॉकफेलर है।''

पागलखाने के कर्मचारी ने कहा - ''यह तो एक पागल है जो खुद को जॉन रॉकफेलर समझता है। यह हमेशा भागकर इस



बगीचे में आ जाता है और लोगों से कहता है कि वह इस शहर का मशहूर व्यक्ति जॉन रॉकफेलर है। हमें लगता है इसने आपको भी बेवकूफ बना दिया।''

वह व्यवसायी पागलखाने के कर्मचारी की बात सुनकर सन्न रह गया। उसे यकीन नहीं हो पा रहा था कि वह व्यक्ति जॉन रॉकफेलर नहीं था और एक वर्ष से जिस चेक के दम पर वह आराम से अपने व्यवसाय में जोखिमें उठा रहा था, वह नकली था। काफी देर सोचता रहा फिर उसे समझ में आया कि यह पैसा नहीं था जिसके दम पर उसने अपना व्यवसाय वापस खड़ा किया है बल्कि यह तो उसकी निडरता और आत्मविश्वास था जो उसके भीतर ही था।

नन्हीं आँखें

मीनाक्षी बी.कॉम. तृतीय वर्ष

इन आँखों से आसमान देखा, नारी की महिमा और पुरूषों का सम्मान देखा। जाति-भेदभाव की लडाई और नेताओं का चरित्र देखा, बीमारी से लोगों को होते अपवित्र देखा। कितना कुछ देख लिया इन नन्हीं-सी आँखों से, छोटे-छोटे से पत्ते गिरते देखे शाखों से. चढना देखा, उतरना देखा, देखी घनी गहराई. रीति और कुरीति सब देखी, पर कुछ भी समझ न आई।। नन्हीं-सी चिड़िया देखी पलती माँ के पाखों में, कितना कुछ देख लिया इन नन्हीं-सी आँखों ने। नन्हें बच्चों को बढ़ते देखा, बात-बात पर लड़ते देखा, छोटी-सी नन्हीं उँगली से, मैंने हाथ पकडते देखा। सब कुछ ही तो सौंप दिया इन बूढे-से हाथों ने, कितना कुछ देख लिया इन नन्हीं-सी आँखों ने।

हिंदी भाषा

शिल्पा बी.ए. तृतीय वर्ष

हम हिंदी हैं, हिंदी का हम सब को अभिमान है, सारी भाषाएँ प्यारी हैं, पर हिंदी हमारी जान है। जन में हिंदी, मन में हिंदी, हिंदी हो हर ग्राम में, हिंदी का उपयोग करें हम अपने हर एक काम में। एक सुर है, एक ताल है, एक हमारी तान है, सारी भाषाएँ प्यारी है, पर हिंदी हमारी जान है। राजभाषा है ये हमारी, राष्ट्रीयता का प्रतीक है, हिंदी का विरोध करना क्या यह बात ठीक है? हिंदी की जो निंदा करते, वे अब तक नादान है, सारी भाषाएँ प्यारी हैं, पर हिंदी हमारी जान है। सारे विश्व में फैले हिंदी, हम सबका अरमान है, सारी भाषाएँ प्यारी हैं, पर हिंदी हमारी जान है।





खुशी की कहानी

मुस्कान ठकराल बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बार एक आदमी संत के पास जाता है और संत को कहता है कि संत जी मेरी जिन्दगी में कोई खुशी ही नहीं आती। सोचा था, जब मेरी नौकरी लगेगी, तब पिताजी को मैं एक गाड़ी भेंट करूँगा पर ये नहीं हो पाया क्योंकि मुझे नौकरी मिलने से पहले ही उनका देहांत हो गया। सोचा था, जब प्रोमोशन मिलेगा तब अपने बच्चों को कहीं घुमाने लेकर जाऊँगा लेकिन प्रोमोशन ही नहीं हुआ। ऐसी ही न जाने और कितनी खुशियाँ थी, जिनका मैं इंतज़ार करता ही रह गया। लेकिन वो मुझे कभी मिली ही नहीं। मुझे समझ नहीं आता कि मुझे कभी खुशियाँ मिलेंगी भी या नहीं?

संत उठे और उस आदमी को पास वाले बगीचे में लेकर गए जहाँ एक लाइन में गुलाब के बहुत से फूल लगे हुए थे। उन्होंने उस आदमी को कहा कि एक काम करो। पंक्ति से ये फूल देखते जाओ और जो फूल तुम्हें सबसे अच्छा लगे वो तोड़कर ले आना। लेकिन हाँ, एक बात ध्यान रखना कि एक बार जिस फूल से तुम आगे निकल गए, उसके पास वापिस नहीं आ सकते और हाँ, फूल लेकर आना भी ज़रूरी है। वो आदमी चलता गया, तो उसे कुछ बड़े फूल दिखते तो कुछ छोटे, हर फूल पर पहुँचकर वो इसी सोच में रहता कि शायद आगे इससे और भी अच्छे फूल हों।

जब वो उस लाइन के अंत तक पहुँचा तब उसने देखा कि अब बस कुछ मुरझाए हुए से फूल बचे हैं और उनमें से जो फूल सबसे खिला हुआ दिखा, वह उसे लेकर संत के पास चला गया। और उसने संत जी को बताया – ''संत जी! मुझे रास्ते में कई तरह के छोटे व बड़े फूल दिखे लेकिन मैं इसी आस में आगे चलता गया कि मुझे कोई और सुन्दर व बड़ा फूल मिलेगा। लेकिन अंत में सिर्फ मुरझाया हुआ फूल ही मिला। तब वो संत मुस्कुराया और बोला कि बेटा, तुम सबसे सुन्दर फूल की तलाश में आगे बढ़ते गए और जितने सुन्दर फूल थे उनकी जगह ये मुरझाया हुआ फूल लेकर आए।

ये बगीचा समझ लो कि तुम्हारी ज़िन्दगी है और ये फूल तुम्हारी ज़िन्दगी में आने वाली छोटी-बड़ी खुशियाँ! जैसे तुम ये

सोचकर चलते गए कि आगे और सुन्दर फूल मिलेगा, और बाकी फूलों की खूबसूरती को नज़र-अंदाज़ करते गए, ठीक उसी तरह ज़िन्दगी में आने वाली छोटी-छोटी खुशियों को हम नज़र-अंदाज़ कर जाते हैं, एक बड़ी खुशी की तलाश में और जब तक ये समझ आता है, ज़िन्दगी निकल चुकी होती है।

> सिर्फ़ मंज़िल का ही नहीं, सफर का भी मज़ा लो।

इस ख्याल से भी डरते हैं।

अनु बी.ए. प्रथम वर्ष

एक-दूसरे के जख्मों पर नमक छिड़कते हैं।
ये दुनिया वाले बेवज़ह लड़ते हैं।
न जाने कैसे एक-दूसरे का लहू बहाते हैं,
हम तो इस ख्याल से भी डरते हैं।
अपना एक वतन है, एक चमन है,
बंटवारे की चाह में कितने जिस्म जलते हैं?
क्यों लोग खुद को दूसरे से अलग रखते हैं?
जबिक एक ही रंग के लहू दोनों में बहते हैं।



जब जागा आत्मविश्वास

ज्योति स्वामी बी.ए. तृतीय वर्ष

एक बार दो देशों के बीच भयानक युद्ध छिड़ गया। उनमें से एक देश हार गया। उसका सेनापित बचे-खुचे सैनिक लेकर एक मंदिर में जा पहुँचा। वह काफी देर तक भगवान से अपनी जीत की प्रार्थना करता रहा। फिर सैनिकों से कहा-'देखो, मेरे हाथ में एक सिक्का है, इसे मैं तीन बार उछालूंगा। यदि एक से अधिक बार हेड आया तो हम इसे ईश्वरीय आज्ञा मानकर संपूर्ण शिक्त संजोकर शत्रु पर एक बार फिर हमला करेंगे और तब हमारी ही जीत होगी।'

सैनिकों ने स्वीकृति से सिर हिलाया सिक्का तीन बार उछाला गया। तीनों बार हेड आया। यह देखकर सैनिक खुशी से चिल्लाने लगे। इस बार नए उत्साह से लड़े और विजयी हुए। विजय का समारोह मनाते हुए सेनापित ने कहा, 'जीत हमें सिक्के की प्रेरणा से मिली है। सच तो यह है कि सिक्के के दोनों तरफ हेड ही है, लेकिन इससे प्राप्त प्रेरणा से हमारा आत्मविश्वास जागा और कम संख्या में होकर भी हमने शत्रु को पराजित कर दिया।

देखो, तमाशा आदमी का

राखी बी.ए. प्रथम वर्ष

आदमी बन गया आज, दुश्मन आदमी का, आदमी लगा निचोड्ने रक्त, आज आदमी का। आदमी भयभीत होता जा रहा है, आज आदमी से, आदमी का विश्वास उठ गया, आज आदमी से, देखो क्या रूप बना, आज आदमी का। आदमी बन गया आज दुश्मन आदमी का।। पैसे की खातिर बेच रहा ईमान, बन गया लम्पट, भ्रष्टाचारी, कामी, क्रोधी, दम्भी, लोभी, अत्याचारी, कैसी अक्ल है हमारी। भंयकर विध्वंसकारी रूप बना, आज आदमी का। आदमी बन गया आज दुश्मन आदमी का। जहाँ देखूँ वहीं छाया, चमत्कार आज आदमी का, आदमी न कर सका फिर भी, सच्चा भला आदमी का। देखो भाई क्या रूप बनाया आज आदमी ने आदमी का. आदमी बन गया आज दुश्मन आदमी का। आदमी का स्त्रोत आदमी, आदमी ने किया संचार आदमी का, आदमी पड़ा पीछे आदमी के, आदमी कर रहा संहार आदमी का। सुरम्य, मानवता कराह रही, देख तमाशा आदमी का, आदमी बन गया आज दुश्मन आदमी का।.....

हिंदी

शिल्पा बी.ए. तृतीय वर्ष

कल रात मैंने हिंदी को, अपने सपने में देखा। उसके मुख मंडल पर छाई थी, गहरी उदासी की रेखा। मैंने पूछा हिंदी से, इतनी गुमसुम हो कैसे? अब तो हिंदी दिवस है आना, सम्मान तुम्हें सबसे है पाना। हिंदी बोली यही गिला है, वर्ष का बस एक दिन मुझे मिला है। मेरे बच्चे मुझे ना जाने, लोहा अंग्रेजी का मानें। अपने देश में मैं हूँ पराई, ऐसा मान न चाहूँ भाई। हिंदी की यह बात सुनी जब, ग्लानि से भर उठी मैं तब। सोचा माँ की पीड़ बता दूँ, जन-जन तक हिंदी पहुँचा दुँ।



शब्द

ज्योति स्वामी बी.ए. तृतीय वर्ष

कहा जाता है कि लोग आपको आपके शब्दों से पहचानते हैं इसलिए शब्दों को चुनते समय बहुत ध्यान रखने की जरूरत है। शब्दों में बहुत ताकत होती है क्योंकि जो शब्द आप कह देते हैं वो न भूलाए जाते हैं और न ही माफ किए जाते हैं। कहा ये भी जाता है कि बोलने पर कोई रोक नहीं है। इसके कोई पैसे नहीं है। शब्द मुफ्त हैं। लेकिन कई बार इन शब्दों की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि इन्सान की ज़ुबान बेलगाम चलती है। आपका एक अच्छा या बुरा शब्द आपका और किसी और का पुरा दिन अच्छा या बुरा बना सकता है। मदर टेरेसा ने कहा है कि अच्छे शब्द छोटे होते हैं और बोलने में आसान भी। लेकिन इनकी प्रतिध्विन लंबी होती है और कभी-कभी तो अंतहीन भी होती है। दरअसल अच्छे शब्दों में रचनात्मक शक्ति होती है। एक शब्द की एक सोच पूरी दुनिया को बदल सकती है। शब्दों के बारे में विस्टन चर्चिल ने कहा था कि सभी महान चीज़ें सिर्फ एक शब्द में ज़ाहिर हो जाती हैं। जैसे :- आजादी, न्याय, सम्मान, उम्मीद, हमारी बोलचाल में भी इन्हीं शब्दों का उपयोग अधिक होना चाहिए। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि एक शब्द है - असंभव, जो सिर्फ मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है।

लघुकथा : गाँधी जी का विश्वास

रूबी पाण्डे बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बार महात्मा गाँधी रेलगाड़ी से सफर कर रहे थे। रेलगाड़ी में उनके सामने वाली सीट थोड़ी-सी फटी हुई थी। अचानक एक आदमी जो उनके बगल में बैठा था, उस फटी हुई सीट पर जाकर बैठ गया। उसने अपने बैग में सुई-धागा निकाला और उस सीट को सिलने लगा। गाँधी जी यह देखकर अचरज में पड़ गए। उन्होंने उत्सुकतावश उस सज्जन से पूछा, 'बंधु'! आप कौन हैं? 'मैं एक शिक्षक हूँ'', उस सज्जन ने जवाब दिया। तब गांधी जी ने कहा, 'मुझे पक्का विश्वास था कि आप एक शिक्षक ही होंगें। क्योंकि केवल एक शिक्षक ही समाज को जोड़ने की बात सोच सकता है।'

शायरी

अंजू बी.ए. तृतीय वर्ष

1947 को हिन्द-पाक आज़ाद हुआ,
कुछ घर आबाद तो बहुत कुछ बर्बाद हुआ।
एक देश सोने की चिड़िया बना,
तो एक बना आतंकियों का अड्डा!
एक घूम आया मंगल, चंद्रमा पर,
तो एक अभी तक हिन्दुस्तान पर अटका रहा।
शादी, दिवाली पर फूँक देते बारूद हम इतना,
उसके देश में इसका भंडार है जितना!
ज़ंदा फूंकने की बात करता है वो,
मुर्दा जलाने का तो उसमें दम नहीं!
समझाते हैं पहले मीठी बोली से हम
वरना गोली चलाने में



सफलता पाने के सूत्र

ज्योति स्वामी बी.ए. तृतीय वर्ष

- । अपना जीवन ऐसे जियो कि तुम्हारी मौत पर पूरी दुनिया रोए और तुम जश्न मनाओ।
- जब तक आप अपनी समस्याओं एवं कठिनाइयों की वजह दूसरों को मानते हैं, तब तक वे नहीं मिटेंगी, दूसरों को दोष देना बंद करो।
- लक्ष्य पूरा करने से पहले बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं, क्योंिक लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी, जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य पर पहुंचते। जैसे बारिश के दौरान सारे पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं, लेकिन बाज बादलों के ऊपर उड़कर बारिश की उपेक्षा करता है अर्थात् सफलता के मार्ग में समस्याएँ कठिनाईयाँ सामान्य रूप से सभी के मार्ग में आती हैं पर कर्मठ व्यक्ति 'मैं कर सकता हूँ, अवश्य कर सकता हूँ', का संबल लेकर आगे बढ़ता है।
- सफलता के मार्ग में जीत-हार का सामना अवश्यंभावी है। सफलता हमारा परिचय दुनिया से करवाती है जबिक असफलता हमें दुनिया का परिचय करवाती है।
- आत्मिवश्वास सफलता का प्रमुख मंत्र है। अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने में लग जाती है।
- । बड़प्पन कभी न गिरने में नहीं, वरन् हर बार गिरकर संभलने में है।
- । सफलता के मार्ग में हुई त्रुटियों को स्वीकारना आवश्यक है।

नारी न होती

अनु बी.ए. प्रथम वर्ष

नारी न होती तो थम जाती सृष्टि सारी कहावत भी कोई न होती आँचल में दूध, आंखों में पानी। बंद बोतल में पानी सरीखी होती है नारी! कहां जन्मी, कहां ब्याही जाती है नारी, बचपन से सुनती नारी। पराये घर जाने की पुरानी कहानी, विदाई के वक्त रोती-सिसकती, पर रोकी न जाती नारी। छह गज की साडी न होती माँ का आँचल, बच्चे की किलकारी न होती, रेगिस्तान सरीखी तपती, होती दुनिया सारी, यदि नारी न होती। नारी! तुम न होती तो, न बसती आबादी खंडहर में, सायं-सायं-सी गूंजती। अर्थहीन होती मनु आवाज़ तुम्हारी, नारी न होती तो थम जाती सृष्टि सारी।



कहानी

मुस्कान ठकराल बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बार अकबर और बीरबल शिकार पर जाते हैं और तलवार निकालते हुए अकबर का अँगूठा कट जाता है। अकबर बौखला जाता है, चीखने-चिल्लाने लग जाता है और कहता है-'सिपाहियों। जाओ। जल्दी वैद्य को बुलाकर लाओ। उधर से बीरबल आता है, बोलता है-'महाराज! जो होता है, अच्छे के लिए होता है इस बात पर अकबर को बहुत गुस्सा आता है और वो कहता है ''बीरबल तुम पागल हो गए हो क्या? ये क्या बोल रहे हो? मैं तुझे अपना समझता था और तुम ये कैसी बेकार की बात कर रहे हो।'' वह अपने सिपाहियों से कहता है वैद्य को बुलाने की छोड़ो और इस बीरबल को पूरी रात उलटा लटका दो और इसे कोड़े मारते रहना और सुबह-सुबह फाँसी दे देना। सिपाही बीरबल को ले जाते हैं और उधर से अकबर अकेला शिकार पर चला जाता है। जब वो शिकार पर जाता है तो कुछ आदिवासी उसे पकड़ कर ले जाते हैं और उसे उलटा टाँग देते हैं। वहाँ आदिवासियों का नाच चल रहा होता है। इतने में एक आदिवासी की नज़र उसके अँगूठे की तरफ पड़ती है और वो कहता है-''अरे! ये तो अशुद्ध है, हम इसकी बिल नहीं चढ़ा सकते। छोड़ दो इसको!!'' अकबर को छोड़ दिया गया।

सुबह का समय हो गया और अकबर को लगता है कि अब तक तो बीरबल को फाँसी हो गई होगी। अकबर चीखता-चिल्लाता भागता है - ''बीरबल! बीरबल!'' बीरबल को बस फाँसी लगने ही वाली है, रस्सी लग चुकी है। वह भागकर के बीरबल के पैर पकड़ लेता है और कहता है-'बीरबल! मुझे माफ कर दो। तुम ठीक कहते थे, जो होता है, अच्छे के लिए होता है। देखो! आज तुम्हारी वजह से मैं ज़िन्दा हूँ और मुझे देखो मैं कितना घटिया इंसान हूँ, मैंने तुम्हारा क्या हाल बना दिया। तब बीरबल टूटी-फूटी हालत में बोलता है-नहीं, महाराज! जो होता है अच्छे के लिए होता है। अकबर चौंक जाता है और कहता है-'बीरबल, तू पागल है क्या? क्या बोल रहा है? जो होता है अच्छे के लिए होता है। इसमें क्या अच्छा है? तब बीरबल कहता है-''महाराज, इसमें ये अच्छा है कि अगर मैं आप के साथ गया होता तो वो लोग मेरी बिल चढा देते।''

शिक्षा:- जो होता है, अच्छे के लिए होता है।

शायरी

अनु बी.ए. प्रथम वर्ष

अभी सूरज नहीं डूबा, ज़रा शाम तो होने दो। मैं खुद लौट आंऊगा, मुझे नाकाम तो होने दो। मुझे बदनाम करने का, बहाना ढूंढती है ये दुनिया। मैं खुद हो जाऊँगा बदनाम, पहले मेरा नाम तो होने दो।।

आज तिरंगा फहराता है शान से

ज्योति सिंगला बी.ए. तृतीय वर्ष

आज तिरंगा फहराता है अपनी पूरी शान से, हमें मिली आज़ादी वीर-शहीदों के बिलदान से। आज़ादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी, लाखों लोगों ने प्राणों से बड़ी कीमत चुकाई थी। व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया हमको आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी। हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से, हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बिलदान से।



किस्सत किसान की

शिल्पा बी.ए. तृतीय वर्ष

जो देते हैं ख़ुशहाली, जिसके दम पर है हरियाली, आज वही बर्बाद खडा है, देखो उसकी बदहाली। बहुत बुरी हालत है ईश्वर, धरती के भगवान की, टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की।। ऐसी आँधी चली कि घर का तिनका-तिनका बिखर गया, आखिर धरती माँ से, उसका प्यारा बेटा बिछड गया। अखबारों की रद्दी बनकर, बिकी कथा बलिदान की, ट्रटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की।। इतना सूद चुकाया उसने, के अपनी सुध भूल गया, सावन के मौसम में झुला लगा के, फाँसी झुल गया। अमवा की डाली पर देखो. लाश टंगी ईमान की. टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की ।। किसी को काले धन की चिंता. किसी को भ्रष्टाचार की. मगर लड़ाई कौन लड़ेगा, फसलों के हकदार की। सरे आम बाजार में इज्जत, लुट जाती खलिहान की, टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की ।। एक अरब पच्चीस करोड की, भूख जो रोज मिटाता है, कह पाता वो नहीं किसी से, जब भूखा सो जाता है। सीने पर गोली वो खाता. सरकारी सम्मान की. टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की ।। जो अपने कांधे पर देखो, खुद हल लेकर चलता है, आज उसी की कठिनाई का, हल क्यों नहीं निकलता है? जिनसे है उम्मीद, उन्हें बस चिंता है मतदान की, टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की ।। देख कलेजा फट जाता है, आँखों से आँसू बहते, ऐसा ना हो, रो पड़े कलम, सच्चाई कहते-कहते।

बाली तक गिरवी रखी है, बेटी के अभिमान की, टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की ।। चीख पड़ी खेतों की माटी, तड़प उठी पावन धरती, बिना कफ़न जब पगडंडी से, गुज़री थी उसकी अर्थी। और वही विदा हो गया, जिसे चिंता थी कन्यादान की, टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की।।

उम्मीद इंसानों की

अनु बी.ए. प्रथम वर्ष

उम्मीद की थाली लिए हर इंसान है खड़ा बस कुछ चंद पैसों की खातिर अपने वजूद का भी करता सौदा। रिश्तों की भूख से जब तड़पता सिर्फ अपनेपन को ही खोजता, उम्मीद की थाली में, कोई प्यार परोस दें फिर जाके वह यह सोचता। होकर बैचेन अपनी तन्हाइयों से अपने मन की गहराइयों मे सोता, तब तक उम्मीद की थाली पकड़े बस इधर–उधर ही भटकता।



प्यारा हिंदुस्तान

ज्योति सिंगला बी.ए. तृतीय वर्ष

अमरपुरी से भी बढ़कर जिसका गौरवगान है, तीन लोक से न्यारा, अपना प्यारा हिंदुस्तान है। गंगा, यमुना, सरस्वती से सिंचित जो गत-क्लेश है, सुजला-सुफला, शस्य-श्यामला, जिसकी धरा विशेष है। ज्ञान-रिश्म जिसने बिखेर कर, किया विश्व कल्याण है, शतत्-सत्य-रत, धर्म-प्राण, वह अपना भारत देश है। वेदों के मंत्रों से गुंजित स्वर, जिसका निर्भांत है। प्रज्ञा की गरिमा से दीप्त, जग-जीवन अक्लांत है। अंधकार में डूबी संसृति को दी जिसने दृष्टि है, तपोभूमि वह जहाँ कर्म की सरिता बहती शांत है। इसकी संस्कृति शुभ्र, न आक्षेपों से धूमिल कभी हुई, अति उदास आदर्शों की निधियों से यह धनवान है।

लकीरें

अमिता बी.ए. प्रथम वर्ष

एक छोटी तो दूजी बड़ी है, कौन-सी कलम से तूने लकीरें लिखीं हैं? कुछ ना समझ आए, बस देखते ही जाए। छोटी-सी मुठ्ठी और कितना कुछ लिखवा लाए। कैसे-कैसे मोड़, इस ज़िन्दगी में आए है? सुख से ज़्यादा दु:ख से भरी हैं ज़िन्दगी की कहानियाँ फ़कीरों से हमने लकीरों को दिखाया पूजा पाठ से लेकर हवन तक कराया, फिर भी लकीरों में क्या है लिखा, कोई ना समझ पाया। एक छोटी तो दूजी बड़ी है, कौन-सी कलम से तूने लकीरें लिखी हैं? योग-भोग के बीच संतुलन, जहाँ निष्काम है, जिस धरती की आध्यात्मिकता का शुचि रूपलताम है। निस्पृह स्वर गीता-गायक के गूँज रहे अब भी जहाँ, कोटि-कोटि उस जन्मभूमि को श्रद्धावंत प्रणाम है। यहाँ नीति-निर्देशक तत्वों की सत्ता महनीय है, ऋषि-मुनियों का देश अमर यह भारतवर्ष महान है। क्षमा, दया, धृति के पोषण का इसी भूमि को क्षेय है, सात्विकता की मूर्ति मनोरम इसकी गाथा गेय है। बल-विक्रम का सिंधु जिसके चरणों पर है लेटता, स्वर्गादिप गरीयसी जननी, अपराजिता, अजेय है। समता, ममता और एकता का पावन उद्धाम यह है, देवोपम जन-जन है इसका, हर पत्थर भगवान है।

वो बचपन के दिन

मुस्कान ठकराल बी.ए. प्रथम वर्ष

मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में,
तू ज्रा हिम्मत तो कर ।
ख्वाब बदलेंगे हकीकत में,
तू ज्रा कोशिश तो कर ।।
आंधियाँ सदा चलती नहीं,
मुश्किलें सदा रहती नहीं।
मिलेगी तुझे मंज़िल तेरी,
बस तू ज्रा कोशिश तो कर ।।



जिन्दगी

रीतू एम.ए. तृतीय वर्ष

जिन्दगी एक उपहार है, कबुल कीजिये। जिन्दगी एक एहसास है, महसूस कीजिये। जिन्दगी एक दर्द है, बाँट लीजिये। जिन्दगी एक प्यास है, प्यार दीजिये। जिन्दगी एक मिलन है, मुस्कुरा लीजिये। जिन्दगी एक जुदाई है, सबर कीजिये। जिन्दगी एक आँसू है, पी लीजिये। जिन्दगी आखिर जिन्दगी है, जी लीजिये।

कीमत

प्रीति शर्मा बी.ए. प्रथम वर्ष

''समय की कीमत अखबार से पूछो, जो सुबह चाय के साथ होती है वही रात को रद्दी हो जाता है। ज़िंदगी में जो भी हासिल करना हों, उसे वक्त पर हासिल करो क्योंकि ज़िंदगी मौके कम और धोखे ज़्यादा देती है। ज़िंदगी ने मेरे मर्ज़ का एक बढ़िया इलाज बताया, वक्त को दवा कहा और मतलबियों का परहेज़ बताया।''

पिता की महिमा

सोनम बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ की महिमा सब बतलाते. मैं बतलाऊँ, क्या है पिता ? परिवार की परवरिश ही नहीं, परिवार का अनुशासन है पिता। खुद अभाव में रहकर, परिवार का पेट भरता है पिता। संतान की परवरिश के लिए. दिन-रात एक करता है पिता। पिता के कारण ही माँ को. माँ कहलाने का अधिकार मिला। पिता के कारण ही माँ को. सिंदूर-बिंदी और सब शृंगार मिला । जिन्हें माता-पिता का सान्निध्य मिला, उन्हें कोई अभाव हो नहीं सकता। माता-पिता ही सच्चे ईश्वर हैं, इनसे बड़ा ईश्वर हो ही नहीं सकता।



सच्चा सैनिक

शिल्पा बी.ए. तृतीय वर्ष

जो सरहद पर तो जा न सके, पर अपना फर्ज निभाते हैं। अस्वच्छता नामक शत्रु से, भारत देश को बचाते हैं। दो पल वतन के आज, उनके नाम करती हैं। जो सड़क, नाले साफ करते हैं, उन्हें सलाम करती हैं। घिन्न आती है लोगों को जिनसे, जमाना जिन्हें धिक्कारता है। वही सच्चा सैनिक है. जो गंदगी को मारता है। जो दुनिया की नजरों में, कुड़े-कबाड़ी वाला है। सही मायने में वही, भारत का रखवाला है। युं तो हम सब सरहद पर, पौरूष दिखलाना चाहते हैं। इस्लामाबाद की धरती पर भी, ध्वज लहराना चाहते हैं। ये ख्वाब बेशक पुरा होगा, यौवन में ये ताकत है। शेरों के जो दाँत गिने, रक्त में वही हिमाकत है। पर भारतवंशियों की हालत आज. शर्म आती है बताने में। हम नाक सिकोडने लगते हैं, एक कागज का ट्कडा उठाने में।

तब सोचता हूँ, ये दौर ऐसा कर लेगा। क्या सचमुच अपने हाथों में, वसुधंरा अंबर लेगा। अस्वच्छता से मैत्री है, तो राजतिलक क्या लगायेंगे? जो हाथ झाड़ उठा ना पाये, संगीन कैसे चलायेंगे? सरहद सैनिक बचा लेगें. बैठे वतन की साधना में। हम भी तो कुछ अर्पण कर दें, भारत माँ की अराधना में। एक भीष्म प्रतिज्ञा अब, हर जन भारत का ले। अट्ट, प्रेम स्वच्छता से, हर मन भारत का जीत ले। युद्ध का ऐलान अब, गंदगी के खिलाफ हो। और माँग यही है जनता से. देश का कचरा साफ हो। हुक्मरानों से उम्मीद यही, आशा यही है जवानी से। इल्तजा गाँधीवाद की, हर एक हिंदुस्तानी से। संदेश हमारा जमाने भर में, हर पहर जायेगा। जम्बुदीप का जयघोष गगन में, बेशक ठहर जायेगा। भले खून ना बहाए सरहद पर, एक छिलका अदब से उठाइये। बिना पवन के अमर तिरंगा, खुद ही लहरा जाएगा।



देर हो जाती है

ज्योति खुंडियाँ एम.ए. प्रथम वर्ष

हर पल गम आता है ज़िंदगी में, खुशी आने में देर हो जाती है। फूल तोड़ने में वक्त नहीं लगता, कली खिलने में देर हो जाती है। मेहनत करके समय पर बीज बोते हैं, हम पर बारिश आने में देर हो जाती है। गुनाह करने में वक्त नहीं लगता लेकिन, इन्साफ मिलने में मगर देर हो जाती है। ज़िंदगी का सच है यही, मगर समझने में देर हो जाती है।

ज़िंदगी

ज्योति खुंडियाँ एम.ए. प्रथम वर्ष

ज़िंदगी उलझन भी है, इम्तिहान भी है, ज़िंदगी एक दर्द भी है, मुस्कान भी है। इस राह में कांटे मिले कि फूल मिले, ज़िंदगी मरूस्थल भी है, उद्यान भी है। छल-कपट से सुलझे कि प्यार निभाए ज़िंदगी मासूम भी है और नादान भी है। दूर तक फैला जो ये सागर है, इनमें अनमोल खज़ाना भी है और तूफान भी है। कतरा-कतरा बिकता है, हर आदमी, ज़िंदगी सौदागर भी है, दुकान भी है, बस्ती में झोंपड़ी के अन्दर देखो, जिंदगी सितम भी है और अरमान भी है।

शायरी

ज्योति खुंडियाँ एम.ए. प्रथम वर्ष

भला-बुरा ना कोई रंग रूप से कहलाता है, दृष्टि भेद ही गुण-दोष दिखलाता है। कोई देखता है कमल की कली को कीचड़ में, तो किसी को चाँद में भी दाग नज़र आता है। धूप में निकल गए, घटाओ में भी नहा कर देखों, ज़िंदगी क्या चीज़ है, मेहनत करके तो देखों। फासला तो नज़रों का धोखा भी हो सकता है, सफलता मिले ना मिले, कदम बढ़ाकर तो देखों। सीढ़ियाँ उनके लिए बनी हैं, जिन्हें छत पर जाना है। आसमां पर हो जिसकी नज़र, उन्हें सफलता को पाना है।

कहानी तीन दोस्तों की

ज्योति स्वामी एम.ए. तृतीय वर्ष

ज्ञान, धन और विश्वास, तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे। तीनों में प्यार भी बहुत था, इक वक्त आया जब तीनों को जुदा होना पड़ा, तीनों ने एक-दूसरे से सवाल किया कि हम कहाँ मिलेंगें ? ज्ञान – मैं मंदिर, मिल्ंद, विद्यालय में मिलूँगा। धन – मैं अमीर के पास मिलूँगा। विश्वास चुप था, दोनों ने चुप होने की वज़ह पूछी तो विश्वास ने रोते हुए कहा – मैं एक बार चला गया तो फिर कभी नहीं मिलूँगा।



आज का युवा

प्रियंका बी.ए. तृतीय वर्ष

स्वामी विवेकानंद जी ने अपने अमेरिका प्रवास के दौरान कहा था कि किसी देश का भविष्य उसकी युवा शक्ति पर निर्भर करता है, लेकिन एक सवाल है जो अक्सर अपना सिर उठाता है। ये कौनसी ताकत है जिस पर देश का भविष्य निर्भर करता है? आँखों में उम्मीद के सपने, नई उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने की हिम्मत और दुनिया को मुठ्ठी में करने का साहस रखने वाला ही शायद युवा कहलाता है। युवा शब्द ही मन में उड़ान और उमंग पैदा करता है। उम्र का शायद यही दौर है जब केवल स्वयं युवा का ही नहीं बिल्क उसके राष्ट्र का भविष्य भी तय किया जा सकता है। आज का भारत युवाओं का देश कहलाता है। भारत में 65% युवा 35 वर्ष के है तो 25 वर्षीय नौजवानों की संख्या 50% से भी अधिक है। लेकिन आज का एक कटु सत्य यह भी है कि आज के युवा अपनी मनमानी बहुत करते हैं और किसी की भी नहीं सुनते। दिशाहीनता और अनुशासनहीनता की इस स्थिति में युवाओं की ऊर्जा का नकारात्मक दिशाओं की तरफ मार्गान्तरण व भटकाव होता जा रहा है। वर्तमान स्थिति के लिए हमारे स्वार्थ और समझौते ज़िम्मेदार है। हालात भयावह होते जा रहे हैं। संयुक्त परिवारों की ध्वस्त होती अवधारणा, अनाथ माता–पिता, फ्लैटस में सिकुड़ते परिवार, प्यार को तरसते बच्चे, नौकरों व ड्राईवरों के सहारे जवान होती नई पीढ़ी आखिर हमें क्या संदेश दे रही है ? यह प्रश्न विचारणीय है।

कहानी

प्रियंका बी.ए. तृतीय वर्ष

21वीं सदी में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नारे की गूंज चारों ओर सुनाई पड़ने लगी। इस नारे की क्या आवश्यकता है जब भारतवर्ष में प्राचीनकाल से ही नारी की स्तुति 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' कहकर की जाती रही है। यहाँ तक कि असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिए भी देवताओं को नारी की ही शरण में जाना पड़ा था। राक्षसों का संहार करने वाली देवी दुर्गा माँ थी, विद्या की देवी सरस्वती, धन की देवी महालक्ष्मी और दुष्टों का नाश करने वाली महाकाली भी नारी ही तो थी।

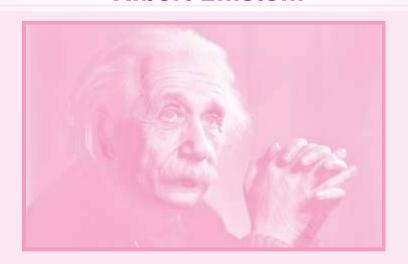
आज नारी चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री तक के पद पर विराजमान है। सुरक्षा बल, पुलिस, सेना, अन्य सभी क्षेत्रों में नारी की उपलब्धि है। इतना ही नहीं आधुनिक काल में आज़ादी की लड़ाई में महिलाओं ने पर्दा प्रथा को त्यागकर देश को स्वतन्त्रता दिलवाने में बढ़-चढ़कर भाग लिया। फिर भी नारी को चार दीवारी तक ही क्यों सीमित रखे जाने की सोच रखी जाती है? फिर क्यों उसे हीन-भाव से देखा जाता है? ऐसे कौन-से कारण हैं जिनके रहते बेटी को गर्भ में ही मरवा दिया जाता है? आज आवश्यकता है, इन कारणों पर विचार करने की। आजकल माता-पिता के लिए बेटी की परविरश करना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है, क्योंकि यौन अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसी कारण माता-पिता की सोच बनती जा रही है कि यदि हम बेटी की इज्जत की रक्षा ही न कर पाऐं तो फिर जन्म देने से क्या फायदा होगा? यही सोच कन्या-भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण है जिसे हमें बदलना है। बेटे और बेटी को समान समझे। यदि समस्या की गहराई तक झांका जाए तो बेटी दोषी कहाँ है? दोषी तो यह समाज है उसकी संकीर्ण सोच है।

''बेटी बचाओ, बेटी पढाओ, देश को आगे बढाओ।''



English Section

Great Spirits have always faced Violent opposition from average minds
-Albert Einstein



Staff Editor
Dr. Shikha Phogat

CONTENTS

1. Music Education 2. Examination 3. Key to Happiness 4. A Teacher for all Seasons 5. Graduation 6. Save the Girl Child 7. Riddles 8. Today's Dream are Tomorrow's Success 9. Three Things 10. Success Versus Failure 11. An Important Letter Game 12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World 17. Today I Smiled	Sr. No.	Article Name
 Key to Happiness A Teacher for all Seasons Graduation Save the Girl Child Riddles Today's Dream are Tomorrow's Success Three Things Success Versus Failure An Important Letter Game Meditation Books are Our Best Companions Winners Versus Losers Time and Karma A Dream a World 	1.	Music Education
4. A Teacher for all Seasons 5. Graduation 6. Save the Girl Child 7. Riddles 8. Today's Dream are Tomorrow's Success 9. Three Things 10. Success Versus Failure 11. An Important Letter Game 12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World	2.	Examination
 Graduation Save the Girl Child Riddles Today's Dream are Tomorrow's Success Three Things Success Versus Failure An Important Letter Game Meditation Meditation Books are Our Best Companions Winners Versus Losers Time and Karma A Dream a World 	3.	Key to Happiness
 6. Save the Girl Child 7. Riddles 8. Today's Dream are Tomorrow's Success 9. Three Things 10. Success Versus Failure 11. An Important Letter Game 12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World 	4.	A Teacher for all Seasons
 Riddles Today's Dream are Tomorrow's Success Three Things Success Versus Failure An Important Letter Game Meditation Meditation Books are Our Best Companions Winners Versus Losers Time and Karma A Dream a World 	5.	Graduation
 8. Today's Dream are Tomorrow's Success 9. Three Things 10. Success Versus Failure 11. An Important Letter Game 12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World 	6.	Save the Girl Child
9. Three Things 10. Success Versus Failure 11. An Important Letter Game 12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World	7.	Riddles
10. Success Versus Failure 11. An Important Letter Game 12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World	8.	Today's Dream are Tomorrow's Success
 An Important Letter Game Meditation Books are Our Best Companions Winners Versus Losers Time and Karma A Dream a World 	9.	Three Things
12. Meditation 13. Books are Our Best Companions 14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World	10.	Success Versus Failure
 Books are Our Best Companions Winners Versus Losers Time and Karma A Dream a World 	11.	An Important Letter Game
14. Winners Versus Losers 15. Time and Karma 16. A Dream a World	12.	Meditation
15. Time and Karma16. A Dream a World	13.	Books are Our Best Companions
16. A Dream a World	14.	Winners Versus Losers
	15.	Time and Karma
17. Today I Smiled	16.	A Dream a World
	17.	Today I Smiled

Editorial Note.....

Our college magazine 'ARCHA' is to be viewed as a launch pad for the students creative urges to blossom naturally. As the saying you, mind like parachute works best when opened. This humble initiative is to set the budding minds free, allowing them is roamfree in the realm of imagination and experince is create a world of beauty in words.

The enthusiasitic write-ups of our young writers are indubitably sufficient is hold the interest and admiration of the readers. This souvenir is indeed a pious attempt to make our budding talents give shape to their creativity and learn art of being aware because I believe that success depends upon our power is perceive, observe and explore. We are sure that the positive attitude, hard work, sunstained efforts and innovative ideas exhibited by our young buddies will surely stir the mind of the readers and take them to the surreal world of unalloyed joy and pleasure.

Dr. Shikha Phogat Staff Editor, English Section Asstt. Prof. of English



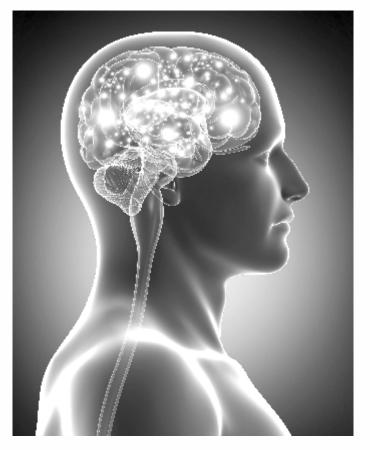
"All things are ready, if our mind be so!"

Savi Khera

Assistant Professor (English)

The great French chemist and microbiologist, Louis Pasteur, once remarked that, "Chance favours the prepared mind". It would not be an exaggeration to say that in today's dynamic world, change comes fast. To keep up with, and more importantly thrive, in such a fast-paced world, we need to be prepared with the necessary learning. This would come from a sustained effort into building the right skill set, either through academics or work or both. By learning not just through our own experience but also from the experiences and learning of people around, we can be better prepared for the uncertainty that is so much a trait of tomorrow.

The idea of preparedness holds valid not just for individuals but also for business entities. If a business does not adapt to market dynamics, then it suffers. Nokia is a case in point, it discounted the idea of the smartphone, dismissing it to be a fad. Today, it does not exist as an independent mobile market. On the other side of the spectrum of adaptability and learning is McDonald's corporation, the



American fast food giant. When it first entered India, it could barely make inroads into the multibillion rupee food restaurant market. The story of the roaring sucess of Mcdonald's holds an ominous lesson for all of us to succeed, one must not only adopt but also continuously learn.

A discussion on the leading social networking companies of the world inevitably brings to mind the name of facebook. What started as a dorm experiment to connect students on a local university campus has today become the world's biggest social networking site, with more than a billion users. It is not just that facebook connects long lost friends, the young and the old, it is also a multi-billion dollar business idea. Thus, all things are ready, if our mind be so.



Brain Drain

Veenu B.A.-III

According to UN definition, the flight of a talent that is required for a country is called brain drain. We have been experiencing this problem ever since we won out freedom. It was with great effort and high hopes that we set up our institutes of higher education. It is unfortunate that thousands of our doctors and engineers are leaving the country every year. More recently, the malady has affected the field of oil exploration, nuclear energy and agriculture also. A poor and developing country cannot afford this big brain drain.

A very high proportion of migrating engineers is of those trained in the five Indian Institutes of Technology Apparently, nearly 35% of engineering graduates from the IITs go abroad as soon as they get their degrees. The percentage is even higher in the key areas such as computer science, physics, aeronautics and operational research.

The main reason for this brain drain is that our man power planning has not kept pace with employment opportunities. We have a large pool of scientific and technical manpower that is waiting for respectable assignments. Several thousand engineering graduates are waiting for employment. Some feel that they are under-employed so they migrate to countries wherever they find better opportunities. It is also the grievance of some of them that they do not have adequate facilities and a congenial environment for work or research in this country.

In fact, the situation is no different in many other countries too. They are the victims of academic colonialism which is an aspect of today's neo-colonialism. The Government has every reason to feel concerned about this problem because the number of scientific and technical personnels leaving India has increased in recent years. Measures taken to persuade our scientific and technical man power to return have not yielded results.

Child Labour

Aarju B.Com. (H) Ist Year

Not all childrens in India are lucky to enjoy their childhood. Many of them are forced to work under inhuman conditions where their miseries know no end. Though there are laws banning child labour, still children contine to be exploited as cheap labour. It is because the authorities are unable to implement the laws meant to protect children from being engaged as labourers.

Unfortunately, the actual number of child laboures in India goes undetected children are forced to work in completely unregulated condition without adequate food, proper wages and rest. They are subjected to physical and emotional abuse.

Causes of Child Labour: In India factors such as poverty, lack of social security, the increasing gap between the rich and the poor have adversly affected children more than any other group. We have failed to provide universal education, which results in children dropping out of school and entering the labour force. Loss of jobs

of parents in slowdown, farmer's suicide, armed conflicts and high costs of healthcare are other factors contributing to child labour.

A widespread problem: Due to high poverty and poor schooling opportunity, child labour is quite prevalent in rural as well as urban areas. The 2001 census found an increase in the number of child labourers from 11.28 millions in 1991 to 12.59 million children comprise 40% of the labour in the precious stone cutting sector. They are also employed in other industrial activities such as mining, zaro and embroidery, dhabas, tea stalls and restaurants and in homes as domestic labour.

Conclusion :- Government authorities and civil society organisations need to work in tandem to free children engaged in labour under abysmal conditions. They need to be rescued from exploitative working conditions supported with adequate education. Above all, there is a need to mobilize public opinion with an aim to bring about an effective policy initiative to abolish child labour in all its forms.

Why God Made Teachers

Aashima Masih B.A.-I

When God created teacher,
He gave us special friends
To help us understand His world
And truly comprehend
The beauty and the wonder
Of everything we see
And become a better person
With each discovery.

When God created teacher,
He gave us special guides
To show us ways in which to grow
So we can all decide
How to live and how to do
What's right instead of wrong,
To lead us so that we can lead
And learn how to be strong.

Why God created teacher,
In His wisdom and His grace,
Was to help us learn to make our world
A better, wiser place.

Life

Aashima Masih

B.A.-I

She wrote a life she loved On the leaves of many books Documenting all the details So that one day she could look Back at all the things she'd done And all that she had seen, All the people she had known All the places she had been And there upon the paper Her treasures, line by line, Imbued with emotion Invoke moments in time. So although this was a story That only she could tell The ink left upon her pages said "My word. She lived it well."





Girls Education: - A lifeline to develoment

Priyanka

B.A.-III

Education is one of the most critical area of empowerment for women. Conferences affirmed it is also an area that offers some of the clearest example of discrimination women suffer. Among children not attending school there are twice as many girls as boys and among illitrate adults there are twice as many women as men.

Offering girls basic education is one sure way of giving them much greater power of enabling them to make genuine choices over the kinds of lives they wish to lead. This is not a luxury. The convention on the rights of the child and the convention on the elimination of all forms of discrimination against women establish it as a basic human right over recent decades there has certainly been significant progress in girls' education. Between 1970 and 1992 combined primary and secondary enrolment for girls in developing countries rose from 68% to 88% with particularly high rates in East Asia (83%) and Latin America (87%) but still there is long way to go.

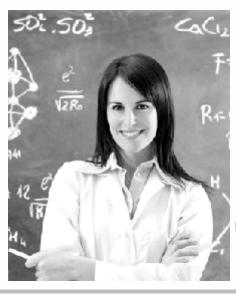
What would it take to improve girls' access to education?

- v Parental and Community involvement.
- V Low cost and flexibility.
- V Schools close to home with women teachers.
- V Preparation for school
- v Relevant curricula.



A Teacher's Poem

Sonia B.A. Ist



Every day you greet your students with a smile upon your face.

Though paperwork the night before seemed like a grueline race.

Money's not your motivation, it's the love for what you do.

You hear that special calling to which you always will stay true.

Your students are your dedication, devotion is to them.

To you each child is unique and special, a beautiful little gem.

Some days are just demanding and frustration takes its course.

Then you see those little faces, their inspiration is your force.

Each day you're in your classroom reminds you why you're there.

Making differences in children's lives with whom your heart you share.

There's a special pride in teachers, and a love for what you do.

And appreciation's always shared between those little lives and you!

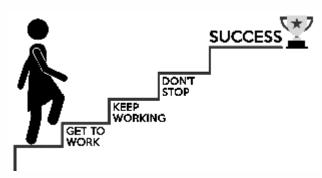


Success Begins in the Mind

Vaishali Nijhawan M.Com. (Final)

Success is characterized in various forms and also has many meanings depending on what one is seeking for in his/her life, relationship and career. To athletes, success can mean obtaining gold medal, to parents success can mean raising children with good moral values, to doctors success can mean saving a life and to some it can mean a job promotion or acquiring wealth. It actually depends on one's perspective of the life that one has understanding of success, its perception are as abundant as there are stars in the sky. One apparent thing about success is that every individual has to determine the true meaning of success in his/her own life. The ones who walk through life making an attempt to accomplish success through someone else's standards or through the standards of one's society will continuously be lacking of that successful feeling. The

modern dicitionary defines success as that certain measure or degree of achievement or accomplishment or as a desirable and favourable outcome. One should make a division on what one truly wants that can offer a desirable or favourable outcome that must be in each aspect of one's life. To accomplish success, one has to set realistic goals for his life, meaning goals that can be achieved.



The Magic of Optimism

Dolly Pathak M.Com. (Final)

The magic of being optimistic can lead you to greater heights. This has been optimistic fact that, "Law of Attraction" works. What we think comes into reality by the power of our belief. Optimistic approach towards our dreams and goals is the first step towards the stairs of success. The wizardly doesn't exist, all the magic and beauty lies within our thinking in the truth of what we believe in. Being optimistic keeps our spirits motivated and alive and ultimately helps us in resisting all the negativity and anxiety.

Our optimism helps in coping with the stressful & panic situation. All the positive people are found to be less stressed, less lonely and less depressed. They enjoy their own company really well. The psychological and physical strength of such person stays stable. If you stay positive and strong in difficult situations you'll end up achieving your goal and aspiration. Giving up is apparently worse than losing. The magic of optimism is always undefined and words fail to justify how needful it is to stay a positive thinker always. You hold the key to the door of success and happiness if you understand the potential of positive thinker.



Close-Ups

Payal B.A. Ist

When a thing takes hold of a whole lot of people idiom enters the language; its individual vocabulary begins to limber up the common speech. So the idiom of Active Photography has entered the English language at least wherever the English language is Americanized.

The Self-conscious valediction told not to "look into the camera." The reporter writing of a street murder term his description of the underlying cause a "Cutback" The editorial writer takes his daily "close-up" a phrase first given exact editorial writer how takes his daily-exact editortial application by the magazine - on Some Phase of the Europeon war. The vaudevillian refers to any actor with a family as author of Birth of a Nation.

Eric de Pamarter, the brilliant music critic of the Chicago Tribune, provides an ultimate tribute to the new lingo in scholary description of recent performances of the wagnerian "Ring" drams. He says: "First of all, let us eliminate the wagnerian mengerie Then let us bury all monologaes over twenty minutes in length. Having accomplished so much, we shall be in a position to film all of the "Ring's" Action on the length of one real."

Time is Money

Rakhee B.A. Ist Year

We cannot properly understand the life we are leading without assigning centrality to the concept of time, which invariably plays an extremely important role in our life. No one can deny the crucial role that time plays in our day to day life. All natural phenomena such as sunlight, sunrise, sunset, high tide, change of seasons etc. are totally dependent on time. Time is one of those words which everyone is familiar with but it is often hard to define. Time is a unique commodity that is available equally to everyone regardless of each one of us only has a finite allocation because it is something one cannot increase or decrease at will. No matter how clever, how

wealthy, how industrious you are, you still have only 24 hours or 1440 minutes or 86,400 seconds in each and every day, seven days in a week and 52 weeks in a year, no more or no less. Time is a unique resource which can never be saved; so it should be spent wisely. Time is money if we use it judiciously. There are costs which are closely linked with the passage of time. Time is also a measure of effort. Time lost is lost for ever and yet the easiest thing is to waste time. Since we cannot create more time, we must conserve the time alloted to us. We should make it a point not to waste it in any way. We all need to understand the importance of time. It could be the best investment we will ever make for ourselves.





I Wondered Lonely as a cloud

Shikha Ruhal

B.A.-I

I wondered lonely as a cloud

That floats on high o'er vales and hills,

When all at once I saw a crawd,

A host of golden daffodils;

Beside the lakes, beneath the trees,

Fluttering and dancing in the breeze.

Continious as the stars that shine

And twinkle on the milky way,

They stretched in never-ending line

Along the margin of a bay:

Ten Thousand saw I at a glance.

Tossing their heads in sprightly dance.

The waves beside them danced; but they

Out did the sparkling wave in glee:

A poet could not but be gay,

In such a jocund company;

I gazed-and gazed - but little though

What wealth the show to me had brought:

For oft, when on my couch I lie

In vacant or in pensive mood,

They flash upon that inward eye

Which is the bliss of solitude;

And then my heart with pleasure fills,

And dances with the daffodils.

%~%. €~~\$*

Valuable Things

Chanpreet Kaur, Surbhi M.Com. (Final)

Aspire to reach your potential

Believe in yourself

Create a good life

Dream for what you might become

Exercise frequently

Forgive honest mistakes

Glorify the creative spirit

Humour yourself and others

Imagine great things

Joyfully live each day

Kindly help others

Love one another

Meditate Daily

Nurture the environment

Organize for hormonious actions

Praise performance well done

Question most things

Regulate your own behaviour

Smile often

Think rationally

Understand yourself

Value the life

Work for the common good

X-ray and examine problems

Yield to commitment, get success

Zestfully pursue happiness.





The Journey of Mother

Sonia

B.A. Ist Year

A mother is more than a memory. She is a living presence.

Your mother is always with you.

She's the whisper of the leaves as you walk down the street.

She's the smell of certain foods you remember,

Perfume that she wear,

She's the cool hand on your brow when you're not feeling well,

She's your breath in the air on a cold winter's day.

She is the sound of the rain that lulls you to sleep, the colors of a rainbow.

She is Christmas morning.

Your Mother lives inside your laughter.

And she's crystallized in every tear drop. A mother shows every emotion.... happiness, sadness, fear, jealousy, love, hate, anger, helplessness, excitement, joy, sorwoue...

and all the while, hoping and praying you will only know the good fellings in life.

She's the place you came from, your first home, and She's the map you follow with every step you take.

She's your first love, your first friend, even your first enem but nothing on earth can separate you.

Not time, Not space..... not even death!

Don't Quit

Ria

B.A.-I

When things go wrong, as they sometimes will,
When the roads you're trudging seem all uphill,
When the funds are low and debts are high,
and you want to smile but you have to high sigh,
When care is pressing you down quite a bit,
Rest if you must, but don't quit,
Success is just failure turned inside out,
The silver tint of the clouds of doubt,
And you never can tell how close you are,
It may be near when it seems so far.
So stick to the fight when you're hardest hit,

It's when things seems worst that you must not quit.

Good Things

Ria

B.A.-I

I once heard an old man say,

Shaping vases out of clay into subtle forms sublime.

"Listen, son, good things take time"

All my life I've thought of this when a task was lacking

bliss, when your work seemed awfully tough

And I thought I'd had enough

So I'd give a little more

To what sometimes seemed a chore;

And, you know, without a doubt,

Good Things always came about.



Women's Empowerment

Abhishek Chawla BBA IInd Year (IVth SEM)

Women Empowerment has become a significant topic of discussion in our society. It can also point to the approaches regarding other trivialized genders in a particular political or social context. Women Empowerment refers to the ability of women to enjoy their right to control or benefit from resources, assets, income or their own time, as well as the ability to mange risk or improve their economic status as well being.

Barriers: Many of the barriers to women empowerment at equity lie ingrained in cultural norms.

- 1. Societal Norms: Though the belief of traditional families in the very first barrier.
- 2. Sexual Harassment: Sexual Harassment in particular is a large barrier for women in work place.

According to International Labour Organisation (ILO), sexual harassment is a clear form of gender discrimination based on sex. Recent studies also show that women face more barriers in the workplace than men do.

Take Time

Life is Precious

Rakhee

Ria

B.A.-Ist Year

B.A.-I

Take time to 'think'.

It is the source of power.

Take time to 'read'.

It is the foundation of wisdom.

Take time to 'play'.

It is the secret to stay young.

Take time to be 'quiet'.

It is the opportunity to seek God.

Take time to 'Love'.

It is God's greatest gift.

Take time to 'work'.

It is the price of success.

Take time to 'Pray'.

It is the power of earth.

There is the time for everything.

Life is an opportunity, benefit from it

Life is beauty, admire it.

Life is a dream, realize it.

Life is a challenge, meet it.

Life is a duty, complete it.

Life is a game, play it.

Life is a promise, fullfill it.

Life is a song, sing it.

Life is a struggle, accept it.

Life is a tragedy, confront it.

Life is an adventure, dare it.

Life is luck, make it.

Life is too precious, do not destroy it.

Life is life, fight for it.



Commerce Section

"Most of what we call Management consists of making it difficult for people to work."

-Peter Drucker



Staff Editor Dr. Neelam Maggu

CONTENTS

Sr. No. **Title** Consumer Protection in India 1. 2. Time Management 3. **Cashless Transaction** 4. Skill Management 5. Love as in Commerce Impacrt of Demonetization on Indian Society / Economy 6. 7. Balance Sheet of Life 8. Demonetization Importance of Commerce 9. 10. Cashless India Voice of My Heart 11. Digital India 12. 13. Demonetization in India 14. Digital India "Arise! Awake
And stop not
Till the goal is reached."
Swami Vivekanand

Editorial Note.....

Dear Students,

A dream doesn't become reality through magic, it takes sweat, determination and hard work. Hard work is the key to success. To be a better person in life and to get success you have to work hard, the result of hard work is always rewarding, so you have to work hard. Hard work never goes wasted. Never be afraid of failures. Failures leads to success, work is a privilege and a pleasure, the idleness is a luxury that no one can afford. Man is born to work and prosper in life.

Dr. Neelam MagguAsso. Prof. in Commerce



डिजिटल इंडिया

अनीता

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

डिजिटल इंडिया के रूप में, एक महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम का आरंभ दिल्ली के इंदिरा गाँधी इनडोर स्टेडियम में 1 जुलाई (बुधवार) 2015 को हुआ था। इसकी शुरूआत विभिन्न प्रमुख उद्योगपितयों (टाटा समूह के अध्यक्ष साइरस मिस्त्री, आरआईएल अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी, विप्रो अध्यक्ष अजीत प्रेमजी आदि) की मौजूदगी में हुई। सम्मेलन में, गाँव से शहर तक की भारत की बड़ी संख्या में डिजिटल क्रांति लाने के लिए अपने विचार को इन लोगों ने सांझा किया। देश में 600 जिलों तक पहुँच के लिए सूचना तकनीक कंपनी की मौजूदगी में कई कार्यक्रम रखे गये। देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए भारतीय सरकार द्वारा लिया गया एक बड़ा कदम है डिजिटल इंडिया कार्यक्रम। इस योजना से संबंधित विभिन्न स्कीमों को अनावरित किया जा चुका है। (एक लाख करोड़ से ज्यादा की कीमत) जैसे डिजिटल लॉकर, ई-स्वास्थ्य, ई-शिक्षा, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल, ई-हस्ताक्षर आदि।

इस मुहिम का लक्ष्य कागजी कार्यवाही को घटाने के द्वारा भारतीय नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक सरकार की सेवा उपलब्ध कराने की है। ये बहुत ही प्रभावशाली और कार्यकुशल है जो बड़े स्तर पर समय और मानव श्रम की बचत करेगा। किसी भी जरूरी सूचना तक पहुँच के लिये तेज गित इंटरनेट नेटवर्क के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों से जुड़ने के लिए 1 जुलाई 2015 को इस पहल की शुरूआत की गयी थी।

पूरे देश भर में डिजिटल संरचना का निर्माण, डिजिटल साक्षरता, डिजिटल तरीकों से सेवा प्रदान करना जैसे डिजिटल इंडिया के तीन महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। 2019 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने का लक्ष्य है। ये एक कार्यक्रम है जो सेवा प्रदाता और उपभोक्ता दोनों को फायदा पहुँचायेगा। इस कार्यक्रम की निगरानी और नियंत्रण करने के लिए डिजिटल इंडिया सलाहकार समूह (संचार एवं आईटी मंत्रालय के द्वारा संचालन) की व्यवस्था है। अगर ये अच्छे से लागू हुआ तो भारत के लिये ये एक सुनहरे अवसर के समान होगा। इस प्रोजेक्ट के लोकार्पण के बेहद शुरूआत में ही लगभग 2,50,000 गाँवों और देश के दूसरे आवासीय इलाकों में तेज गित के इंटरनेट कनेक्शन को उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार के द्वारा एक योजना बनायी गयी थी। इस प्रोजेक्ट में ''भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड'' द्वारा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गयी जो वाकई सराहनीय है।

मुख्य कंपनियों (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) के निवेश के साथ 2019 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने की योजना है। डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट में लगभग 2.5 लाख करोड़ के निवेश के लिये अंबानी के द्वारा घोषणा की गई है।



खुशी गम के अकाउंट

दीपिका

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

काश ! खुशी और गम के, इनके भी होते बैंक अकाउंट।। ऐसा चाइल्ड प्लान होता इनमें, पुरखों की खुशियाँ जिसमें हो जाती काउंट।। इन्श्योरेंस होता खुशियों का भी, गम के लिए होता एक चेंजिंग प्लान ।। हर खुशी में बदल लेते गम को भी, फिर हर बुढ़ापा लगता जवान।। जब कभी ज्यादा गम सताने लगता, थोड़ी खुशियाँ ले लेते उधार ।। काश अगर ऐसा होने लगता, फिर खुशियाँ ही सोना लगने लगता।। काश ! दुखियों के दु:ख मिट जाते, खुशियों के सब आँचल लहराते।। सब के चेहरे पर होती मुस्कान, काश ! हँसते-हँसते मरते इंसान ।।

जी एस टी

संगीत

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

अब है नया टैक्स आया,
जी एस टी है जो कहलाया।
वैट, सेल्स टैक्स सब निपटाया,
अकेले जी एस टी ने बवाल मचाया।
कुछ हुआ सस्ता,
कुछ हुआ मंहगा,
हिसाब लगाते सर चकराया।
आया भाई आया,
जी एस टी आया।
आशा है नए टैक्स से
जीवन होगा कुछ आसान।
खूब बढ़ेगा, समृद्ध बनेगा,
मेरा भारत देश महान।।

Consumer Protection

Rupali Chawla BBA IInd Year (IVth SEM)

The issues relating to "Consumer" Welfare effects the entire 1.17 billion people since everyone is a consumer in one way or the other. Ensuring consumer welfare is the responsibility of the Govt. Accepting this, Policies have been framed and the Consumer Protection Act, 1986, was introduced. A separate department of consumer affairs was also created in the central and state Govt. to exclusively focus on ensuring the rights of consumers as enshrined in the act. This Act has been regarded as the most progressive, comprehensive and unique piece of legislation. In the last international conference of consumer protection held in "Malaysia" in 1997, the indian consumer protection act was described as one "which has set in motion a revolution in the fields of consumer rights, the parallel of which has not been seen anywhere else in the world."



प्रधानमंत्री जन-धन योजना

अनु बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

प्रधानमंत्री जन-धन योजना (PMJDY) भारत में वित्तीय समावेशन पर राष्ट्रीय मिशन है और जिसका उद्धेश्य देश भर में सभी परिवारों को बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराना और हर परिवार का बैंक खाता खोलना है। इस योजना की घोषणा 15 अगस्त 2014 को तथा इसका शुभारंभ 28 अगस्त 2014 को भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया। इस परियोजना की औपचारिक शुरूआत से पहले प्रधानमंत्री ने सभी बैंकों को ई-मेल भेजा जिसमें उन्होंने 'हर परिवार के लिए बैंक खाता' को एक 'राष्ट्रीय प्राथमिकता' घोषित किया और सात करोड से भी अधिक परिवारों को इस योजना में प्रवेश देने और उनका खाता खोलने के लिए सभी बैंकों को कमर कसने को कहा। योजना के उद्धघाटन के दिन ही 1.5 करोड बैंक खाते खोले गए। प्रधानमंत्री के द्वारा शुरू की गयी ये योजना गरीब लोगों को पैसा बचाने में सक्षम बनाती है। यहाँ रहने वाले लोगों को स्वतंत्र बनाना ही सही मायने में एक स्वतंत्र भारत बनाना है। भारत एक ऐसा देश है जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की पिछड़ेपन की स्थिति के कारण अभी भी एक विकासशील देशों में गिना जाता है। अनुचित शिक्षा, असमानता, सामाजिक भेदभाव और बहुत सारी सामाजिक मुद्दों की वजह से भारत में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की दर उच्च है। ये बहुत जरूरी है कि पैसा बचाने की आदत के बारे में लोगों के बीच जागरूकता बढ़े जिससे भविष्य में कुछ बेहतर करने के लिए वो स्वतंत्र हो और उनके भीतर कुछ विश्वास बढ़े। बचत किये गये पैसों की मदद से वो बुरे दिनों में बिना किसी के सहारे अपनी मदद कर सकते हैं। जब हर एक भारतीय के पास अपना बैंक खाता होगा तब वो पैसों की बचत के महत्त्व को ज्यादा अच्छे से समझ सकेंगे। इस योजना को एक सफल योजना बनाने के लिए बहुत सारे कार्यक्रमों को लागु किया गया है। बैंक खातों के महत्व के बारे में जागरूक बनाने के साथ ही बैंक खाता खोलने के फायदे और प्रक्रिया के बारे में उनको समझाने और लोगों के दिमाग को इस ओर खींचने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 60 हजार नामांकन कैंप लगाये गये। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत बैंक खाता खुलवाने पर एक लाख रूपये के दुर्घटना बीमा की सुविधा दी गयी है, लेकिन इस दुर्घटना बीमा का लाभ उन्हीं खातधारकों को मिलेगा, जो बीच-बीच में खाते से निकासी करते रहेंगे और यह निकासी रूपये कार्ड के जिरये होनी चाहिए। बैंक अधिकारियों का कहना है कि दुर्घटना में मौत होने के पिछले 45 दिनों में रूपये कार्ड के जरिये खाते से निकासी होने पर ही दुर्घटना बीमा का लाभ मिलेगा। लेकिन, समस्या है कि इस योजना के तहत खोले गये अधिकतर खातों में शून्य बैलेंस है ऐसे में इन खातों से कोई लेन-देन नहीं किया गया है। 28 अगस्त, 2014 को देश के सभी जिलों में एक साथ इस योजना को लांच किया गया था। सूचना के अधिकार के तहत उपलब्ध करायी गयी जानकारी के अनुसार, सात नवंबर तक इस योजना के तहत देश भर में 7.1 करोड़ बैंक खाते खोले गये हैं। इनमें से 5.3 करोड़ बैंक खातों में शून्य बैलेंस था लेकिन 15 नवंबर तक बिहार में 45,82,000 खाता खोले गये है, लेकिन बैंक जानकारों की मानें तो इनमें लगभग 34,36,500 लोगों ने खाते से एक बार भी लेन-देन नहीं किया है। राज्य में प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत उन्हीं लोगों के बैंक खाते खुल रहे हैं जो खुद बैंकों तक आ रहे हैं, जबिक बैंकों को गाँव-गाँव में कैंप लगा कर खाता खोलना था लेकिन कुछ को छोडकर अन्य कोई बैंक गाँव में जाकर कैंप नहीं लगा रहे थे। प्रधानमंत्री जन-धन योजना केवल बैंक खाते खोलने तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि यह मूलभूत वित्तीय सेवाओं और गरीबों को सुरक्षा उपलब्ध कराते हुये उन्मूलन का महत्वपूर्ण साधन बन गई है। राष्ट्रपति ने कहा, 'आज मैं यह गर्व के साथ कह सकता हूँ कि यह दुनिया का सफलतम वित्तीय समावेशी कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत खोले गए 21 करोड़ से भी अधिक खातों में से 15 करोड़ खाते चालु हालत में है, जिनमें कुल मिलाकर 32 हजार करोड रूपये जमा हैं।



Goods and Services Tax (GST)

Sonam Wadhwa

B.Com IInd

GST also known as the Goods and Services Tax is defined as the giant indirect tax structure designed to support and enhance the economic growth of a country. More than 150 countries have implemented GST so far. However, the idea of GST in India was mooted by Vajpayee governement in 2000 and the constitutional amendment for the same was passed by the Lok Sabha on 6th May 2015 but is yet to be ratified by the Rajya Sabha. However there is a huge hue and cry against its implementation. It would be interesting to understand why this proposed GST regime may hamper the growth and development of the country.

The Goods & Service Tax (GST) is a vast concept that simplifies the giant tax structure by supporting & enhancing the economic growth of a country. GST is a comprehensive tax levy on manufacturing, sale and consumption of goods and services at a national level. The Goods & Services Tax Bill or GST Bill also referred to as the constitution (One Hundred and Twenty Second Amendment) Bill, 2014 initiates a value added tax to be implemented on a national level in India. GST will be an indirect tax at all the stages of production to bring about uniformity in the system.

On bringing GST into practice, there would be amalgamation of Central and State taxes into single tax payment. It would also enhance the position of India in both, domestic as well as international market. At the consumer level, GST would reduce the overall tax burden, which is currently estimated at 25-30%.

Under this system, the consumer pays the final tax but an efficient input tax credit system ensure that there is no cascading of taxes-tax on tax paid on inputs that go into manufacture of goods.

In order to avoid the payment of multiple taxes such as excise duty and service tax at central level and VAT at the state level, GST would unify these taxes and create a uniform market throughout the country. Integration of various taxes into a GST system will bring about an effective cross utilization of credits. The current system taxes production, whereas the GST will aim to tax consumption.

The Benefits of GST as Under:-

- V If would introduce two-tiered one-country-one-tax regime.
- V It would subsume all indirect taxes at the center and the state level.
- V It would not only widen the tax regime by covering goods & services but also make it transparent.
- V It would free the manufacturing sector from cascading effect of taxes, thus by improve the cost-competitiveness of goods & services.
- V It would bring down the prices of goods and services and thus by increase consumption.
- V It would create business-friendly environment, thus by increase tax-GDP ratio.
- V It would enhance the ease of doing business of India. GST was implemented from 1 April, 2017.

GST SLABS

5% Slab	12% Slab
Cooking oils, Cashew nuts, Tea,	Medicines, Cottons, Dresses, Cycles, Restaurant
Coofee, Food Grains	Turnover below 1.5 crore etc.
18% Slab	28% Slab
Fertilizers, Computers, Computers Spare Items,	Motor Cars, Ac's, Tv's, Washing Machines, Fridge,
Iron, Phones, Steel, Readymades other cottons etc.	Electric Items, Cosmetics & Cold Drinks etc.



E-Commerce

Sonam B.Com IIIrd

E-Commerce (Electronic Commerce) is the buying and selling of goods and services, or the transmitting of funds or data, over an electronic network, primarily the internet. These Business transaction occur either as business to business, business to consumer, consumer to consumer or consumer to business. The terms e-commerce and e-business are often used interchangeably. The term e-tail is also sometimes used in reference to transactional processes for online shopping.

E-Commerce Applications :- E-commerce is conducted using a variety of applications such as email online catalogs and shopping carts, EDI, File transfer Protocol and web services. This include business to business activities and outreach such as using email for unsolicited ads to consumers and other business prospects, as

well as to send out e-newsletters to subscribes. More companies now try to entice consumer directly online, using tools such as digital coupons, social media marketing and targeted advertisements.

The benefits of e-commerce include its around the clock availability, the speed of access the wide availability of goods and services for the consumers easy and international reach Its perceived downsides include sometimes-limited customer service, consumer not being able to see or touch a product prior to purchase and necessitated wait time for product shipping.



Government Regulations for e-commerce :- In the United States, the Federal Trade Commission (FIC) and the Payment Card Industry (PCI) Security Standards Council are among the primary agencies to regulate e-commerce activities. The FTC monitors activities such as online advertisement content marketing and customer privacy, while the PCI council develops standards and rules including PCI - PSS compliance that outlines procedures for proper handling and storage of consumers financial data.

Make in India

Javi B.Com IInd

Introduction: - Make in India scheme is an initiative to facilitate and augment the manufacturing industry in



India. In other words, it can also be said that this program is intended to increase the GDP of Indian economy. This scheme was launched by Bhartiya Janta Party government under the leadership of visionary Prime Minister Narender Modi in very same year of 2014, to which they come into majority. Besides promoting manufacturing and employment sector in the country it has set various wide

array of targets which are meant to change the entire economy of the country positively.

Make in India Program: This program is a great dream of most visionary and influential Prime Minister of India, Mr. Narendra Damodar Modi, who intiated this economic reform-oriented program on 25th September 2014 in a way to improve the employment and manufacturing industry in India. This program has a wide scope associated with different sectors of economic environment of the country. This program is specifically designed to promote the enlisted or targeted, 25 various sectors which were badly in need of such reforms. In the way of make this program designed in more wise and appropriate way, it was entrusted to wieden and Kennedy which is a foremost marketing firm, known for their earlier project work for Nike. It is intended and approved to facilitate the foreign direct investment and domestic companies in manufacturing their products in the Indian vicinity.

This program is destined to facilitate foreign direct investment and convincing Indian and foreign companies to produce their goods in India. It is estimated that such facility of producing goods would increase demand for employment in various sectors and would lead to employment conditions. This program is competent in attracting foreign currency to be invested in the Indian industrial sectors. It would create a demand of skilled people in specific sectors which would also create a requirement to train people in various sectors and skills to satisfy the demand of such industrial requirements.

Sukanya Samriddhi Yojana

Varsha

B.Com (Voc.) II

This is the one of the most recent schemes launched by the government of India. The scheme-Sukanya Samriddhi Yojana (SSY), also called as Sukanya Samriddhi Scheme (SSS), was launched in January 2015.

An SSY account can be opened only by the parent or guardian of in the name of the girl child not more than 10 years old. An SSY account can be opened in any post office or designated branches of PSU banks. A parent can open only one account per girl child and for a maximum of two daughters. The natural and legal guardian of the girl child shall be allowed to open third account in the event of birth of twin girls as second birth.

The minimum investment is Rs. 1,000 and the maximum investment in a financial year is Rs. 1.5 Lakhs and deposits can be made for 14 years after opening the account. Also the combined investment in the two accounts cannot exceed Rs. 1.5 Lakh a year, on the same pattern as PPF. The account matures when the girl turns 21, though up to 50% of the corpus can be withdrawn after she is 18 or gets married. If account is not closed after maturity, the balance will continue to earn interest as specified for the scheme from time to time. To meet the requirement of higher education expenses, partial withdrawal of 50 percent of the balance would

To meet the requirement of higher education expenses, partial withdrawal of 50 percent of the balance would be allowed after the girl child has attended 18 years of age.

Salient Features of Sukanya Samriddhi Account.

- 1. Account can be opened in the name of a girl child till she attains the age of 10 years.
- 2. Only one account can be opened in the name of a girl child.
- 3. Account can be opened in Post offices and notified branches of commercial banks.
- 4. Birth certificate of the girl child in whose name the account is opened must be submitted.
- 5. Account can be opened with a minimum of Rs. 1000/- and thereafter any amount in multiple of Rs.

- 100/- can be deposited. A minimum Rs. 1000/- must be deposited in a financial year.
- 6. Interest as may be notified by the government from time to time will be calculated on yearly compounded basis and credited to the account.
- 7. Maximum Rs. 1,50,000/- can be deposited in a financial year.
- 8. One withdrawal shall be allowed on attaining the age of 18 years of account holder to meet education / marriage expenses at the rate of 50% of the balance at the credit of preceding financial year.
- 9. The account can be transferred anywhere in India from one post office / bank to another.
- 10. The account shall mature on completion of 21 years from the date of opening of account.

Sukanya Samriddhi Account Interest Rate:-

The Sukanya Samriddhi Account scheme was launched with an initial interest rate of 9.10% p.a. compounded annually. This has been increased to 9.20% p.a. for the current fiscal 2015-16. Sukanya Samriddhi Yojana interest rate is revised on a yearly basis and hence for FY 2016-17 it has been revised 8.6%.

The current rate of interest being offered by the government of 8.4% per annum.

Sukanya Samriddhi Scheme is 100% tax free:-

Tax benefit under section 80C of the Income Tax Act are applicable on deposits made towards Sukanya Samriddhi scheme. However, like all deductions under section 80C, the maximum limit for tax deductible amount for SSY too is Rs 1,50,000 per year. Any amount deposited over the above this figure does not attract any tax rebate.

Sukanya Samriddhi Account Interest calculation if you invest Rs. 100/- month:-

If someone invest Rs. 100 on monthly basic, means Rs. 1200 every year. Then after 14 years the accumulated amount will be Rs. 32,999. Now from 15th year award this amount will grow further after getting compounding interest. After 21 years, it will be Rs 60,713. That means almost double in 7 years.

Documents required to open Sukanya Samriddhi Account:-

A fixed set of documents are required in order to open a Sukanya Samriddhi Account. These documents need to be submitted to either bank or post office. Along with these documents, a duly filled application form also needs to be submitted. The list of required documents is mentioned below:-

- 1. Sukanya Samriddhi Account opening Form
- 2. Birth Certificate of girl child
- 3. Identity proof of depositor (parent or guardian)
- 4. PAN Card, Ration Card, Driving License, Passport
- 5. Address proof of depositor (parent or guardian)

SSY Closure an Maturity Rules 2016:-

- 1. The account shall mature on completion of a period of twenty-one year from the date of its opening.
- 2. On maturity, the balance including interest outstanding in the account shall be payable to the account holder for closer of the account and on furnishing documentary proof of her identity, residence and citizenship.
- 3. Not interest shall be payable once the account completes twenty-one years from the date of its opening.



नोटबंदी का महिलाओं पर असर

काजल

बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

8 नवम्बर 2016 को भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण फैसला लिया गया। इस फैसले के अनुसार 500 और 1000 के नोटों का विमुद्रीकरण किया गया। इस निर्णय का प्रभाव लगभग देश के सभी वर्गों पर देखने को मिला। चाहे पुरूष हो या महिला, वृद्ध व्यक्ति हो या युवा – कोई भी नोटबंदी के प्रभाव से नहीं बचा। लेकिन नोटबंदी का महिलाओं पर असर सबसे ज्यादा देखने को मिला।

हमारे देश में कामकाजी महिलाओं पर भी नोटबंदी का असर देखने को मिला। हमारे देश में महिलाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग मजदूरी करता है। उन्हें अपनी मजदूरी दिन-प्रतिदिन के हिसाब से मिलती है। लेकिन जब नोटबंदी हुई तो उन्हें अपनी मजदूरी मिलने में काफी मुश्किलों हुईं थीं फिर यह कहें उन्हें अपने दिन-प्रतिदिन के व्यवसायों से हाथ धोना पड़ा। जहाँ तक बात उन महिलाओं की है, जिन्हें मासिक वेतन मिलता है, उन्हें या तो वेतन मिला ही नहीं और यदि मिला तो पुराने नोट वेतन के रूप में दे दिए गए। उनके भोले स्वभाव का लाभ उठाकर 500 और 1000 के नोट वेतन के रूप में दिए गए ताकि उनके मालिक अपने काले धन से पल्ला झाड़ सकें। उन्हें न केवल अपने व्यवसायों पर ध्यान देना था बिल्क अपनी पुरानी धनराशि को बदलवाने के लिए लाइनों में भी खड़ा होना पड़ा।

हम सभी को एक बात अवश्य पता है कि हमारे देश में महिलाओं की स्थिति पुरूषों की तुलना में बहुत अच्छी नहीं है। महिलाओं की साक्षरता दर पुरूषों के मुकाबले बहुत कम है। हमारे देश में 80 प्रतिशत महिलायें ऐसी हैं। जिन्हें बैंको के बारे में कोई भी जानकारी प्राप्त नहीं है। ऐसी महिलाओं को जिन्हें बैंकों में जाकर अपने रूपये बदलवाने के लिए फार्म तक भरने नहीं आते है, नोटबंदी की स्थिति में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्हें फार्म भरवाने के लिए अपने आस–पास के लोगों की सहायता लेनी पड़ी। ज़्यादातर महिलाओं के तो बैंकों में खाते ही नहीं होते है। उन्हें बैंकों में खाता खुलवाना एक बहुत ही बड़ी सिरदर्दी सा लगता है। इसिलए जब नोटबंदी हुई तो उन्हें अपने खातों को लेकर काफी परेशानियाँ हुई है।

इस प्रकार विमुद्रीकरण ने ग्रामीण महिलाओं पर भी अपनी ऐसी छाप छोड़ दी है। जिससे ग्रामीण महिलाएँ नोटबंदी से बहुत हद तक प्रभावित हुई है। ज्यादातर ग्रामीण स्तर पर तो बैंक ही नहीं होते हैं। उन्हें केवल अपनी सामान्य पेंशन के लिए ही एक गाँव से दूसरे गाँव में जाना पड़ता है। और जब बात नोटबंदी की आई तो, गाँव से शहर तक आना पड़ा। गाँव की अधिकांश महिलाएँ निरक्षर है। उन्हें अपना नाम भी सही रूप से लिखना नहीं आता तो वे बैंकों के फार्म कैसे भरेगी?

ये बात तो शायद सरकार ने सोची ही नहीं होगी। गाँव से शहर में आना और फिर अपने पुराने नोट बदलवाने के लिए लाइनों में खड़े रहना और फिर अंत में नोट न मिलने की स्थिति में खाली हाथ घर लौटकर चले जाना। इन सब चीजों ने उनके शारीरिक रूप के साथ-साथ मानसिक रूप से भी प्रभावित किया है। इन सबका प्रभाव उनके स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके स्वभाव में भी झलकने लगा।

हमारे देश की लगभग सभी वर्गों की महिलाओं को लाइनों में खड़ा पाया। अमीर हो या गरीब, वृद्ध हो या युवा-सभी बैंकों की लाइनों में खड़ी रही। स्वस्थ हो या अस्वस्थ सभी 2-2 हजार रूपये के लिए पूरे-पूरे दिन बैंकों में खड़ी रही। बहुत सी बहन-बेटियों की विवाह संबंधी समस्याएँ भी नोटबंदी के समय देखने को मिली। बहुत-सी लड़िकयों की तो शादियाँ भी टूट गई थी। हमने यह भी देखा कि हमारे देश की न जाने कितनी महिलाएँ ऐसी थीं जिन्होंने अपनी बेटियों के विवाह के लिए सरकार से और बैंकों से थोड़ी-सी राशि की माँग की लेकिन सरकार ने उनकी एक भी नहीं सुनी। पूरा दिन लाइनों में खड़ा रहने के कारण उनकी सेहत पर भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। शायद शारीरिक कष्ट से तो महिलाएँ एक न एक दिन उबर जाएँगी लेकिन जो दु:ख विवाह टूटने का है या फिर किसी की मृत्यु का है तो इससे उनके मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

घरेलू महिलाएँ भी नोटबंदी के प्रभाव से नहीं बची है। केवल अपने घरों में रहते हुए भी उन्हें रूपयों की किल्लत देखने को मिली। घर को सुचारू रूप से चलाने के लिए या फिर अपनी आवश्यकता की वस्तुओं के लिए उन्हें पैसों की कमी महसूस हुई। घर को सुचारू रूप से चलाने के लिए भी पैसों की आवश्यकता होती है। इतना ही नहीं, घरों में रहने वाली महिलाएँ बचत में ज्यादा विश्वास रखती है वे अपने घर-खर्चे से बचाए हुए पैसों की बैंकों में जमा करवाने से ज्यादा बेहतर अपने पास बचत के रूप में रखना सही समझती हैं तािक ज़रूरत के समय उपयोग में लाया जा सके। परन्तु नोटबंदी के समय उनके द्वारा जोड़ी हुई बचत का कोई मोल नहीं रहा। नोटबंदी से महिलाओं ने यह सीखा है कि ज्यादा बचत नहीं करनी चाहिए। सरकार किसी भी समय कोई भी परिवर्तन कर सकती है और यदि महिलाओं को बचत करनी है तो उन्हें बेंकों में अपनी राशि जमा करवानी चाहिए। महिलाएँ जिस प्रकार देश के अन्य कार्यों में भाग लेती है, उसी प्रकार से नोटबंदी में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया और सरकार को अपना पूरा सहयोग एवं समर्थन भी दिया है। एक हद तक उनमें बैंकों के प्रति जागरूकता फैली है। और उन्होंने अपने घरों से बाहर निकलकर अपने देश के प्रति एवं बैंकों के प्रति जागरूकता फैली है। और उन्होंने अपने घरों से बाहर निकलकर अपने देश के प्रति एवं बैंकों के प्रति जागरूकता फैली है। और उन्होंने अपने घरों से बाहर निकलकर अपने देश के प्रति एवं बैंकों के प्रति जागरूकता फैली है। और उन्होंने अपने घरों से बाहर निकलकर अपने देश के प्रति एवं बैंकों के प्रति जागरूकता फिली है। और उन्होंने अपने घरों से बाहर निकलकर अपने देश के प्रति एवं बैंकों के प्रति जागरूकता फैली है। और उन्होंने अपने चरों से बाहर निकलकर अपने देश के प्रति एवं बैंकों के प्रति जागरूकता फैली है। उत्होंने के समस्याएँ उन्हों नोटबंदी के समय हुई, उनके बावजूद भी उन्होंने अपनी जिम्मेदारी समझी। उन्होंने बेहतर कल की तरफ अपना पहला कदम बढ़ाया। अपने विकास की ओर अग्रसर हुई और इसके साथ-साथ आत्मिर्गर होने का एक प्रमाण प्रस्तुत किया जो उनके आने वाले भविष्य के लिए एक अच्छा संकेत है।

Digitalisation in Banking Sector

नैना य वर्ष

बी.कॉम. तृतीय वर्ष

1 जुलाई 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर भारत के गांवों और शहरों में डिजिटल क्रान्ति लाने के लिए डिजिटल इंडिया मिशन की शुरूआत की गई थी। ये बहुत ही प्रभावशाली और कार्यकुशल कार्यक्रम है। जो वास्तव में देश की वृद्धि और विकास को सुनिश्चित करेगा। बैंकिंग क्षेत्र में इस कार्यक्रम का प्रभाव देखा गया है।

डिजिटल बैंकिंग ऑनलाइन बैंकिंग के लिए ऐसा कदम है जहाँ बैंकिंग सेवाएं इंटरनेट पर वितरित की जाती हैं। बैंक, ग्राहकों के लाभ के लिए अधिक सुविधाजनक और तेज़ी से बैंकिंग सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं।

अब अपनी जेब और पर्स में भर-भर के नोट डालने का जमाना चला गया। नोटों को छोड़िए और कॉर्डस, इंटरनेट और ई-वॉलेटस पर आ जाइए। अब कैश नहीं, बिना कैश के जिंदगी जीना सीखिए। देश डिजिटल क्रांति के रास्ते पर चल पड़ा है तो आप कैसे पीछे रह सकते हैं। डिजिटल बैंकिंग के फायदे पर जानकारों का कहना है कि डिजिटल इंडिया के लिए करेंसी का डिजिटलाइज्ड़ होना जरूरी है। नोट की जगह डिजिटल करेंसी में लेन-देन करना आसान होता है। बदलते वक्त के साथ बैंकिंग भी बदल रही है। अब आम आदमी भी *999# के ज़िरए सस्ते मोबाइल से भी डिजीटल बैंकिंग कर सकता है। डिजिटल बैंकिंग के ज़िरए अब 24/7 बैंकिंग ट्रांजैक्शन मुमिकन है। ट्रांजैक्शन के लिए अब घंटों लाइन में खड़ा रहना जरूरी नहीं है।

बैंक सेविंग अकाउंट होल्डर को डेबिट कार्ड देती है, डेबिट कार्ड से एटीएम से पैसा निकाल कर दुकानों पर भुगतान करने के साथ-साथ ऑनलाइन पेमेंट भी संभव है। डेबिट कार्ड चैक-बुक की तर्ज़ पर काम करता है। डेबिट कार्ड से किसी दूसरे अकाउंट में पैसा ट्रांसफर करना भी मुमिकन है।

डेबिट कार्ड में नंबरों की अहमियत होती है। डेबिट कार्ड इस्तेमाल करने के लिए 3 नम्बर ज़रूरी होते हैं। ये हैं – डेबिट कार्ड, सीवीवी और पिन नंबर। इनके बिना कोई ट्रांजैक्शन संभव नहीं होती। कार्ड नंबर में खाताधारक की सारी जानकारी छिपी होती है। वहीं पिन नंबर भी गुप्त नंबर होता है जो पिन नंबर धारक याद रखता है। पिन नंबर किसी को बताना नहीं चाहिए। पिन नंबर प्राय: ताले की चाबी की भांति काम करता है। जबिक सीवीवी नंबर कार्ड के पिछले हिस्से पर छपा होता है।

कार्ड इस्तेमाल में कुछ एहितयात बरतने की भी ज़रूरत होती है। कार्ड से भुगतान प्राय: उपभोक्ता अपने कार्ड से भुगतान अपने सामने ही करे। स्केनर डिवाइस से कार्ड की क्लोनिंग होने का खतरा रहता है। कार्ड को खुद ही स्वाइप करवाना चाहिए। कार्ड स्वाइप करते समय पिन नंबर डालना भी ज़रूरी होता है। भुगतान के वक्त अपना पिन नंबर भी उपभोक्ता को खुद ही दर्ज करना चाहिए।



डिजिटल बैंकिंग से ग्राहक आसानी से अपना खाता देख सकते हैं, ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं। इसके लिए ग्राहक का किसी भी प्रकार की बिल भुगतान की रसीद को संभाल के रखने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि जब भी आप ऑनलाइन माध्यम से भुगतान करते हैं, तो आप आसानी से किए हुए ट्रांजैक्शन को देख सकते हैं। यह सुविधा आपको ऑनलाइन चौबीस घंटे उपलब्ध होती है। जब बैंक बंद हो, तो भी आपको अपने पैसों के लेन-देन के लिए बैंक के खुलने का इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। इसके साथ-साथ जब भी आप पैसे की निकासी करते हैं, तो आपके मोबाइल पर तुरंत इसकी सूचना आ जाती है। यदि पैसों की गलत निकासी हो रही है या किसी भी तरह की धोखाधड़ी हो रही है तो इसकी सूचना भी आपको तुरंत मिल जाएगी। डिजिटल बैंकिंग की सुविधाओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि भविष्य में बैंकिंग संस्थाओं का महत्व बहुत कम हो जाएगा। परंतु डिजिटल ट्रांजैक्शनस करते समय आवश्यक सावधानियां भी बरतनी चाहिए।

Accounting

Dr. Neetu Aneja (Dept. of Commerce)

Life's Balance Sheet Accounts

Asha

B.Com. IIIrd Year

Life-life, what a life
Without money?
Money-money, what money
Without counting?
Counting-counting, what counting
Without accounting?
So accounting is real base.
Think, understand and realize
Accounting,

Accounting, Accounting,

* What is this?

Scientific calculation of net money.

* Why?

For increasing business from profit.

* When?

Becoming company level business.

* How?

With the help of professional accounting.

Make your life perfect by take perfect knowledge

Knowledge what knowledge=Accounting knowledge.

Our birth is our opening Balance! Our death is our closing Balance! Our prejudiced views our Liabilities Our creative ideas are our assets Heart is our current asset Brain is our fixed asset Thinking is our current account Achievements are our capital Character & morals, our stock in trade Friends are our general reserves. Values behaviour are our goodwill Patience is our interest earned Love is our dividend. Children are our bonus issues Education is brands / patents Knowledge is our investment Experience is our premium account The aim is to tally the Balance Sheet

The Goal is to get the Best presented Accounts award HOPE

Let us add something real assets to our life's balance sheet. Best of Luck



Demonetization

Savi Khera English

Demonetization refers to an economic policy where a certain currency unit ceases to be recognized or used as a form of legal tender. It occurs whenever there is a change of National currency. The current form or forms of money is pulled from circulation and retired, often to be replaced with new notes or coins. There are multiple reasons why a country demonetize its currency; some reasons include checking the inflation, to curb the corruption and to promote the cashless transactions. The Indian government decided to demonetize the biggest denomination notes i.e. 500-1000 rupees notes. This step has been declared as a master stroke for the Indian economy by various experts. This was not the first time that India has demonetized its currency, earlier it was done in 1946 with the complete ban of Rs. 1000 and Rs. 10000 notes to deal with the unaccounted money i.e. black money. Second time it was done in 1978 by Government headed by Morarji Desai, when Rs. 1000, Rs. 5000 and Rs. 10000 notes were demonetized. This step is considered as the biggest cleanliness drive against the black money in the history of Indian economy. It is expected that this step will help in reducing the fiscal deficit of India and promote the cashless economy in India which can be easily monitored.

Demonetization is a deep psychological strike on black money. Demonetization move has killed the very motivation of those people who have the ability to generate money. A person who had black money has already paid more than the effective tax rate to convert his black money into legally tender-able currency/assets. Such people are in a state of shock as though they have already paid tax at a higher effective tax rate but still their black money has not got converted into legitimate income. To top it up their wealth has substantially gone down as they have overright cost more than 50% value in their real estate holdings.

Demonetization has killed the very motivation of that person to generate black money and when a person loses his motivation to generate black money it is certain that the person would not generate black money irrespective of that person's ability and resources available at his hand to generate black money. Demonetization would produce a lot of indirect taxes. Demonetization has made the common man realize that he was the one who though paid his taxes, ended up playing a big role in generation of black money. This was because most of his spending were in cash. Common man in street smart and with this harrowing experience he would change his bad habit of withdrawing cash from ATM and then spending it on purchases. Demonetization seeks to bring in a sharp, sudden but long lasting behaviour change that encourages electronic payments. This means a lot many transactions would get reported and that would lead to a direct increase in income taxes. The ban on high value currency will also curb the menace of money laundering. This move will stop the circulation of fake currency.

At the same time, the announcement of the currency caused huge inconvenience to the people. Economists are busy in listing out money more merits and demerits of this policy. Even though there was suffering and agony among the masses but its benefits will be seen in the long run.

The government is taking all the necessary steps and actions to meet the currency demand.

The decision is now being praised by the top-notch personalities from all walks of life.



Jyoti B.Com. IInd Year

Online banking, also known as Internet banking, it is an electronic payment system that enables customers of a bank or other financial institution to conduct a range of financial transactions through the financial institutions website. The online banking system will typically connect to or be part of the core banking system operated by a bank and is in contrast to branch banking which was the traditional way customers accessed banking servies.

To access a financial institution's online banking facility, a customer with interest access will need to register with the institution for the service, and set up a password and other credentials for customers verification. The credentials for online banking is normally not the same as for telephone or mobile banking. Financial institutions now routinely allocate customers number, whether or not customers have indicated an intention to access their online banking facility. Customer number are normally not the same as account numbers, because a number of customer accounts can be linked to the one customer number. Technically, the customer number can be linked to any account with the financial institution that the customer controls, through the financial institution may limit the range of accounts that may be accessed to say, cheque, savings, loan, credit and similar accounts. The customer visits the financial institution's secure website and enters the online banking facilities using the customer number and credentials previously set up. The types of financial transactions which a customer may transact through online banking are determined by the financial institutions, but usually includes obtaining account balances, a list of the recent transactions, electronic bill payments and funds transfer between a customer's or another's accounts. Most banks also enable a customer to download copies of bank statements. Some banks also enable customers to download transactions directly in to the customer's accounting software. The facility may also enable the customer to order a cheque book, statements, report loss of credit cards, stop payment on a cheque, advise change of address and other routine actions with the growth of internet and wireless communication technologies, telecommunications etc. in recent years, the structure and nature of banking and financial services have gone for a sea change. Net Banking means to get the Bank facilities like money transfers, inquiries or transactions. The net banking is therefore, more of a rather than an exception in many developed countries because it is the cheapest way of proving with a Personal Identification Number (PIN) for making online transactions with the bank through internet connections.

A successful internet banking solution offers :-

- a) Exceptional rates on savings, CDs and TRAS.
- b) Checking amount with no monthly fee, free bill payment and rebates on ATM surcharges.
- c) Credit card facilities with low rate.
- d) 24-hour account access.
- e) Quality customary service with personal attention.

Today, many banks are internet only institution. These "Virtual Banks" have lower overhead costs than their brick-and-mortar counterparts. In The United States, many online banks are insured by the Federal Deposit Insurance Corporation (FDIC) and can offer the same level of protection for the customer's funds as traditional banks.

Digitalization in Human Resource Management

Riya Malhotra B.Com. IInd Year

"HR departments are seizing ownership of IT system to achieve business outcomes and drive organizational change."

The world has undergone for reaching cultural, societal and economical changes based on the increasing dominance of digital technologies. In sum, these changes have led to the current period being characterized as the "digital age". With these changes, digital technologies play an increasingly prominent role in both the lives of employees and human resource management, which seems to be affected in multiple ways. This special issue focuses on the impact of these changes on HRM, in relation to change to the workforce, to HRM in general and more specifically to the use of technology in delivering HRM activities. Three major areas are: "digital employees", "digital work" and "digital employee management". As a first major area the concept of digital employees refers to assumed larger changes in the core subject matter of the HR profession: labelled with various terms such as "digital natives" or "net generation". It is assumed that the early, intimate and enduring interaction with digital technologies has shaped a new generation of people with distinctively different attitudes, qualifications, behaviours and expectations. It is obvious that HRM should react to such changes and align its strategies and activities to this new labour market and search for adequate ways to recurit, develop, compensate etc. such "digital employees" and moreover to integrate them with previous generations of employees. The generation of younger employees grown up in a digital environment is both considerably more complex and considerably more heterogenous, while there are obvious difference that have to be considered. The challenge of HRM therefore is to identify actual digitally induced changes in attitudes, qualifications, behaviours and expectation of younger employees while avoiding any sterotyping. A second major area might be called "digital work", referring to the content as to the organization of work. Relating to work content the ongoing digitalisation implies an increasing automation of manual and routine work and a slow but steady change of remaining tasks towards "brain and information work". In consequence, qualification demands placed on employees have continuously changed, and in particular "digital literacy" understood as a broader set of tecnhical as well mental skills to systematically, process, produce and use information - turns out a crucial key qualification for more and more employees. In order to enable both individual employees as entire organizations to keep up with the digital change, HRM thus has to systematically prepare, accompany and often also cushion this enduring change of work content and corresponding qualification demands in its multifarious facets. Digital technologies have enabled new forms of organising work that range from single virtual workplaces, to virtual groups, teams or communities and even to virtual organisations. The basic challenge for e-HRM thus lies in recognizing the requirements that such digital form of work organization pose on managing employees as well as further categories of contribrutes. In this way, the ongoing digitalization of work content and organization constitutes a major change that visibly poses multiple new requirements on the HR profossion. A third and final area of digital change might be labelled "digital employees management" and refers to be planning, implementation and in particular application of digital technologies to support and network the HR profession, a phenomenon also known as electronic HRM. The ongoing digitalization of HRM is basically assumed to offer large opportunities for the discipline. A basic challenge of the HR profession is to identify, develop and utilize the positive potentials of digitalization.



Green Marketing

Himani B.com IInd Year (Pass)

Although environmental issues influence all human activities, few academic disciplines have integrated green issues into their literature. As society becomes more concerned with the natural environment, businesses have begun to modify their behaviour in an attempt to address society's new concerns.

One business are where environmental issues have received a great deal of discussion in the popular and professional press in marketing. Terms like 'Green marketing' and 'Environmental Marketing' appear frequently in the popular press Green Marketing incorporates a brand range of activities including product modification, changes to the production process, packaging changes and well as modifying advertising, yet defining.

"Green or Environmental Marketing consists of all activities designed to generate and facilitate any exchanges intended to satisfy human needs or wants, such that the satisfaction of these needs & wants access with minimal detrimental impact on the natural environment".

This definition ensures that the interests of the organization and all its consumers are protected, as voluntary exchange will not take place unless both the buyer & seller mutually benefit. This definition also includes the protection of the natural environment, by attempting to minimize the detrimental impact this exchange on the environment.

As with all marketing related activities, government want to protect consumers and society, this protection is significant green marketing implication governmental regulations relating to environmental marketing are designed to protect consumer in several ways:

- 1. Reduce protection of harmful goods or by-products
- 2. Modify consumer & industry's use or consumption of harmful goods.
- 3. Ensure that all types of consumers have the ability to evaluate the environmental consumption of goods.

Thus, governmental attempts to protect consumer from false or misleading claims should theoretically provide consumers with the ability to make more informed decisions. In Australian where regulations have affected many companies, one unintended casualty was an advertisement for the Federal Government's environmental labelling program "Environment Choice". This ad was deemed to breach the TPC's (Trade Practices Commission) guidelines, as it implied that only products with the logo were environmentally responsible.

Ultimately, Green Marketing requires that consumer want a cleaner environment and are willing to "pay" for it, possibly through higher priced goods, modified individually lifestyles or even governmental intervention.

Final consumers & industrial buyers have the ability to pressure organizations to integrate the environment into their corporate culture and thus ensure all organizations minimize the detrimental environment impact of their activities.

Global Warming....

Parineet Kaur B.com IInd Year

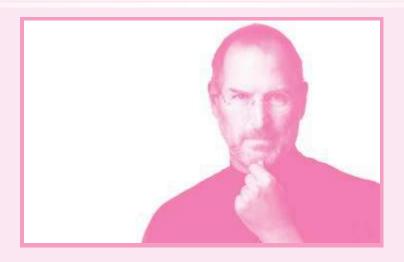
Global warming is a continuously increasing environmental issue all over the world. Global warming is a term used to describe a gradual increase in the overall temperature of earth's atmosphere generally attributed to the green house effect caused by increased levels of carbon dioxide, methane, nitrous oxide,, CFC's (Chlorofloro carbons) and other pollutants. Global warming is also referred to as climate change. Green house gases are generated by our daily activities and get collected into the atmosphere and form a cover around the earth which again absorbs hot sun rays and the absorbed heat remains in the lower circle of biosphere and enhances the temperature level. Human activity since the Industrial Revolution has increased the amount of green house gases in the atmosphere as industries use fossil, fuels for energy. Some observed changes includes sea level rise, change in climate extremes, decline in Arctic sea extent, glacier retreat, depletion of ozone layer and greening of the Sahara. Production of wheat and maize globally has been impacted by climate change. Economic losses due to extreme weather events have increased globally. There has been shift from cold to heat related mortality in some regions. Increase in number of floods, earthquakes, tornadoes, hurricanes, volcano erruptions has risen because of climatic imbalance. Next common cause of global warming is deforestation. Humans have been cutting down trees to produce paper, wood, rubber, building houses, etc. Trees and plants absorb carbon dioxide and gives oxygen. Due to deforestation, level of carbon has increased in atmosphere. There are many effects that will happen the future if global warming continues. That includes polar ice caps melting, warmer water, economic consequences, spread of diseases, etc. Another effect is the species loss of habitat. Species like polar bear and tropical frogs will extinct and various birds will migrate to other places due to climate change. Global warming have negative effect on our earth. So the global warming is at peak and alarms us regularly with its bad effects. It is affecting almost all parts of the world. It is destroying huge forests, killing algae, acid rain, etc. Acid rain is very dangerous which may destroy anything in touch. Global warming causes natural fires also known as wildfire. It cannot be solved by the effort of one, it needs global effort to reduce its effects and completely eliminate it. We need to move forward to implement solutions for controlling global warming. By reducing the use of gasoline instead using public transport or carpool can help reduce carbon-dioxide and save money. Another way is recycling or reuse of goods; turning off electricity when not in use can save energy. There is a large potential for future reductions in emmissions by a combination of activities including energy conservation and increased energy efficiency, use of low-carbon energy technologies such as renewable energy, nuclear energy and enhancing carbon sinks through reforestation and preventing deforestation. Our earth is 'sick', we humans need to 'heal' the earth.



I.T. World

"Creativity is just connecting things."

Steve Jobs



Staff Editor Mrs. Reena Katyal

CONTENTS

Sr. No. **Article Name** Communication in Modern World 1. 2. Career 3. Bit Coin Digital India 4. 5. A Hot Technology 6. **Software Testing** 7. **Cloud Computing** 8. Skill India to Gain Competitive EDGE Pros and Cons of Demonitisation 9. 10. **Network Security** Importance of Computer 11. 12. Whole Earth a Computer Screen.



Editorial Note.....

Dear Students,

Education in the 21st century is the center from which all changes & development arise. Information technology in education needs a culture. This culture needs to be learned along with the use of hardware resources, the educational system is also prone to some alterations. Today Technology Base Education is attainable at the universities of developed countries. Technology is just a tool. In terms of getting student working together & motivating them, the teacher is the most important. Technology is nothing. What's important is that you have faith in people. Basically good & smart, if you give them tools they'll do wonderful things with them.

Mrs. Reena Katyal Deptt. of Computer Science Staff Editor, I.T. Section



ROBOT

Ritika Arora BCA 2nd Year

A Robot is a machine - specially one programmable device run by a computer. Capable of carrying out a complex series of actions automatically. Robots can be guided by device run an external control device or the control way be embedde within. Robots may be constructed to take or human form but most robots are machines designed to perform a task with no regard to how they look.

Robots can be autonomous or semi-autonomous and range from humanoids such as Honda's Adraucld

Step in Innovative Mobility (ASIMO) & Tosy's TOSY Ping Pong Playing Robot (TOPIO) to industrial robots, medical operating robots, patient assist robots, dog therapy robots collectively programed swarm robots, UAV drones such as General Atomics MQ-1 Prodator & even microscopic now robots. By wimicking a life like appearance or automating movements a robot may convey a suise of intelligence are thought of its own. Autonomous things expected to protiferate in the comming decade, with home robotics & the autonomous car as some of the main drivers.

The branch of technology that deals with the design, construction operation & application of robots, as well as computer systems of their control, sensouy feedback, and information processing is robotics. These technologies deal with automated machines that can take the place of humans in appreauce, behaviour or coguition many of todays robots are inspired by nature



convributing to the field of bio-inspired robotics. These robots have also created a never brouch of robotics : soft robotics.

Internet Addiction

Kashish Kinra B.Com. (Honors) Ist Year

Internet Addiction is described as an impulse control disorder, which does not involve in the use of an intoxicating drug and is very similar to inthological gambling. Some internet users may develop an emotional attachment to on-line friends and activities they create on their computer screens. Internet users may enjoy aspects of the Internet that allow them to meet, socialize and exchange ideas through the use of chat rooms, social networking websites, or "blogging".

Blogging is a contraction of the term "web log" in which an individual will post commentaries and keep regular chronicle of events. It can be viewed as journalising and the entries are primarily textual.

Similar to other addictions, those suffering from internet addiction use the virtual fantasy world to connect with real people through the Internet, as a substitution for real-life human connection, which they are unable to achieve normally.



Operating System

Ritika Arora BCA 2nd Year

The software component of a computer system that is responsible for the management & coordination of activities and the sharing of the resources of the computer. The operating system (OS) acts as a host for

application programs that are run on the machine. As a host, one of the purposes of an operating system is to handle the details of the operating of the hardware. This reliever application programs from having to manage these details & makes it easier to write applications. Almost all computer, including hand-held computers, desktop computers, supercomputers and even modern video game cousedes, use an operating system of some type.



OPERATING SYSTEMS offer a number of services of application programs & users. Applications access these services through application programming interfaces (APIs) or system calls. By invoking these interfaces, the application can request a service from the operating system, pass parameters & recieve the results of the operation. Users may also interact with the operating system by typing commands or using a graphical user interface (GUI). For hand-held & desktop computers, the GUI is generally considered part of the operating system. For large multiuser systems, the GUI is generally implemented as an application programs that runs outside the operating system. The main memory of a computer is a finite resources. The operating system is responsible for sharing the memory among the currently running processes.....

Internet

Madhu Vij
Deptt. of Computer Science

Before some time, when there is no Internet, thinks arise how people do their work. It is really hard to imagine that time when there is no Google, email, Whatsapp, Facebook, Wikipedia. Think about the communication when in

the stone age a letter or knock on the door was required to communicate with someone. Then there is a little wait for reply to your messages and letters.

But now, In today world there is an instant communication with the help of Internet. Various options of communication like chat, mail, and social networking is used today. Messages spread on social media in some seconds.

There are various another sectors in which Internet done all kinds of works. That's way it is essential to saying that "It is the fastest growing".





Ways to Improve Office Productivity

Madhu Vij

Deptt. of Computer Science

There are five important ways to improve your office productivity. Here are five places to start:-

- 1. Retire the White-board: Many companies and organizations remain at the mercy of antiquated writing surfaces like white-board to develop strategy, capture brain storming ideas and faster team collaboration. During meetings, white boards are often erased as presenters make room for new ideas, concepts and charts. So valuable information that is not immediately retained is lost. After a meeting, participants are forced to capture whiteboard content that's still available, on their personal mobile phone camera. Not the best solution since this information can be hard to read, virtually impossible to edit, and not always circulated to those who need it and forget about security, your IP walks out the door on that mobile phones.
- 2. Go mobile, Big Screen & Digital: Find a digital solution that looks and writes like paper is portable, low power and can run on battery. It should have a large surface and allow tilling for added flexibility. It should also be non-reflective and easy on the eyes, with a wide viewing angles so multiple users can collaborate.
- **3. Seek out a Real-time Ideation Solution :-** Any solution that doesn't permit concepts or ideas to be challenged, edited or improved on the spot by team members across physical boundaries or geographic time zones. This, after all is the essence of brain storming. Seek out a digital tool that's "WI-FI" enabled, one you can easily and instantly upload to the "cloud" or "data".
- 4. Improve productivity by Managing Meeting Content: Your valuable, Insights, data or ideas shouldn't disappear just because you move on with your presentation to the next screen or page. Your 'writing canvas' is ideally endless, It expands or shrinks in an instant. Your new solution should have full digital capabilities from document storage to editing.
- **5.** The Right environment and tools for creativity:- According to <u>Dr. Henriette Klauser</u>, writing not typing Triggers the Reticular Activating System (RAS) which signals your brain to focus. Creative ideas flow when people write, and It's also more natural when done with a technology that looks and feels like Ink on real paper Rather than tapping on the glass of an LCD device.

Virus

Vijender BBA IIIrd

A virus is a piece of software or a command sequence that exploits a bug or vulnerability in the code. A

virus executes in a manner that it copies itself into other programs and files on the computer. The unexpected and unintended behaviour that is observed in the computer's operating system or application in termed as exploit in each case. Worms are the viruses that send copies over network connections. A non-replicating program or virus that is distributed by means of a CD on an email is called Trojan horse.





Computer Virus Protection

Kirti Dhingra

Deptt. of Computer Science

Computer Virus Protection :- A computer virus is a program - a piece of executable code - that has the unique ability to replicate. Like biological viruses, computer viruses can spread quickly and are often difficult to eradicate. They can attach themselves to just about any type of file and are spread by replicating and being sent from one individual to another. Simply having virus protection software on your institution's computer system doesn't guarantee safety and security.

Instead, portection and prevention is a team effort between the users and the antivirus software.

Virus Protection Tips:- Some excellent tips that can help protect your system from computer viruses:-

- 1. Install anti-virus software and keep the virus definitions up-to-date.
- **2. Scan all incoming e-mail attachments :-** Be sure to run each attachment you plan to open through the antivirus check. Most anti-virus software can be set up to check files automatically.
- **3.** Don't automatically open attachments and make sure your e-mail program doesn't do so either :- This will ensure that you can examine and scan attachments before they run. Refer to your e-mail program's safety options or preferences menu for instanctions.
- **4. Update anti-virus software frequently:-** An anti-virus program is only as good as the frequency with which it is updated. New viruses, worms and trojan horses are created daily and variations of them can slip by software that is not current. Most anti-virus software is easy to update online, with options to do so automatically.
- **5.** Avoid downloading files you can't be sure are safe: This includes freeware, screen savers, games and any other executable program- any files with an ".exe" or ".com" extension. If you have to download from the Internet, be sure to scan each program before running it.
- **6. Don't share floppies :-** Even a well-meaning friend may unknowingly pass along a virus. Label your floppies clearly so you know they're yours. If a friend passes you a floppy, suggest an alternative method of shaving files. In addition, always be sure to scan all floppies before using them.

Digital Library

Rahul Kukreja BBA IInd Year (IVth Sem)

A "Digital Library" is a special library with the correction of digital objects that can include text, visual material, audio material, video material stored as electronic media formats, along with means for organising, storing and retrieving the files and media contains in the library collection. Digital Libraries can very immensely in size and scope and can be maintained by individuals, organisation or affilated with established physical library buildings or institutions, or with academic institutions. The digital content may be stored locally or accessed remotely via computer networks. An electronic library is a type of information retrieval system. These information retrieval systems are able to exchange information with each other. Through introperability and sustainability.



XML (Extensible Markup Language)

Savita

B.Sc. Ist Year

XML stands for extensible Markup Language. It is a subset of SGML (Standard Generalised Markup Language) defined by ISO 8879 which provides standards for creating markup documents XML was released in late 90's and since then it has become a standard to store data for the various web applications and HTML documents. XML become a W3C recommendation on February 10, 1998 to provide an easy to use and standardised way to store self describing data. The word extensible means that the XML's specifications can be extended to create new markup languages. XML is a platform independent language i.e. using this language you can fetch the data easily from a program and convert it into XML form that can be shared with the other programs or platform by converting it into a structure used by them. This means that an XML documents generated by an application running on Linux can be easily used by th application running on Microsoft Windows. XML is a markup language for the document containing structural information.

Computer Network

Dishant Sethi BBA Ist Year

A Computer Network, or data Network is a digital tele-communication Networks which allows nodes to share resources. In computer networks, computing devices exchange data with each other using connections b/w nodes (data links). These data links are established over cable media such as wires or optic cables or wireless media such as Wi-fi.

Network Computer devices that originate, route & terminate that data are called network nodes. Nodes can includes hosts such as personal computer, phones, services as well as Networking hardware. Two such devices can be used or said to be networked together when one device is able to exchange information with the other devices, whether or not they have a direct connection to each other.

In most cases, application-specific communication protocols are layered (i.e. carried as payload) over other more general communication protocols. This formidable collection of

 $information \, technology \, requires \, skilled \, network \, management \, to \, keep \, it \, all \, running \, reliably.$

Computer networks support an enormous number of application & services such as access to world wide web, digital video, digital audio shared use of application & storage services, printer & fax machine use of emails & instant messaging application as well as many others. Computer network differ in the transmission medium used to carry their signals communication protocols to organize network traffic, the network size topology traffic control mechanisms organizational intent. The best known computer network is the Internet.



Internet

Pooja B.Com. Ist (Voc.)

The internet is a network of computer linking the United states with the rest of the world. Originally developed as a way for U.S. research scientists to communicate with each other, by the mid 1990s the Internet had become a popular form of telecommunication for personal computer users.

The internet, popularly called th Net, was created in 1969 for the U.S.A. defense department.

The Internet provides a capability so powerful general that it can be used for almost any purpose that depends on information, and it accessible by every individual who connects to one of its constituent networks. It supports human.

The internet carries many network services, most prominently mobile apps such as social media apps, the world wide web, electronic mail, multiplayer online games, Internet telephony all file sharing services. The



Internet, sometimes called simply "the Net" is a worldwide system of computer networks-a network of networks in which users at any one computer can, if they have permission, get information from any other computer.

The Internet has continued to grown we evolve over the years of its existence. 1PV6, for example, was designed to anticipate enormous future expansion in the number of available IP addresses.

Computer and School Education Today

Sant Kumar BBA 1st Year

Computers have become ubiquitous owing to their versatility. What is it not that you can't do with a computer? They are the Gods of the modern era! Naturally the field of education has also been influenced positively by use of computers. They have made the learning in classrooms much more convenient, fun-filled, and efficient. Expert teachers teach students using smart boards and interactive whiteboards. Computers have enabled both students and teachers process learning data many times faster than was possible in a traditional classroom.

The computer store the teaching and learning data systematically stored which can be so easily accessed by anyone wanting it. Internet has further facilitated sharing of Knowledge available abundantly on all the subjects. School websites now provide all the educational information required by parents and students. Aspiring students can look up the internet for any information and knowledge they require. So computer have really made education quite romantic. There is a modern renissance in education owing to computers.



Digital Marketing

Anirudh Sharma BBA IIIrd. 5th Sem

Introduction: As we know that we live in the Cyber World these days and today's economy of the business is totally depends upon the marketing so as to marketing should be potential of a organization. Digital Marketing plays an vital role in today's world.

"Digital Marketing" defination: It is collective term which is used where marketing meets internet technology and other forms of new media.

Digital Marketing Includes:

Social Media Marketing :- This has risen vary popularity and there are now N number of agencies seattered around the web which promise to help with facebook, Twitter, Linked in etc.

Search Engine Optimisation :- It means optimination of the content of a website in order to gain better placement on the Search Engine Result Page. (SERP).

Search Engine Marketing (SEM):- It is just vaster than the SEO search engine optimisation. It includes the SEO as well as paid media such as pay-per-click (PPC).

Email Marketing :- It is a very effective tool despite claims that it isn't as important as social these days. Modern email marketing is just beginning to evolve as it can be leaked to data base.

With the help of above points a company should have strong marketing potential. In modern time the offline methods are obselete the whole industry is now depending open the digital strategy so that. If company wants to grow itself than they took after its Marketing Department.



Aman B.Com. III (Voc.)

क्या आपको पता है ऐसे उपकरण का नाम, जिसमें भरा है बहुत ज्ञान उसके साथ है एक Key का Board साथ में रहता सदा एक चुहा लोड बडे से बडे Problem को यह पल में निपटाए पर बिना मालिक (User) इसे कुछ न आए इसकी भी एक माँ है जिसे कहते हैं Motherboard पिता का पता नहीं पर क्या पता वो CPU हो। सुन कर होगी हैरानी, पर इसे नहीं आती हिन्दी, इंगलिश या संस्कृत की वाणी इसे तो बस एक भाषा ही समझ में आए ये शुरू हो 0 से और 1 पर इसकी व्याकरण खत्म हो जाए समझो तो इसमें है अथाह (अनन्त) ज्ञान ना समझो तो यह एक डब्बे के समान देखने में छोटा, पर काम करे बडा भारी जय हो कम्प्यूटर देवता ! आपने हमारी जिन्दगी सवारी ।।





Hacking: Good or Bad

Vijender BBA IIIrd

Hacking was a term that originated in 1990s and is associated with the unauthorize use of computer and network resource. By definition, hacking is the practice of altering the features of a system, to accomplish a goal which not in scope of its creation.

Hacking is more commonly used in context of "Computer Hacking" where threat is posed to security of the computer and other resource. In addition, hacking has few other forms which are less known and talked about e.g. brain hacking, phone hacking etc.

"Hacker" was a term used to denote a skill programmer who had competency in machine code and operating system. Such Individuals were proficient in solving unsatisfactory problem and often Interpreted competitors code of work or intelligence agents for small software companies.

But currently a hacking has a more negative implication and so is the term hacker. Hacking which is done on request and involves a contact of terms and conditions allows authorise access to the target and hence referred to as ethical hacking.

Computer and network security come under the faray when the information about possible attacks is tried to be evaluated to determine the weakness and loopholes in the system. Poor web contiguration, old or loosely bind software, inactive or dirable security controls and weak or low strength password are some examples of areas that make the computer network and system vulnerable to attacks.

Facebook Tricks - What You Need

Muskan Ratra

B.Com. Honrs Ist Year

We are all probably pretty familiar with facebook & yet some of us are not aware of a number of interesting tricks to stay connected better.

Trick 1: Keep A check on profile visitors

Profile visitors for facebook is a chrome extension that allow you to check how many people have visited your facebook profile today. It is 100% facebook profile viewer.

But, the problem is that, it is available only for chrome users. Well, its not as big problem that you can't go with.

- **Step 1 :-** Go to "https://chrome.google.com/webstore/detail/profile-visitors-for-face/injbpjiibmjdlcgodcnmpelpmilamk"
- **Step 2**:- Login to your facebook Account. Now you can see a "visitors" button at your facebook topbar, next to facebook notificationionic click on it.
- **Step 3 :-** Upon clicking, a pop-up window will appear telling you who have visited your facebook profile recently. Keep this pop-up window open to track your facebook profile visitors in real-time. So when ever any one visit your facebook profile you'll be able to see them in this profile visitors for facebook pop-up box.
- Step 4:- Profile visitors for facebook only works for those people who have installed this extension on their



chrome & have visited your facebook profile from the same browsers. So, snare this 100% real facebook profile viewer app with your friends. The more your friends will install profile visitors for facebook, the more you'll be able to track if they've visited your facebook profile today or not. Profile visitors for facebook is a very cool extension. It is safe & ads free. Sometimes, when profile visitors server goes down only then it fails to work.

Trick 2: Secure facebook profile Picture

This trick will help you safeguard your facebook profile picture what is I think the most spread concern now a days.

- **Step 1 :-** Open your photos Album by "https://www.facebook.com/me/photos_albums". Now, open your 'profile pictures' album. Here you can see all your previously uploaded profile pictures.
- **Step 2:-** Open any of your easlier used profile picture by clicking it (Do not use the correct one). Upon click, the picture will open in slicle slow (light box) style. Copy the unique 15-digit & bid value from the address bar URL.
- **Step 3 :-** Go to your facebook timeline. Click on "Edit profile picture" that appear when you hover your mouse over your facebook profile picture. Now, select "Edit Thumbnail" option.
- **Step 4**:- After selecting Edit Thumbnail option, a popup window will appear. Here right click on your profile picture, select Inspect. Hemere from the right-click context menu. Now, chrome will open a small console window at the bottom of your chrome browser.
- Step 5:- In the chromes console window, scroll down till you reach the code starting from

<from action = "https://upload.facebook.com/save_square_pic.php"</pre>

The code has a small arrow, click it to expard the code & scarch this line:

<input_type = "hidden" autocomplete = "offname=" "photo-fbid value="

At the second line, change the value provided at value ="xxxxxxxxxxxxxxx" with the 15-digit number. You have copied in Step 2 by double-clicking the 15 digit number appearing at console. Make sure, both the values (old & new) are different. For instance, my fbid for the currcur profile picture is 411122845687037 which I need to replace by 402423846555937 (copied at step 2).

Step 6 :- After replacing, close the console box. Now, click on "Save" button at the pop-up window and, you're alone.

Trick 3: Create Your own Chat Icon

We all know the importance of fmoticons (emonion icons), smiley in our facebook chat or coniments. These are very powerful to show our feelings very strongly. Through facebook offers a lot of emonicons/smileys to you but you are not limited to only those smileys.

You can create icon (16x16) image of any facebook users profile pic by just typing their facebook profile ID inside [[]] (double square bracket). This click will work in facebook chat. You just need to guab the person or page's facebook profile ID. You can do this by putting the person/page's username as http://graph.facebookcopy/username. Replace the username from the person's username, grab the profile ID & use it on facebook chat box as [[profile ID]] for e.g. [[1234567890]]. That's all I had for this time, will be back with something more interesting next time.

ннннн



History of Computer

Himanshi B.Com. (Honors) I

A computer is a device that can be instructed to carry out arlitary sequences of arithmetic or logical operations automatically. The ability of computers to follow generalised set of operations, called programs, enables them to perform an extremely wide range of tasks.

Since ancient times, simple manual devices like the abacus aided people in doing calculations. Early in the Industrial Revolution, some mechanical devices were built to automate long tedious tasks, such as guiding patterns for looms. More sophisticated electrical machines did specialised analog calculations in the early 20th century. The first digital electronic calculating machines were developed during world war II. The speed power and versatility of computers has increased continuously and dramatically since then.

A modern computer consists of atleast one processing element, and some form of memory. Peripherial devices includes input devices (keyboard, mouse, joystick etc.), output devices (monitor, printer etc.) that performs both functions. These devices allow information to be retreive from any external source.

Data Mapping

Abhishek Chawla BBA IInd Year (IVth Sem)

In computing and data management, data mapping in the process of creating data element mapping between two distinct data models. "Data mapping is used as a first step for a wide variety of data integration."

Task including:-

Data transformation or data mediation between a data source as a destination.

Identification of data relationship as part of data lineage analysis.

Consolidation of multiple database into a single database as identifying redundant columns of data for elimination.

For Example, A company that would like to transmit or receive purchases al invoices with other companies might use data mapping to create data maps from a company's data to standardized ANSI ASC X12 messages for item such as purchase orders as invoices.

Future of Information Technology

Yatin

BBA IInd Year

- V Information Technology (IT) is defined as the study that involves the supports, management, study, design, development and implementation of information systems that are computer based. This includes physical components of the information system, known as hardware and programs that help the machine to function, known as software. The scope of information technology is very wide and is gaining mementum with each passing day, to encompass many fields work & study.
- V Information Technology is related to studying, designing and developing the information related to



computers. This field is growing at a very fast pace over the last few years and according to successful and well-known people in the information technology sector, this growth is expected to remain stable. Information Technology jobs in India are the first choice career for the bright brains who are innovative. Hence, IT jobs in India are also booming with increasing demand for information technology professionals. The IT industry has great scope for people as it provides employment to technical and non technical graduates and has the capability to generates huge foreign exchange in flow for India. India exports software & service to approximately 95 countries in the world. Many financial institutions are providing funds for the expansion of IT & ITES bussinesses. In order to support IT and ITES the Indian government is also taking many steps.

- IT will continue to gain momentum also in Telecom & Wireless services. The immense expansion in networking technologies is expected to continue into the next decade also. IT will bring about a drastic improvement in the quality of life as its impacts application domains and global competitiveness. Technologies that are emerging are Data Warehousing & Data Mining. They involve collecting data to find patterns & testing hypothesis in normal research software services that are being used in outsourcing will go a long way.
- V All these factors collecting create a number of golden opportunities in the IT sector. The IT sector is growing at a fast pace and is creating ample opportunities for deserving candidates.

Computer: An Important Part of Life

Srishti

B.Com. (Hons.) Ist Year

Computer is a modern tool which has made life very easy and simple. It has capability to complete more than one task in small time. It is able to do work of many human beings alone within has time. It is the utility of highest efficiency. The first computer was a mechanical computer which was created by the Charles Babbage. A computer works successfully using its hardware and fully instaued application software. Other accessories of the computer are keyboard, mouse, picture, CPU and UPS.

The data which we put into the computer using device is called input data and device which we take outside using printer or other device is called output data or output device. The input data gets changed into the information which can be stored and changed anytime. Computer is very safe tool for data storage which is being used in various fields. We can shop, pay our electricity bills, water bills, video chat, e-mailing any where in the world and lots of online activities, using internet.





Cyber Security For Medical Devices

Manisha

B.Com. IInd (Voc.)

2017 has been an eye-opening year for the state of cyber security. The Wanna Cry ransome attack, affecting more than 3,00,000 computers and exploiting billions of dollars, showed us how vulnerable our personal devices can be. The Equifax data breach, which compromised 143 million records, showed us that even our most trusted institutions are vulnerable.

With the increasing sophistication and availability of medical devices, cyber security is becoming an especially important concern for the health care industry. But why is it that medical devices are so vulnerable, and should we be doing more to regulate their development and ongoing management?

Why Devices are So Vulnerable: - Medical devices are vulnerable during their development deployed, and through the end of their life cycle. But why are medical devices so vulnerable to attacks in the first place?

- Patient Health: If your computer is compromised by a cyber attack, you might lose access to your personal files, or even your personal data. If your medical device is compromised, you could be injured, or even killed. These devices are tied to your personal health, and are therefore more valuable and more vulnerable.
- V **Increasing Prevalence :-** The popularity and availability of high-tech medical devices have also increased. More sophisticated types of technology are in circulation, and more patients are depending on those devices for their health, or even their survival.
- V Value: Finally we have to consider the value of hacking into a, medical devices. Because they are tired to patient health, people will be willing to pay more to protect or release them.

Because they are usually loaded with sensitive, personal data, they represent an opportunity for identity theft.

Future Developments:-

So what does the future hold for medical device regulation? That depends on a few different factors. The FDA has limited power for intervention, and therefore prioritize making recommendations to manu factures, who then have the power of internet.

Internet: Global System

Riva

B.Com. IInd Year (Voc.)

The "Internet" is the global system of interconnected computer networks that use the internet protocol suite (TCP/IP) to link device worldwide. It is a network of networks that consists of private, public, vacademic, business and government networks of local to global scope, linked by a brwoad array of electronic wireless, and optical networking technologies. The internet carries a vast range of information resources and services, such as the interlinked hypertext documents and applications of the world wide web (WWW), electronic mail, telephony, and file sharing. The origin of internet data back to research commissioned by the United States



Federal Government in the 1960s to levild roleustm, fault-tolerant communication via computer network. The linking of commercial network and enterprises in the early 1990s marked the begining of the transition to the modern Internet and the generated rapid growth as institutional personal and mobile computers were connected to the network. By the late 2000s, its services and technologies had been incorportated into virtually every aspect of human lives. Most traditional communications media, including telephony, radio, television, paper mail and newspapers are being reshaped, redefined or even bypassed by the internet giving birth to new services such as email, internet telephony, Internet television, online music, digital newspapers and video streaming websites.

Impact of Social Media on Journalism

Yash Chopra BBA IIIrd Year

Today, Journalists face challenges caused by new media technologies. Journalism is experiencing considerable change linked to social cultural economical and technological transformations. Social media brings new characteristics like interactive dialogue and social interactions. Journalists can now have real conversations with their audience. Online debates have also been put into place so that everyone can express themselves. (when comments are enabled) Traditional one-way communication is turning into two-way conversations. It is also good way to get breaking stories as soon as they happen. On social, news organizations will know their readers much more than with press releases because comment section is available. The new way for journalism is facebook, whatsapp, Instagram and other social websites. Now a days they all are providing the live facility or live broad-cast to inform other people at different places of the same time. It is very beneficial in its own ways like to catch a corrupt officer & other offensive persons or a group of persons by own the support telecast News, or telecast can be saved permanent in the social media amount until the user delete them values & TRPs of TV news channels getting lower. Due to absence of their reporters on the support and other witness taken the advantages by live streaming on social media. In these ways every one now is journalists in its own way.



Dolly Pathak

M.Com. (Final) IV Sem

It's been another year of impressive growth across all things digital and this year's 2018 Global Digital report reveals some important new miles tones and trends. Perhaps the most exciting headline in this year's report is that global internet users have now passed the 4 billion mark. Well over half of the world's population now uses the internet, and a quarter of a billion new users came online for the first time during the past 12 months. Now a days internet is commonly used for earning purpose mostly in students life. Most of students spend very huge amount of time on internet. There are new different ways to earn for students free-lancing google adwards blogging. These are the most popular way of earning in this running period. Free-lancing is the most easy way to earn money. As in this their is no initial investment & having a huge amount of returns free lanchers has to do the simple work given by the first party like article writing, programming etc. On the other hand blogging is also a very simple task to do. In this a blogger past the new latest updates of different places or varities of the goods or about the nature. If his blogs become popular due to uniqueness then he can earn a very good amount of money. These are the some ways to earn money from home by using internet.



High High Hall

कर्मण्येवाधिकारस्ते, माफलेषुकदाचनः।



Staff Editor
Mrs. Anila Bathla

संस्कृत अनुभाग

क्र.सं. विषय विद्याया: महत्त्वम् 1. राष्ट्रीय एकता 2. जननी जन्मभूमि माँ 3. वचने का दरिद्रता 4. पुस्तकालय: 5. 6. सदाचार: 7. रामायण: एषा मम धन्या माता 8. सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षिकेभ्यः च समर्पितम् 9. संस्कृत गौरवम् 10. गर्भमधये कन्यायाः चीत्कारम् 11. अनुशासनं महत्त्वं 12. ममं प्रियं पुस्तकं रामायणम् महत्त्वम् 13. नेत्र संरक्षणम् 14. यस्या यत नास्ति सः तत् वृणोति 14. धनस्य महत्त्वम् 15. महाभारतम् 16. गणतन्त्र दिवसम् 17. अद्भुत स्वप्न 18.

षड् ऋतु

19.



ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम्।
भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात्॥

રામ્વાવનોયમ્...

विद्या मानवजीवनस्य अविभाज्य अङ्गम्। ज्ञानविकासः, बुद्धिविकासः, गुणविकासः, व्यक्तित्वविकासः इत्यादिनां कारणं भवति विद्या एव। अत एव सर्वे अपि सर्वकाराः विद्यायाः विकासाय अभिवृद्धयै च प्रभूतं धनं व्ययीकुर्वन्ति। प्राचीनकाले या विद्याभ्यासव्यवस्था आसीत् सा शतात् वर्षेभ्यः पूर्व न आसीत्। शतात् वर्षेभ्यः पूर्व रिथता व्यवस्था पंचाशत् वर्षेभ्यः पूर्वं न आसीत्। बाल्ये यां व्यवस्थाम् आश्रित्य वयं विद्याभ्यासं कृतवन्तः सा नितरां परिवर्तिता दृश्यते अद्य।

अध्यापनक्षेत्रे नूतनानि संशोधनानि, नूतनाः पद्धतयः, नूतन विचारधारा इत्यादयः दृश्यन्ते अद्य। तत्तक्षेत्रे अपि पौनः पुन्वेन परिवर्तनम्। प्रगतेः निदानम् एतदेव इति प्रतिपाद्यन्ति तत्तत्वक्षेत्रिया जनाः।

बहवः मनीषिणः विद्याभ्यासव्यवस्थाया विषये अमूल्यवान् स्वीयान प्रकटितवन्तः सन्ति । बहवः विशिष्टां पद्धित मनासि निर्धार्य स्वीयाम् अध्यापनपद्धितम् अनुसरन्तः अपि दृश्यन्ते । दण्डनं ताडनम् इत्यादिकं प्राचीनकालायाः विद्याभ्यासव्यवस्थाः अविभाज्य अङ्गम् आसीत् । अद्य तु ताडनादिकं बालानां मनषः विकासस्य बाधकं भवति इति वदन्ति शिक्षणविशेषज्ञाः । एतादृशानि बहूनि परिवर्तनानि अद्य दृश्यन्ते शिक्षणक्षेत्रे ।

> श्रीमती अनिला बठला अध्यक्षा, संस्कृत विभाग



प्रहेलिकाः

ज्योति बी.ए. द्वितीय वर्ष

कस्तूरी जायते कस्मात्? को हन्ति करिणां कुलम्? किं कुर्यात् कातरो युद्धे? मृगात् सिंह पलायते॥ 1॥

> सीमन्तिनीषु का शान्ता? राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः? विद्वद्भिः का सदा वन्द्या? अत्रैवोक्तं न बुध्यते॥ 2॥

कं सञ्जघान कृष्ण:? का शीतलवाहिनी गंगा? के दारपोषणरता:?

कं बलवन्तं न बाधते शीतम्।। 3।।

वृक्षाग्रवासी न च पिक्षराजः त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः॥ ४॥

सदाचार:

रितु बी.ए. तृतीय वर्ष

सताम् आचारः सदाचारः कथ्यते। सज्जनाः यानि कर्माणि कुर्वन्ति तानि एव अस्माभिः कर्तव्यानि। ऋषयश्च वदन्ति यानि अनिन्द्यानि कर्माणि तानि सेवतिव्यानि नेतराणि। गुरुजनानां सेवा, सरलता सत्यभाषणम्, इन्द्रियनिग्रहः अद्रोहः, अपैशन्यम् आदिगुणानां गणना सदाचारे भवति। स हि न कस्मैचिदिप द्रुह्यते। पुरा भारतं सर्वेजनाः सदाचारवन्तः आसन्। इदानीं रामचन्द्रस्य मर्यादापुरुषोत्तमस्य जीवनं सदाचारस्य उत्कृष्टम् उदाहरणम् अस्ति। अस्माभिः तस्यैव जीवनम् अनुकरणीयम्। यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः। चित्ते वाचि क्रियायांच साधुनामेकरूपता।।



जननी जन्मभूमिः माता

अंकिता बी.ए. द्वितीय वर्ष

संस्कृतम् जगतः एकतमा अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृतं भारतस्य जगतः वा भाषास्वेकतमा प्राचीनतमा। संस्कृता वाक्, भारती, सुरभारती, अमरभारती, अमरवाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, गीर्वाणी, देववाणी, देवभाषा, दैवीवाक् इत्यादिभिः नामभिः एतयद्वाषा प्रसिद्धा। भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः स्वीकृताः। संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्धता। तावदेव भारत-यूरोपीय-भाषावर्गीया: अनेका भाषा संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राचुर्यं च प्रदर्शयन्ति। व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारप्रदायिनी भवति। अष्टाध्यायी इति नाम्निमहर्षिपाणिन: विरचना जगत: सर्वासां भाषाणाम् व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा, वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानीनां च प्रेरणास्थानम् इवास्ति। संस्कृतवाङ्मयं विश्ववाङ्मये अद्वितीयं स्थानम् अलङ्करोति। संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदाः सन्ति। वेद-शास्त्र-पुराण-इतिहास-काव्य-नाटक-दर्शनादिथि: अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ती अस्ति एषा देववाक्। न केवलं धर्म-अर्थ-काम-मोक्षात्मका: चतुर्विधपुरुषार्थहेतुभूताः विषयाः अस्याः साहित्यस्य शोभा वर्धयन्ति अपितु धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक-लौिकक-वैज्ञानिक-पारलौकिकविषयै: अपि सुसम्पन्ना। इयं देववाणी। कालान्तरे एतस्यत: लेखनं देवनागर्या आरब्धम्। अन्यरूपान्तराणि अधोनिर्दिष्टिन सन्ति। बाङ्गलालिपिः, यवन्द्वीपलिपिः, कम्बोजलिपिः, कन्नड्लिपिः, नेपाललिपिः, मलयालमिलिपिः, गुजरातीलिपिः, इत्यादयः। मूलतो यस्मिन् प्रदेशे या लिपिर्जनमातृभाषां लेखितुमुपयुज्यते तस्मिन्प्रदेशे तया एव लिप्या संस्कृतमिप लिख्यते। पूर्वं सर्वत्र एवमेव आसीत्, अतएव प्राचीनाः हस्तलिखितग्रन्थाः अनेकासु लिपिषु लिखिताः सन्ति। अर्वाचीने काले तु संस्कृतग्रन्थानां मुद्रणं सामान्यतया नागरीलिप्या दृश्यते। अल्पाक्षर: अनन्त, गाम्भीर्यं, गहनार्थयुक्तानि तादृशध्येयवाक्यानि गुरु: इव, मित्रमिव श्रेयोभिलाषी इव अस्मान् निरन्तर प्रेरयन्ति। जीवनयाने सत्प्रदर्शनं कुर्वन्ति। सूत्रमन्त्र-तन्त्रसूक्तिसुभाषितरूपेण असंख्यानि प्रेरणावाक्यानि सन्ति। तानि पठ्यमानाः जनाः नृतनोत्साहं, चैतन्यं, स्फूर्तिञ्च प्राप्नुवन्ति।

सूर्य:

ज्योति बी.ए. द्वितीय वर्ष

सूर्यः किञ्चन नक्षत्रं विद्यते। किन्तु ज्योतिष्शास्त्रदृष्टया अयं कश्चन ग्रहः इति निर्दिश्यते। खगोलपदार्थेषु सूर्यः अत्यन्तं प्रमुखः अस्ति। तदीयाः किरणाः भूमेः उपिर अन्येषां ग्रहाणाम् उपिर प्रकाशम् उष्णता च प्रसारयन्ति। सूर्यस्य आकर्षणपिरधौ एवं अन्येषां ग्रहाणां सञ्चलनं भवित। नित्यजीवनव्यवहारे तस्य प्रभावः अस्ति अनन्यः। सूर्य विना मानवजीवनस्य कल्पना अपि अशक्या एव। सूर्यस्य व्यासः भवित 8,34,000 मैल्-पिरिमितम्। भूमेः विस्तारस्य अपेक्षया 23,00,000 गुणितम् अधिकम्। द्रव्यराशिः भूमेः अपेक्षया 3,33,000 गुणितम् अधिकम्। अणुप्रक्रिया सूर्ये शक्त्युत्पादन भवित। सूर्ये प्रचाल्यमानया अनया क्रियया जलजनकः हीलियं-धातुरूपेण परिवर्तिताः भवन्ति इत्यतः द्रव्यराशौ प्रत्येकस्मिन् क्षणे चत्वारि-मिलियन्दन्-पिरिमितः भागः न्यूनः भवित। सूर्यः यस्यो वियदङ्गया केन्द्रतः सूर्यः 30,000 ज्योतिर्वर्पाणाम् अन्तरे विद्यते।



विद्या

निधि बी.ए. द्वितीय वर्ष



भारतीयसङ्कल्पानुसारं विद्याविनयसम्पत्तिः विनयाधानम् इत्यादिप्रयोगः एव साधु। यतः विद्या ददाति विनयम् इति खलु प्रसिद्धम्। प्रामाणिकग्रन्थेषु विद्याभ्यासः इति पदप्रयोगः अपि न दृश्यते विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि इत्येवं भगवद्गीतायां प्रयोगः अनेन प्रयोगेण अस्य लक्ष्यमपि अवगच्छति। विनयनमेव विद्यया प्राप्तव्यम्। अपरया भाषया वदामः चेत् स्वभावसंस्करणमेव शिक्षणम् इति भावः।

श्रीमद्विवेकानन्दस्वामिपादादयः स्वभावसंस्करणमेव शिक्षणमिति स्पष्टीकुर्वन्ति च। अत एव कथयामः विद्याविहीनः पशु इति।

2.

विनय गुणसंस्कारः चेत् तदर्थं सर्वसमर्पणम् एव मार्गः। गुरुसमर्पणं, गुरुशुश्रूषा, योगाभ्यासः, अध्यात्मशास्त्रपठनम्, ब्रह्मचर्यम्, श्रवणमनननिदिध्यासनादयः च इच्छाशक्तेः ज्ञानशक्तेः क्रियाशक्तेः च वर्द्धनम् कारयन्ति। तत् पुरुषार्थसाधनाय समर्थः मार्गः भवति च।

देशभक्तिः

कीर्ति बी.ए. तृतीय वर्ष

अस्माकं देश: भारतवर्षोऽस्ति। वयं सर्वे भारतवासिना स्मः। भारतभूमौ वयं जीवनं यापयामः। अस्य देशस्य अन्नं भक्षयामः, अस्य देशस्य जलं पिबामः। अस्य देशस्य वायुं प्राप्तुमः। अयं देशः अस्मभ्यं फलानि, मधुर-दुग्ध, स्वादिष्टं मिष्ठान्नं सुन्दराणि वस्त्राणि, आवासाय गृहाणि ददाति। अतएव देशं प्रति अस्माकं अपि कर्त्तव्यम् वर्तते। यथा वीराः देशरक्षार्थं स्वान् प्राणान् त्यजन्ति, तथैव वयं नागरिकाः अपि स्वदेश-प्रेम-परिपूर्णाः भवेम। सर्वे जनाः स्वदेशं प्रति गौरवम् अनुभवन्ति। राष्ट्रीय-भावना देशभिक्तः, स्वदेश-प्रेम, देशसेवा, देशरक्षा इत्यादयः सर्वेषु भारतीयेषु भवेयुः। यत्र मानवः जन्म लभते तम् प्रति स्वाभाविकः स्नेहः अवश्यं जायते। स्वदेशस्य वृक्षाः, पश्चः, पिक्षणः, सरोवरः, नद्यः, देवमन्दिराणि, गृहाणि,

विद्यालया: मनिस आकर्षण कुर्वन्ति। यदि कोऽपि नर: स्वदेशात् दूरं गत्वा निवसित तस्य हृदये देश-दर्शनाय भावना अवश्यं उद्भवति। यदा सः स्वदेशं आगच्छित तस्य हृदयं प्रसन्नं भवति। राम: यदा लंकां जगाम तदा रावणं हत्वा स्वर्णमयीं लंकां जित्वा अपि स्वदेश स्वनगरं स्वमातृभूमिम् अयोध्यामेव स्मरित तथा निज्जभातरं लक्ष्मणं प्रति सः कथयति-

अपि स्वर्णमयी लंका लक्ष्मण मे न रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥





श्लोक

बी.ए. तृतीय वर्ष

यथा चतुिभ: कनकं परीक्ष्यते
 निर्घषणच्छेदन तापताडनै:। तथा
 चतुिभ: पुरुष: परीक्ष्यते त्यागेन
 शीलेन गुणेन कर्मणा

(आचार्य चाणक्य)

धृष्टा भार्या शठं मित्रं
 भृत्यश्चोत्तरदायकः। ससर्पे गृहे वासो
 मृत्युरेव न संशयः।

(आचार्य चाणक्य)

 न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं, न कश्चित् कस्यचित् रिपु:। अर्थतस्तु निबध्यन्ते, मित्राणि रिपवस्तथा।

(आचार्य चाणक्य)

4. यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचिति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।

(भगवान श्री कृष्ण)

यद्यदाचरित श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
 स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

(भगवान श्री कृष्ण)

यो मामजमनादिं च वेत्ति
लोकमहेश्वरम्। असम्मूढ: रू मर्त्येषु
सर्वपापै: प्रमुच्यते।।

(भगवान श्री कृष्ण)

धर्मे धमनं पापे पुण्यम्

अनु बी.ए. तृतीय वर्ष

आसीत् किश्चत् चञ्चलो नाम व्याधः पक्षीमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविका निर्वाहयित स्म। एकदा सः वने जालं विस्तीर्यं ग्रहम् आगवत्वान्। अन्यस्मिन् दिवसे प्रातःकाले यदा चञ्चलः वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः अस्ति। मां खादिष्यित अतएव पलायनं करणीयम् व्याघ्रः न्वेदयत्-भो मानव! कल्याणं भवतु ते यदि त्वं मां मोचिच्यिसि तिर्हं अहं त्वां न हिनष्यामि। तदा सः व्याधः व्याघ्रं जलात् बिहः निरसारयत्। व्याघ्रं क्लान्तः आसीत् सोऽवदत् भो मानव पिपासुः अहम् नद्यः जलमानीय मम पिपासा शमय। व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः व्याधमवदत् शान्ता मे पिपासा। साम्प्रतं सः माम् खादिष्यिति तोऽस्मि इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि चञ्चलः उक्तवान् अहं त्वत्कृते धर्मम् आचिरतवान् त्वया मिथ्या भाषितम्। त्वा मां खादितुम इच्छिसि? अवदत् अरे मुर्खं धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवित एव।



होलिकोत्सवः

मोनिका बी.ए. तृतीय वर्ष

हास-परिहास: प्रधान: होलिकोत्सव: सुरिभतवायुमण्डले वसन्ते ऋतौ फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां तिथौ समागच्छित। अग्रिमे प्रितपदािदवसे बाला: बालिकाश्च होलिका-क्रीडनं कुर्वन्ति। सर्वत्र रंग-क्रीडा आरभ्यते। बाला: युवान:, वृद्धाश्च तथा कन्या:, नार्यश्च समवयस्कानाम् उपिर रक्तं, हितं च बहुविधं रंगरागरंजितं जलं च प्रक्षिपन्ति। तेऽित नानािवधं गुलालं सुरिभतं पुष्पपरागं च मुखेषु मर्दयन्ति। परस्परम् आलिंगन्ति, लघव: वृद्धान् नमन्ति, आशीषं च गृहणन्ति। चिरात् विमुखीभूताः भ्रातर: सुहृदश्च प्राचीनं वैमनस्यं विस्मृत्य होलिकां साक्षीकृत्य पुन: मैत्रीं संयुञ्जन्ति। होलिका-दिवसे सर्वत्र उल्लासमयं वातावरणं भवित। आपणेषु रथ्यासु सर्वत्र एव अभिज्ञानहीनािन मुखािन धारयन्तः प्रसन्नाः जनाः इतस्ततः परिभ्रमन्ति, अन्योऽन्यं कण्ठैः मिलिन्ति, हसन्ति, गायन्ति, नृत्यन्ति, सर्वेषां च मनािस रञ्जयन्ति। सर्वत्र सर्वे मानवाः प्रसन्नाः स्वस्थाश्च दृश्यन्ते।

मम जीवनस्य उद्देश्यम्

ज्योति बी.ए. तृतीय वर्ष

अहं इदानीं स्नातकस्य तृतीयवर्षे पठामि। मम पिता एक: सामान्यो लिपिकोऽस्ति। अहं अनुभवं करोमि यत् मम पिता येन केन प्रकारेण परिवारस्य परिपालनं करोति। स कार्यकालात् अतिरिक्तकालेऽपि यत्र तत्र गत्वा श्रमस्य कार्याणि करोति। अतिव्यस्त-जीवने स सुखी न ज्ञायते। यद्यपि अनेके धनसम्पन्नाः जनाः परम-व्याकुलाः सन्ति। अहं तु उच्चिशक्षां प्राप्य आदर्श-अध्यापकरूपेण कार्यं करिष्यामि। यतः अध्यापकः निस्वार्थभावेन मनसा वाचा कर्मणा विद्यार्थीनाम् उपकारम् करोति। अतिरिक्तकाले स यत्र तत्र गत्वा सामाजिक-सेवां अपिकर्तुं सक्षमो भवति। मम महत्वाकाक्षां वर्तते यत् अहं उच्चिशक्षाज्ञाता भवामि, वदन्तरम् निर्धनेभ्यः छात्रेभ्यः शिक्षां धनं च दत्वा तेषां जीवनम् उज्ज्वलं कुर्याम्।

वस्तुतः अहं एकस्मिन् ग्रामक्षेत्रे वसामि। एतत् स्थानं नगरात् दूरवर्ती अस्ति। एतस्य ग्रामस्य कल्याणार्थम् अनेकानि कार्याणि आवश्यकानि सन्ति। छात्र-जीवनेषु छात्राः न जानन्ति यत् भविष्यनिर्माणे किं उचितम्? यद्यपि ते ध्यानेन पठन्ति परिश्रमं कुर्वन्ति, परं भविष्यनिर्माणार्थं मूकाः भवन्ति। अहं अस्मिन् विद्यार्थी-जीवने प्रतिदिनं अस्य ग्रामस्य बालकान् धनं बिना पाठयामि। अहं युवकान् प्रेरयामि यत् ते स्वयोग्यतायाः परिचयं दत्वा प्रतियोगितायां प्रतियोगिनः भवेयुः निश्चितरुपेण ते प्रथमस्थानं लप्स्यन्ते।

अहं प्रार्थये, यत् मम इयं आशा पूर्णा भवेत्। एष ग्रामः प्रगतिशीलः भविष्यति। अत्र सर्वेजनाः अज्ञानधंकरात् परित्यज्य प्रकाशोन्मुखाः भविष्यन्ति।



महर्षिः दयानन्दः

सुमन बी.ए. तृतीय वर्ष

अस्माकं महाविद्यालयः 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालयेन' सम्बद्धोऽस्ति। अस्य विश्वविद्यालस्य नाम महर्षेः दयानन्दस्य नाम अधिकृत्य वर्तते। महर्षि दयानंदः अस्य भारतस्य महान् विद्वान्, वेदवेदाङ्गज्ञाता, संस्कृतज्ञः, परम-ब्रह्मचारी, शास्त्रार्थे पारंगतः, चिरत्रवान्, निर्भीकः, समाज-सुधारकः, करुणापरायण आसीत्। तस्य जन्म गुजरातप्रान्ते ब्रह्मणजातौ 1881 तमे संवत्सरे बभूव। प्रारंभे अस्य नाम मूलशंकर आसीत्। तिस्मन् काले भारतवर्षे धूर्तानां दुष्टानाम् अधार्मिकाणां राज्यम् आसीत्। प्रायः साधवः धर्ममार्गं परित्यज्य कुकर्म-संलग्नाः आसन्। नारीणां शोषणं सर्वत्र आसीत्। जनाः कुमार्ग-सेविनः आसन्।

एकदा दयानंद: दृष्ट्वान् यत् एको मूषिक: शिवमूतो अन्नं भक्षयित। तदा तेन प्रतिज्ञातं यत् अहं सत्यं शिवम् अवश्यं ज्ञास्यामि। सद्ज्ञानं प्राप्तये स: गृहं पित्यज्य विविधप्रदेशे अभ्रमत्। यत्र–तत्र विद्यास्थानं गत्वा शिवस्वरूपं ज्ञातुमं ऐच्छत्, परं स: सन्तुष्टो नाभवत्। पुनश्च स स्वामिनं गिरजानंदं गुरुं गत्वा ज्ञानम् अलभत्। ज्ञानं लब्ध्वा स: धर्मप्रचारार्थम् इतस्ततः अभ्रमत्। स: वैदिक-धर्मस्य प्रचारार्थं पर्याप्तं कार्यमरोत्। सर्वप्रथमम् आर्यसमाजस्य स्थापना अकरोत्। स: शास्त्रार्थे सर्व-पराजितं कृत्वा सुप्रसिद्धोऽभवत्। अनेके ज्ञानवन्तः पण्डिताः प्रतिभासम्पन्नाः धार्मिका तस्य शिष्या अभवन्।

विधवा-विवाह-समस्या, अछूत-समस्या, नारी-शोषण-समस्या तदा समाजे परिव्याप्ताः आसन्। एषु क्षेत्रेषु अद्वितीयं कार्यं कृत्वा समस्यानां समाधानं कृतवान्। 'सत्यार्थप्रकाशः' नामकं ग्रंथं लिखित्वा अखण्डभारतस्य उपदेशं तेन प्रस्तुतम्। तस्य व्यक्तित्वम् आकर्षकं आसीत्।

वयं महर्षि दयानदं विश्वविद्यालयेन सम्बद्धे महाविद्यालये पठामः अतः अस्माकं कर्तव्यं अस्ति यत् वयं तस्य महर्षेः उपदेशं, वा उद्देश्यं सफलीकर्तुंम कार्यं कुर्याम्।

चिरादपि वरं शिक्षा

मीनू

बी.ए. तृतीय वर्ष

आसीत् एकः अलसः बालकः। सः विद्यालयं न अगच्छत्। प्रतिदिनं सः उपवनम् अगच्छत् अखेलत् च। एकदा सः उपवने काकमेकम् अपश्यत्। ''अरे! काक! अत्राहम् एकाकी अस्मि। अहम् केन सह खेलिष्यामि, आगच्छ मया सह खेल'' इति सः काकम् अवदत्। किन्तु सः काकः 'मम कार्यमस्ति, अहं गच्छामि' इति उक्त्वा अगच्छत्।।

ततः सः बालकः सारमेयं, शुकम्, वानरं चापि खेलितुम आहृतवान्। परन्तु ते सर्वे काकवत् उक्त्वा अधावन्।

अन्ततः सः अलसः एकां पिपीलिकां दृष्ट्वा खेलितुं प्रार्थनाम् अकरोत्। पिपीलिकां प्रत्यवदत् ''इदानीमेव धान्यसंपादनाय गमिष्यामि। वर्षाकालः आगमिष्यति। मम अवकाशः नास्ति। अहं न त्वादृशी अलसा अस्मि। त्वमेव खेल'' इति।

ततः प्रभृति सः बालकः विद्यालयम् अगच्छत्। श्रद्धया स्वपाठान् अपठत्। क्रमशः सः पण्डितः च अभवत्।



-**राखी** बी.ए. तृतीय वर्ष

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानी न सेवते।
अनास्तिक श्रद्धान एतत् पण्डितलक्षणम्।
क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ही: सभ्यो मान्यमानिता।
यमर्थान् नापकर्षन्ति तै: पण्डित उच्यते।।
अश्रुतश्च समुत्रद्धो दरिद्रश्च महामनाः।
अर्थाश्रम्णा प्रेप्सुर्मूढ् इत्युच्यते बुधैः।।
स्वमर्थ य: परित्यज्य परार्थमनुतिष्ठित।
मिथ्या चरित मित्रार्थे यश्च मूढ् स उच्चते।।
प्रायेण श्रीमतां लोके भोक्तु शिक्तर्न विद्यते।
जीर्यन्त्यिप हि काष्ठानि दरिद्राणां महीयते।।

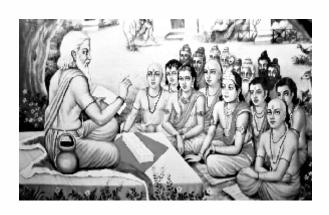
सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

-**ज्योति स्वामी** बी.ए. तृतीय वर्ष

किम अस्तितत् पदम् यः लभते इह सम्मानम् किम् अस्तितत् पदम् यः करोति देशानाम् निर्माणम्

> किम् अस्ति तत् पदम् यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम् किम् अस्ति तत् पदम् यस्य छायायाम् प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम् यः रचयति चरित्र जनानाम् 'गुरुः' अस्ति अस्य पदस्य नाम सर्वेषाम् गुरुणाम् मम शतशतप्रणाम्।।





सत्यमेव जयते नानृतम्

सविता बी.ए. तृतीय वर्ष

सते कल्याणाय हितं सत्यम्। मनसा-वाचा-कर्मणा-यथार्थ-चिन्तनं, यथार्थाभिभाषणं, यथार्थ-क्रियासम्पादनं तत्सत्यम्। अतएव त्रिकालेषु त्रिषु लोकेषु च यन्न बाधित भवति तत्सत्यम्। इत्येव सत्यस्य लक्षणम् अस्ति। सत्यमेव ब्रह्म, ब्रह्मैव सत्यम्। धर्मस्य आश्रयः सत्यम् भवति, सत्यम् एव जगतः मूलं, सत्यात् परं नास्ति कश्चित् पदम्।

सत्यं सदैव विकारं विनाशं रिहतं तत्त्वम् अस्ति। सत्यस्य मिहमा वेद-शास्त्रेष्विप बहुधा गीता। सत्यं सर्वदा श्रेयस्करं भवित। ये जनाः सत्यं वदन्ति सत्यम् आचरन्ति तेषां वाचि भद्रा लक्ष्मी निहिता भवित। ऋषिणां मुनीनाञ्च इदृशी एव वाणी भवित। ते यत् किञ्चिदिप ब्रुवन्ति तत् सर्वं सत्यं भवित। यः जनः सत्यमाश्रित्य यत्कर्म करोतितदेव तस्य कल्याणकरं भवित।

स्वर्गस्य सोपानम् सत्यम् वर्तते। लौकिक-पारलौकिक-सर्वाणि सुखानि सत्यमाश्रयन्ते। सत्येन धृता पृथिवी, सत्येन धृताः लोकाः। सत्य-समो धर्मः न अस्ति।

विजयस्य मूलं सत्यं भवित। यः जनः मनसा वाचा कर्मणा सत्यमाचरित तस्य जनस्य सर्वाः क्रियाः सफलाः भविन्त। विजयमि तस्य चरण-चुम्बनं करोति। यथा-श्रीरामचन्द्रः सत्येनैव विजयम् अलभत्। श्रीकृष्णः अपि सत्यस्य रक्षायै चक्रं दधारा इत्थं लोके जनाः सत्यमाश्रित्य नानाविधं सुखं विजयञ्च लभन्ते असत्यमाश्रित्य प्रारम्भे तु ते वृद्धिं प्राप्नुविन्त अन्ततः ते समूलाः नष्टाः भविन्त।

सत्यमेव मोक्षस्य स्वर्गस्य च द्वारं भवति। अतः मुमुक्षुः सत्येनैव मोक्षं परं पदं विन्दति। परब्रह्म परमेश्वरः अपि सत्यस्वरूपः।

संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्

पूनम बी.ए. तृतीय वर्ष

अस्मिन् संसारे अधुना अनेकाः भाषा प्रचिताः सिन्त भाषासु संस्कृत-भाषा प्राचीनतमा प्रमुखतमा सर्वोत्तमा च वर्तते। इममेव देशस्य विदेशस्य च सर्वासां भाषानां जननी वर्तते। भारतवर्षस्य पालि-प्राकृत-अपभ्रंशादयः भाषाः संस्कृतात् एव निसृताः सिन्त हिन्दी-बंगाली-गुजराती-मराठी-कन्नड्-तेलुगु-तिमल-इत्यादीनां आधुनिकी-भाषानां संबन्धः संस्कृतभाषया सह वर्तते। भारतवर्षस्य प्राचीनग्रन्थाः वेदाः, गीता, रामायणम्, महाभारतम् इत्यादयः अस्यां भाषायां एव



रचिता। कालिदास-भारिव-माघ-हर्षादयः महाकाव्यकर्ताः, भास-भवभूति-विशाखादत्तादयः नाटककाराः, सुबन्धु-दिण्ड-अम्बिकादत्तव्यासादयः गद्यकाराः संस्कृतभाषायां लिखितवन्तः। आदर्शे-सूक्तयः अस्यां भाषायामेव वर्तते। यथा-शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्, परोपकाराय सतां विभूतयः, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदिप गरीयसी, विद्याविहीनः पशुः, सत्यमेव जयते नानृतम्, अहिंसा परमो धर्म।

प्राचीनकाले एषा भाषा समस्ते भारतवर्षे प्रचलिता आसीत। विदेशेभ्यः आगत्य विद्वांसः अत्रैव संस्कृत-भाषायां ज्ञानं अर्जयन्ति स्म। एषा राष्ट्रभाषा, देशभाषा वा आसीत्। सर्वत्र एषा प्रसिद्धा लोकप्रिया च आसीत्। विज्ञान-क्षेत्रे, चिकित्सा क्षेत्रे गणित-क्षेत्रे, राजनीति-क्षेत्रे, न्याय-क्षेत्रे च अस्याः भाषायाः एव महान् सहयोगो वर्तते। आध्यात्मिक-ज्ञानं, धर्मज्ञानं, न्यायपरिज्ञानं च अस्यां भाषा वर्तते। संस्कृतस्य प्रचारो देशे विदेशे च वर्तते। भारतवर्षस्य सर्वेषु विश्वविद्यालयेषु अस्याः भाषायाः अध्ययनं अध्यापन च भवति। केचित जनाः एतां मृतभाषा इति कथयन्ति परं एतदसत्यं वर्तते। अत्र न कोऽपि संदेहो वर्तते यत् एषा आदर्शभाषाः अद्यापि विश्वस्य कल्याण कर्तुं योग्या वर्तते।

आरक्षणम्

मुनिया

बी.ए. तृतीय वर्ष

अस्मिन् भारतवर्षे अनेके धर्माः विविधाः जातयश्च सन्ति। प्राचीनकाले अत्र देशे चतुर्वर्णानां व्यवस्था आसीत्-ब्राह्मणाः, क्षत्रियाः, वैश्याः, शूद्राश्च। ब्राह्मणानां कर्तव्यानि पठनं, पाठनं, यजनं, याजनञ्च आसन्। क्षत्रियाणां कर्तव्यानि प्रजानां संरक्षणं, दानं यजनं शौर्यश्च आसन्। वैश्यानां कर्तव्यानि पशूनां संरक्षणं, व्यापारः, वाणिज्यं, कृषिश्च आसन्। शिल्पकार्यं सर्वेषां वर्णानाञ्च शुश्रूषणं शूद्राणां कर्तव्यानि आसन्। एषा वर्ण व्यवस्था गुण-कर्मानुसारेण विभाजिता आसीत्। कालान्तरे विविधाः जातयः उपजातयश्च प्रादुर्भूताः तथा च धर्मानुसारेण विभिन्नाः सम्प्रदायाः समुत्पन्ना अभवन्। परिणामस्वरूपेण भारतवर्ष जातीनाम् विशालः समुद्रोऽभवत्। काश्चन जातयः धन सम्पन्नाः जाताः ते सर्वेणाः कथिताः तथा च अर्थविपन्नाः जातयः दिलताश्च जाताः। अतएव निम्नजातीनां आर्थिकी विषमतां अपनेतुं आरक्षणस्य व्यवस्थायाः, प्रावधानम् कृतम्। 'आरक्षणम' शब्दः आंग्लभाषायाः 'रिजर्वेशन' – शब्दस्य पर्यायरूपेण प्रयुज्यते। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी–महोदयः निम्नवर्णानां आर्थिकरूपेण विपन्न–दशां दृष्टवां तेषां समुद्धतुं प्रयत्नं कृतवान्। तदानुसारेण भारतस्य स्वतन्त्रतानन्तरम् भारतीये संविधाने 14–18 तमे अनुच्छेदे अनुसूचित–जातीनां अनुसूचित–जन–जातीनाञ्च कृते दर्शवर्ष–पर्यन्तम् आरक्षण–व्यवस्थायाः प्रावधानं कृतम्। येन कारणेन ताः जातयः आर्थिक–रूपेण सम्पन्नाः भवेयुः। मण्डल–आयोगेन अन्य–निम्न जातीनां कृते अपि आरक्षणस्य प्रावधानं कृतम्। अतएव आरक्षणं पञ्चषिटः प्रतिशतं कृतम्। विविधेषु राज्येषु क्षेत्रमधिकृत्य आरक्षणं एतावदिधकं प्रतिशतं कृतम्। परिणामस्वरूपेण आरक्षणस्य क्षेत्र विस्तृतम् जातं। शिक्षाक्षेत्रे, सेवाक्षेत्रे, पदोन्नतिक्षेत्रे, निर्वाचनक्षेत्रे, मन्त्रिपदेषु च यत्र–तत्र आरक्षणस्य लाभः प्रवृद्धः। आरक्षणस्य लाभान् दृष्टवा जातिगताः प्रवतयः प्रवृद्धाः। इदानी आरक्षणश्च लाभान् प्राप्त्यर्थं जाट–जाति–आन्दोलनं हरियाणा प्राप्ते उत्तर–प्रदेशे च दृश्यते।



The path from dreams to success does exist. May you have the vision to find it, the courage to get on to it, and the perseverance to follow it.

Wishing you a great journey.

-Kalpana Chawla



Staff Editor
Mrs. Uma Sharma

CONTENTS

क्र.सं.	विषय
1.	Women Empowerment : Winds of Change
2.	नारी सशक्तिकरण
3.	Women Empowerment
4.	नन्हीं तित्ली की हँसी
5.	नारी सशक्तिकरण
6.	बेटियाँ
7.	बेटी बचाओ
8.	नारी
9.	बेटियाँ
10.	देवी न बनाओ तुम मुझको
11.	आधुनिक नारी अथवा नारी सशक्तिकरण
12.	नारी
13.	कन्या भ्रूण हत्या



शमपादकीय...

सफलता इब्ब्र का अर्थ है- मानवीय चेतना का उत्तरोत्तर विकास। सफलता जीवन से जुड़ा एक अहम् विषय है। हम सभी इसके स्वाब से पिर्चित है। हमारी सोच, हमारी मानिसक एवं भावानात्मक क्षमता तथा हमारी बौद्धिक कुइालता ही हमें सफल बनाती है। इसके अभाव में असफलता हाथ लगती है। वह कौन-सी वस्तु है जो हमें सफलता के शिखर पर आरूढ़ करती है। स्वामी विवेकानंब जी ने कहा है-''हर व्यक्ति के भीतर नैसर्गिक क्षमता छिपी होती है और मौलिक प्रतिभा भी छिपी होती है। यिंद इसे सही ढंग से सही वक्त पर पड़्यान लिया जाए तथा इसके विकास के लिए उचित प्रयत्न किये जाए तो सफलता को सहम ही पाया जा सकता है।''

अर्थात् सफलता पाने के तीन बीज मंत्र है-क्षमता की पह्यान व उसका विकास। बृढ़ विकास। जी तोड़ मेहनत।

> श्रीमती उमा शर्मा कॉमर्स विभाग



शास्त्रीय गायन में महिला

Dr. Richa

Asstt. Professor, Deptt. of Music Vocal

वैदिक काल से ही माना जाता है कि मानव और संगीत का संबंध इतना गहरा है कि जो उसके जन्म के साथ ही चला आ रहा है। प्राचीन साहित्य के उल्लेखों को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा रहा है कि जहाँ तक धार्मिक अवसर का संबंध था, ब्राह्मण एवं क्षत्रिय दोनों ही यज्ञ में भाग लेते थे। सामगान जैसे धार्मिक अवसर तथा अन्य यज्ञ एवं धार्मिक संस्कारों के अवसरों से लेकर सामाजिक अवसरों तक में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैदिक समय में यज्ञ के अवसर पर सामगायक पुरूषों के साथ-साथ उनकी स्त्रियाँ गायन-वादन करती थीं। संगीत संबंधी सभी अवसरों पर महिलाओं का विशेष सहयोग रहता था। 'शतपथब्राह्मण' तैत्तिरीय संहिता में सामगान स्त्रियों का विशेष कार्य बताया गया है तथा उस समय भी संगीत स्त्रियों का विशिष्ट गुण माना जाता था। महाभारत काल में भी स्त्रियों की संगीत में विशेष भूमिका रही है, जिसमें क्षत्रिय वर्ग की स्त्रियों द्वारा विराट पर्व में नृत्य कला की प्रस्तुतियाँ एवं ब्राह्मण कुल व स्त्रियों के सामगायन आदि का उल्लेख मिलता है। कृष्ण का अत्यन्त प्रिय गान छालिक्य गान था। विष्णु पुराण में ऐसा पाया जाता है कि सत्यभामा, रेवती के अलावा सोलह सौ रमणियां भी श्री कृष्ण के साथ थीं। यह उल्लेखनीय है कि प्रथम और द्वितीय शताब्दी में कई नट-नटनियों की मूर्तियाँ मिलती हैं जिससे यह प्रमाणित होता है कि उस काल में भी गीत, वाद्य, नृत्य आदि में महिलाओं का योगदान था। मुगलकाल में मोहम्मद शाह रंगीले के दरबार में गायिकाएँ और नर्तिकयाँ गायन, वादन, नृत्य और शास्त्र की विधिवत् शिक्षा ग्रहण करती थीं। उस समय में तानसेन की पुत्री सरस्वती बड़ी कलाकार हुई हैं, जिन्होंने राग मेघ मल्हार गा कर दीपक राग की ज्वाला को शांत किया। मध्यकाल में मीराबाई का नाम भी **भक्ति कवि संगीत** में उच्च शिखर पर माना गया है। आधुनिक समय में डॉ॰ सुमित मुटाटकर, बिजनवाल, कमल केलकर एवं सुनंदा पटनायक, सुभद्रा चौधरी, मालिनी राजुरकर, मीराराव के नाम उल्लेखनीय हैं। इन गायिकाओं ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अच्छी ख्याति अर्जित की। इतिहास का कोई कालखंड ऐसा नहीं है जब महिलाओं ने अपनी कलाप्रियता एवं सूजन कौशल का परिचय न दिया हो। स्त्री और कला एक दूसरे की पर्यायवाची हैं। स्त्री सृष्टि की वह सुंदर रचना है जिसका संबंध ललित कलाओं से होना स्वाभाविक है। गायन के क्षेत्र में महिला कलाकारों ने क्रियात्मक संगीत के साथ-साथ नित्य नवीन रागों का निर्माण एवं गायन शैलियों में नए जोड़ का समावेश कर अनन्त विस्तार किया। शास्त्रीय संगीत की अनमोल गायन परम्परा को आधुनिक काल में भी अनेक संगीत साधिकाओं ने अपनी योग्यता और सृजन क्षमता से भारतीय संगीत को अति उच्च स्थान पर पहुँचाया है। इनमें कुछ नाम हैं: - किराना घराने की - गान - कोकिला हीराबाई बडोदकर, जयपुर घराने की - मोगूबाई कुर्डीकर, मिल्लिका-ए-गजल बेगम अख्तर, गंगूबाई हमल, डॉ० प्रभा आगे, किशोरी अमोनकर, परवीन सुल्ताना और महान स्वर कोकिला लता मंगेश्कर । इन सभी गायिकाओं ने अपने आपको निपुण बनाने के लिए कठोर साधना की और शास्त्रीय गायन की समृद्ध परम्परा को आगे बढ़ाने में विशिष्ट भूमिका निभाई।



''नन्हीं परी''

अनु बी.कॉम. तृतीय वर्ष

कहाँ हँसता हुआ मेरा बचपन गया, माँ की गोदी में सोती वो नन्हीं छाया. तेरे आँगन की गृडिया, मैं नन्हीं परी, तेरे आँचल की ममता विदा ले चली। गुड्डे-गुडियों की शादी, वो सावन के झूले, तेरे हाथों की लोरी, वो मिट्टी के चूल्हे, लड़ना उसी भैया से, जिसके हाथों में पली, तेरे आँगन की गुडिया मैं नन्हीं परी, तेरे आँचल की ममता विदा ले चली। मैं अमानत थी माँ. तेरे घर की सदा. अपने हाथों से तू मुझको कर दे विदा, बैठ डोली में मैं भाई के कांधे चली, तेरे आँगन की गुड़िया मैं नन्हीं परी, तेरे आँचल की ममता विदा ले चली। छूटे माता-पिता, नये रिश्ते मिले, रंग फूलों के संग कई कांटे खिले, कभी बेटी बनी, कभी पत्नी बनी, मीठे रिश्ते में मैं फिर जीने लगी. नए रिश्तों से फिर मेरी कोख पली. उसमें पलने लगी एक नन्हीं कली, माँ बनने का सपना मैं बनने लगी, मेरे आँचल में उतरेगी एक नन्हीं परी. देखते-देखते खूनी आँधी चली कोख में ही कटी मेरी नन्हीं कली, चीखते-चीखते चीखें सुनने लगी, मरते-मरते जुबां मेरी कहने लगी, कोई रोको उसे, वो है छाया मेरी,

करूण विनती सुनो, भर दो झोली मेरी, गर्भ में कब तक यूं ही मारोगे तुम, नारी-सृजना है, कब पहचानोगे तुम ? सृष्टि बांझ बनी, यूं ना दो तुम बिल, चलते-चलते यूँ बोली मेरी लाडली, तेरे आँगन की गुड़ियां मैं नन्ही परी, तेरे आँचल की ममता विदा ले चली।

नारी

चारू ग्रोवर बी.कॉम. प्रथम वर्ष

जीने का अरमान है नारी हम सबका सम्मान है नारी नारी नहीं तो जग सुना है कण-कण में विद्यमान है नारी तुम इसको निर्बल न समझो गीता फौगाट जैसी पहलवान है नारी निर्बल को सबल करती यह प्रबल स्मृति की आहवान है नारी तन भी उजला मन भी उजला हम सबका भगवान है नारी इसको तुम अज्ञान न समझो हम सबसे सुजान है नारी कंचन सी काया है जिसकी नभ से भी महान् है नारी इसको तुम अंकिचन ना समझो जीवन का वरदान है नारी रास्ते का पाषाण ना समझो जन-जन का अभियान है नारी चुभन भरी है जीवन में सारी रचनाओं में प्रच्छत्र है नारी।



Women Empowerment

Diksha Ahuja B.Com. I

Women Empowerment means emancipation of women from the vicious grips of social economical, political, caste and gender-based discrimination. It means granting women the freedom to make life choices. Women Empowerment does not mean 'deifying women' rather it means replacing partiarchy with parity. In this regards there are various facets of women empowerment such as given were under:-

- V **Human Rights OR Individual Rights :-** A women is a being with senses, thoughts she should be able to express them freely.
- V **Social Women Empowerment :-** A critical aspect of social empowerment of women is the promotion of gender equality. Gender equality implies a society in which women and men enjoy the same opportunities, rights of life.

Legal Women Empowerment :- It suggests the provision of an effective legal structure which is supportive of women empowerment. It means addressing the gaps between what the law prescribes and what actually occurs.

- V The Position of Women In India: The position enjoyed by women in the Rigvedic period deteriorated in the later vedic civilization. Women were denied the right to education and remarriage. Many social evils like child marriage and dowry system surfaced and started to engulf women. Dowry became an institution and Sati Pratha became prominent.
- V **Current Scenario On Women Empowerment :-** Based on the ideas championed by our founding fathers for women empowerment may social, economic were incorporated in the Indian constitution. Women in India now participate in areas such as education, sports, media, art and culture and technology. Even after almost seven decades of Independence women are still subjected to discrimination in the social, economic and educational field.

Power of Women

Komal B.Com. I (Pass)



Women empowerment means to make women physically, mentally, economically, socially strong. It helps them to take their own decisions liberally. Women empowerment is very necessary to make the bright future of the family, society and country with the slogan of woman empowerment the question arise that "Have Woman become really strong". Many programmes have been implemented and run by government such as International Woman Day, 'Mother's Day', 'Beti



Bachao Beti Pdhao' etc. in order to bring awareness in the society about the true rights and values of the women. These programmes have been helpful to raise the status of women in society. Due to these programmes, birth rate of girls has also increased. It was approximately 85 to 100 Boys. Now it has reached above 90. It's also a great achievement.

The most famous saying by Jawaharlal Nehru is "To awaken the people it is the women who must be awakened. Today we can see women almost in every field of life. 108th constitutional amendment Bill was passed to reserve one-third of the seats for women only in the lok sabha to make them involved in every field. In other fields also the seats for women have seen reserved for their active participation. In the end we can say women empowerment has the power to change many things in the society and country. In the few last decades, India has witnessed some changes in the status and role of women in our society.

Empowered Women

Tanya Katyal B.Com. Ist Year

When women are the advisor, the words of creation don't take the advice till they have persuaded them selves that it is just what they intended to do; then they act upon it and if it succeed, they give the weaker vessel half the credit of it, if it fails they generously give herself the whole.

Why Women Empowerment:-

Women constitute almost 50% of the world's population. As per their Social Status women are not treated as equal to men in many places especially in the cast, though in the western countries women's are treated at par with mens in most of the fields. The Global conference on women empowerment (1988) highlighted women empowerment as the best way of making partners in development. The development of women and children in rural areas program was initiated as a sub scheme of the nation wide poverty



alleviation program that is the integrated ruler Development program. Women empowerment should focus on the holistic the manifastation of women hood and the feminine with a goal to bring about a perfect balance between the masculine and feminine of nature irrespective of gender.

Importance of Women Education in Women Empowerment:

The concept of women empowerment was introduced at the international women conference at NAROIBI in 1985. Education is the milestone of women empowerment because it enable them to response to the challanges, to confront their traditional role and change their life. So we can't neglect the importance of women education. In reference to women empowerment, India is supposed to become a super power of developed country by 2020.



Because I Am A Girl, I Must Study

Riya Malhotra B.Com. II

A father asks his daughter:

Study? Why should you study?

I have sons aplenty who can study

Girl, Why should you study?

The Daughter tells her father:

Since you ask, here's why I must study

Because I am a girl, I must study

Long denied this right, I must study

For my dreams to take flight, I must study

Knowledge brings new light, So I must study

For the battles I must fight, I must study

Because I am a girl, I must study

To avoid destitution, I must study

To win independence, I must study

To fight frustration, I must study

To find inspiration, I must study

Because I am a girl, I must study

To fight men's violence, I must study

To end my silence, I must study

To challenge patriarchy, I must study

To demolish all hierarchy, I must study

Because I am a girl, I must study

To know right from wrong, I must study

To find a voice that is strong, I must study

To write feminist songs, I must study

To make a world where girls belong, I must study

Because I am a girl, I must study.



Women

Himani

B.Com. IInd (Pass)

You are beautiful because you fight like a girl....

This is for girls who stay up all night,

This is for you who are willing to fight,

For hidden fears, Hurt, pain and tears,

Under the smiles, laughs and giggles we hear,

Let your hair down, straight or curls

You are beautiful because you fight like a girl,

For girls who wears start skirts,

And their heart on their sleeve,

For girls who know how difficult,

It is to believe,

The girls who scream and cry,

Into their pillows and tell them their goals,

For girls who have a secret,

But can't tell a soul,

Let your eyes be your diamond,

Make them your pearls,

You are beautiful because you fight like a girl

For girls who have made mistakes,

And have regrets galore,

Because you fight like a girl

For the girls who love with all their heart,

Although it sometimes gets broke,

To who think it's over,

To real girls, to all girls,

Who have tears to soak.

You throw, you pick up, and full,

But just tell the world,

"I'm beautiful, Because I fight like a girl."

HHHH



में नारी

बी.ए. द्वितीय वर्ष

में नारी, सदियों से, स्व-अस्तित्व की खोज में फिरती हूँ मारी-मारी कोई न मुझको माने जन, सब ने समझा व्यक्तिगत धन जनक के घर में कन्या धन दान दे मुझको किया अर्पण जब जन्मी, मुझको समझा कर्ज, दानी बन अपना निभाया फर्ज साथ में कुछ उपहार दिए, अपने सब कर्ज़ उतार दिए सौंप दिया किसी को जीवन कन्या से बन गई पत्नी धन समझा जहाँ पैरों की दासी, अवांछित ज्यों कोई खाना बासी जब चाहा मुझको अपनाया, मन न माना तो ठुकराया मेरी चाहत को भूला दिया कांटों की सेज पे सुला दिया मार दी मेरी हर चाहत, हर क्षण ही होती रही आहत माँ बनकर जब मैंने जाना, थोड़ा तो खुद को पहचाना फिर भी बन गई मैं मातृ धन नहीं रहा कोई खुद का जीवन चलती रही पर पथ अनजाना, बस गुमनामी में खो जाना कभी आई थी सीता बनकर, पछताई मृगेच्छा कर कर लांघी क्या इक सीमा मैंने हर युग में मिले मुझको ताने राधा बनकर मैं ही रोई, भटकी वन-वन खोई-खोई कभी पांचाली बनकर रोई, पतियों ने मर्यादा खोई दांव पे मुझको लगा दिया अपना छोटापन दिखा दिया में रोती रही चिल्लाती रही. पतिवृता स्वयं को बताती रही

भरी सभा में बैठे पाँच पति, की गई मेरी ऐसी दुर्गति

नहीं किसी का पुरूषत्त्व जागा बस मुझ ही को कलंक लागा फिर बन आई झाँसी रानी, नारी से बन गई मर्दानी अब गीत मेरे सब गाते हैं, किस्से लिख-लिख के सुनाते हैं मैंने तो उठा लिया बीडा पर नहीं दिखी मेरी पीडा न देखा मैंने स्व-यौवन, विधवापन में खोया बचपन न माँ बनी मैं माँ बनकर, सोई कांटों की सेज जाकर हर युग ने मुझको तरसाया भावना ने मेरी मुझे बहकाया कभी कटु कभी मैं बेचारी हर युग में मैं तड़पी नारी।

Remember Woman

Deepika Khurana B.Com. I

Remember, Woman, you were born as Life giver, miracle creator, magic maker You were born with the heart of a thousand mother open and fearless and sweet.

You were born with the fire of Queen & Conquerors warrioress blood you bleed.

You were born with the wisdom of sages & shamas no wound can you not heal.

You were born the teller of your own table before none should you kneel.

You were born with an immeasurable soul reaching out past infinity.

You were born to desire with passion, abandon, and to name your own destiny.

Remember, Woman, remember you are more than you see Remember, Woman, remember you are loved endlessly.

Remember, Woman, your power and grace, the depth of your deep sea heart. Never forget you are woman, divine



मैं स्त्री हूँ

सरयू

बी.कॉम. द्वितीय वर्ष (वोकेशनल)

मैं स्त्री हूँ में स्त्री हूँ मैं नारी हूँ मैं कली हूँ मैं फुलवारी हूँ मैं दर्शन हूँ मैं दर्पण हूँ मैं नाद हूँ मैं ही गर्जन हूँ मैं बेटी हूँ मैं माता हूँ मैं बलिदानों की गाथा हूँ, मैं श्री मत्त भगवत गीता हूँ मैं द्रौपदी हूँ मैं सीता हूँ पुरूषों की इस दुनिया ने मुझे कैसी नियती दिखलायी। कभी जुए में हार गए कभी अग्नि परीक्षा दिलवायी कल युग हो या सतयुग हो इल्जाम मुझ पर ही आता है क्यों घनी अंधेरी सडकों पर चलने से मन घबराता है मैं डरती हूँ, मैं मरती हूँ जब सफर अकेले करती हूँ, डर का साम्राज्य वरता है, कोई साया पीछा करता है, मेरी मुट्ठी बंध जाती है, दिल की धडकन बढ जाती है है तरल पसीना माथे पर, दिल में मेरे घबराहट है। जाने ये किसका साया है, जाने ये किसकी आहट है? अंधेरे में उन हाथों ने मुझको बाहों में भींच लिया, एक ने मुँह पर हाथ रखा और एक ने आँचल खींच लिया, नारी के सम्मान को मिलकर तार-तार सा कर डाला, मर्यादा के आँचल को फिर जार जार सा कर डाला, मारा है मुझको, पीटा है, बालों से मुझे घसीटा है, फिर बर्बरता की उन सारी सीमाओं को तोड दिया, उन घनी अंधेरी सड्कों पर फिर मुझे तड़पता छोड़ दिया सन्नाटे में चीख रही थी खून से लथपथ वो काया, सबने तस्वीरें खींची,

कोई मदद को आगे ना आया कोई मदद करो कोई मदद करो ये चीख-चीख कर चीख भी मुझसे रूठ गई जब होश में आयी, इस समाज की बातें सुनकर टूट गई। परिवार की बदनामी होगी सब मुझे यही समझाते हैं, ये नई उम्र के लड़के हैं, थोड़ा तो बहक ही जाते हैं। अरे ! भूल जाओ जो हुआ उसे, ये लड़के बच ही जाएगें, तुम लड़की हो दुनिया वाले तुम पर ही प्रश्न उठाएगें, क्यों कोई नहीं था साथ में. क्यों निकली अकेली रात में. क्या मेकअप था, क्या गहने थे, क्या छोटे कपड़े पहने थे। ये प्रश्नों की भूलभुलैया में सच्चाई कहीं खो जाती है, सब भूल जाओ कहने वालों, क्या तुम्हें शर्म नहीं आती है? कैसे भूलूं उन रातों को, कैसे भूलुं उन रातों को, मुझको छूते उन हाथों को, उन सारी तकलीफों को, कैसे भूलूं उन चीखों को। मेरे शरीर की चोट तो बस कुछ दिन में ही भर जाएगी, लेकिन मन की पीडा सारी उम्र साथ रह जाएगी, सब भूल जाओ कहने वालों, याद रखो ये आखिरी गलती आपकी भी हो सकती है। कल सडक पे बेस्ध बहन या बेटी आपकी भी हो सकती है। और इस अहसास से बढकर कोई दर्द नहीं हो सकता है जो नारी का अपमान करें वो मर्द नहीं हो सकता है। जब सजा मौत की लागू होगी सारे दोषी लड़कों पर, फिर कोई लड़की नहीं मिलेगी खून से लथपथ सड़कों पर। तो आओ प्रण लो मेरे साथ ये आहान करो अपनी मर्यादाओं को समझो और नारी का सम्मान करो।



आबरू इतनी सस्ती?

काजल

बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

नारी तू शिकारी कहाँ, जो उड़ान-ए-परिंदा रोक दे नारी तू बलात्कारी भी नहीं, जो बदनामी अग्नि में झोंक दे तू नारी है, तू उड़ारी है, करूणा ममता पे बलिहारी है माना दिल्ली दिल वालों की बस्ती, दिल, आबरू, जान, बडी ही सस्ती। चाँद पे पहुँच के इंतजार क्यूं ? बचाने कोई न आयेगा न अवतार देव न कोई फरिश्ता, कलयुग तो रंग दिखायेगा तभी डरे युवा तेरी बरबादी से, क्या सही मायने शिक्षा आजादी के ? चृड़ियाँ थमा के अपनी सरकार को, संभाल ले तलवार तू जिनका कत्ल हुआ कोख में, कहे रूह उनकी कर ऐसा वार त् धर रूप दुर्गा चंडी का, कर दैत्यों का संहार तू शिकारी का दंड शिकार क्यूं भरे? बेटियों से जमाना इतना क्यूँ डरे ? शिकार को नहीं, शिकारी को है मारना नारी को नहीं, बलात्कारी को है ताड़ना ''बलात्कार'' बनके रह जाये काला इतिहास बेबस, नपुंसक, अंगहीन कर तिरस्कार करो दे के फांसी धनजंय जैसे, न पल में इनका उद्धार करो हर सांस करो बद से बदत्तर, जीना इतना मुहाल करो तिल-तिल करके मारो. लगे जीवन गाली न पापी एकदम से हलाल करो।

महिला सशक्तिकरण

अंजलि

बी.कॉम. प्रथम वर्ष

नारी सशक्तिकरण के नारे के साथ एक प्रश्न उठता है कि ''क्या महिलाएँ सचमुच में मज़बूत बनी हैं?'' ''क्या उसका लंबे समय का संघर्ष खत्म हो चुका है''?

राष्ट्र के विकास में महिलाओं की सच्ची महत्ता और अधिकार के बारे में समाज में जागरूकता लाने के लिए मातृ दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कई कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाये जा रहे और लागू किए गए हैं। महिलाओं को कई क्षेत्र में विकास की ज़रूरत है। अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है। जहाँ महिलाएँ अपने परिवार के साथ ही बाहरी समाज के भी बुरे बर्ताव से पीड़ित हैं। भारत में अनपढ़ों की संख्या में महिलाएँ सबसे अव्वल हैं। नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आएगा जब भारत में भी उन्हें अच्छी शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अच्छी शिक्षा दी जाए और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वह हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर जीवन व्यतीत कर सकें।

भारत में महिलाएँ हमेशा परिवार को कलंक से बचाने हेतु किए गए वध के विषय के रूप में होती है और उचित शिक्षा और आज़ादी के लिए उनको कभी भी मूल अधिकार नहीं दिए गए। ये पीड़ित हैं, उन्होंने पुरूषवादी देश में हिंसा और दुर्व्यवहार को झेला है। भारत सरकार के द्वारा शुरूआत की गयी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय मिशन के अनुसार 2011 की गणना में इस कदम की वजह से कुछ सुधार आया। इससे महिला लिंगानुपात और महिला शिक्षा दोनों में बढ़ोतरी हुई। आर्थिक भागीदारी, उच्च शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य के द्वारा समाज में महिलाओं की स्थित में सुधार लाने के लिए भारत में कुछ ठोस कदम की ज़रूरत है। इसे आरम्भिक स्थिति से निकालते हुए सही दिशा में तेज गित से आगे बढ़ाया जाए।



गांधी जी सत्याग्रह तथा निष्क्रिय विरोध का विश्लेषण

Mrs. Krishna Assistant Professor of History

शोध सार :

गांधी जी का सत्य में अटूट विश्वास था। सत्याग्रह का सिद्धान्त उनके इसी विश्वास का परिणाम है, क्योंकि सत्य ही ईश्वर है और सर्वोच्च वास्तविकता है, अत: सत्य पर किए गए आघातों का डटकर मुकाबला किया जाना चाहिए। सत्याग्रह का अर्थ यह भी है, 'सत्य के लिए आग्रह अर्थात् नैतिक दबाव।' सत्याग्रही अहिंसा के द्वारा सत्य की खोज के अनथक प्रयत्न करता है। अन्याय से लड़ने के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया। सत्याग्रह का अर्थ है – सभी प्रकार के अन्याय और शोषण के विरूद्ध शुद्धतम आत्मा की शक्ति का प्रयोग। सत्याग्रही अपनी आत्मा की शक्ति द्वारा अन्याय से लड़ना चाहता है। आत्मा की शक्ति प्यार की शक्ति है। इसका घृणा और ईर्घ्या से कोई मेल नहीं है। सत्याग्रह का अर्थ विरोधी को दबाना नहीं, अपितु उसका हृदय–परिवर्तन करना है। सत्याग्रही अपने विरोधी की आत्मा को बदलने की कोशिश करता है। गांधी जी के शब्दों में, ''सत्याग्रह का अर्थ है विरोधी को पीड़ा देकर नहीं बल्कि स्वयं तकलीफ उठाकर सत्य की रक्षा करना।''

मुख्य-शब्द :

सत्याग्रह, निष्क्रिय, हड़ताल, सामाजिक बहिष्कार ।

परिचय :

सत्याग्रह व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह उसको राज्य से प्राप्त नहीं हुआ है, बिल्क उसकी आत्मा से जुड़ा हुआ है। ये केवल अधिकार ही नहीं है, अपितु एक पिवत्र कर्तव्य भी है। यदि सरकार जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करती और क्रूरता एवं असत्य का समर्थन करती है तो उसका विरोध करना मनुष्य का परम कर्तव्य है। सत्याग्रही को सभी प्रकार के कष्ट सहने को तैयार रहना चाहिए। सत्याग्रह और स्वार्थ एक साथ टिक नहीं सकते। स्वयं कष्ट भोगना तथा अन्याय का विरोध करना ही सत्याग्रह है। इसका प्रथम और अन्तिम सिद्धान्त यही है कि विरोधी को पीड़ा देकर नहीं, स्वयं कष्ट उठाकर सत्य की रक्षा करना। सत्याग्रह की खूबी इसमें है कि सत्याग्रही सब तरह के दु:खों को हंसी-खुशी से सहन करें। वे जितना अधिक दु:ख सहते हैं, उतनी ही उनकी परीक्षा होती है। जैसे सोना आग में तपकर अधिक शुद्ध होता है, वैसे ही सत्याग्रही भी कष्ट सहकर शुद्ध होता है। कष्ट मानव जाति का चिह्न है। यह एक शाश्वत नियम है। माता कष्ट सहती है, तािक बच्चा जीवित रह सके। कष्ट से जीवन शुद्ध होगा, उन्नित अधिक होगी। आत्म-पीड़न सत्याग्रह के सिद्धान्त का आधार है। इसके निम्निलिखित तीन परिणाम होते हैं:-

- 1. यह कष्ट सहने वाले को पवित्र बना देता है।
- 2. यह अनुकूल जनमत तैयार करता है।
- 3. यह शोषणकर्ता की आत्मा को सीधे अपील करता है।



मुद्रण व प्रकाशन के संदर्भ में भारतीय संगीत

डॉ० ऋचा भटनागर

सहायक प्राध्यापिका, संगीत विभाग

सारांश

भूमंडल पर विद्यमान कलाओं और संस्कृति को विकसित रूप प्रदान करने के लिए ग्रन्थों, पुस्तकों, पित्रकाओं व समाचार-पत्रों आदि की आवश्यकता होती है। किसी भी कला को नये रूपों में निखारने व संवारने के लिए नित्यप्रति के प्रयत्नों से प्राप्त होने वाले पिरणाम इन्हीं माध्यमों द्वारा सुरक्षित रखे जा सकते हैं जो भावी पीढ़ियों, जिज्ञासुओं व छात्र वर्ग का मार्गदर्शन करते हैं। भावी पीढ़ियां इनके आधार पर शिक्षा ग्रहण करती हैं व शोध कार्य करती हैं। विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम व शोधार्थियों के लिए सूचना इकट्ठा करने का मुख्य स्त्रोत ये माध्यम ही हैं।

मुद्रण व प्रकाशन के आविष्कार ने एक संदेश व एक सोच को अनेक ग्राहियों तक पहुंचाने का मार्ग खोल दिया है। यह जनसंचार के माध्यमों में एक अत्यन्त सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम है, जिसमें मुख्य रूप से मुद्रित सामग्री का समावेश किया जाता है। जैसे-पुस्तकें, पित्रकाएं, समाचार-पत्र आदि मुद्रित सामग्री के अन्तर्गत आते हैं अर्थात वे चीजें जो मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रैस) में छपती हैं, मुद्रित माध्यम कहलाती हैं। ये मुद्रित माध्यम प्राचीन, मध्य व आधुनिक काल में संगीत को बखूबी समझने, ज्ञान भंडार में वृद्धि व भारतीय संगीत में आए परिवर्तनों को जानने के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए हैं।

मुख्य शब्द : संगीत, मुद्राप प्रमुशन, समाचार गुरू पत्रिक्याँ पुस्तकें । विभिन्न मनोवैज्ञानिक पक्षों में संगीत

डॉ० ऋचा भटनागर

सहायक प्राध्यापिका, संगीत विभाग

शोध-आलेख सार

मानव जीवन एवं उसकी इन्द्रियाँ तथा अन्य अवयव ही बाह्य व भीतर के वातावरण से ओत-प्रोत होकर एक विशेष 'मनस' का निर्माण करते हैं। संगीत व अन्य कलाएँ मानव के व्यवहार से उत्पन्न संवेगों को प्रभावित करती हैं। मानव जीवन की यह समस्त क्रियाएँ व तथ्य ही उसका मनोविज्ञान भी है अर्थात् उसका प्रकट व्यवहार उसके आचरण का अहम प्रतीक है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों व प्रकृति से संबंधित ऋतुओं व उत्सवों के सभी पक्षों में संगीत व मनोविज्ञान साथ-साथ चलते हैं। धर्म ग्रन्थ व संघर्ष के प्रत्येक मनोविज्ञान में संगीत की सार्थकता बनी रही है तथा इसकी चर्चा के बिना मानव इतिहास या उसके विकास का कोई भी पक्ष अछूता नहीं है। संवेदना, संवेग, ध्यान, रूचि, प्रेरणा जैसी विभिन्न मनोवैज्ञानिक दशाओं में संगीत की उपस्थित व प्रधानता अनिवार्य है। संगीत का भाव से ही नहीं, विचार से भी नाता है। यदि 'भाव' संगीत की अर्जित पूँजी है तो विचार संगीत की अतिरिक्त धरोहर है। इन दोनों से ही संगीत को स्मृति व कल्पना का विवाद व उसके सद्गुण प्राप्त होते है। संगीत एक वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक प्रमाण है, जिसमें काल, समय व प्रहर के समस्त ऐतिहासिक, दार्शनिक पक्ष विद्यमान हैं। संगीत द्वारा परम्पराओं, घरानों व गायन-वादन की शैलियों का पोषण होता है तथा उनकी परिपक्वता संगीत में निहित माधुर्य व मनोविज्ञान के ही अंग हैं।

मुख्य-शब्द: मनोविज्ञान, संगीत, संवेदना, व्यवहार, संवेग, प्रेरणा।



स्वतन्त्रता आन्दोलन : हरियाणा की भूमिका का अध्ययन

Dr. Neelan

Assistant Professor Deptt. of History

हरियाणा सोनीपत से हाँसी तथा गुड़गाँव, दिल्ली से जगाधरी तक था। 600 ई० पूर्व से 1000 ई पू० तक हरियाणा में बुद्ध धर्म प्रधान रहा। गुड़गाँव का अहखां गाँव 500 साल तक बुद्ध धर्म का केन्द्र रहा। इसी प्रकार रोहतक – दिल्ली मार्ग पर एक विशाल बुद्ध विहार था। हरियाणा की जनसंख्या बहुत कम थी तथा यहाँ के लोग शाकाहारी थे। बौद्ध काल के बाद हर्ष काल, मुस्लिम काल, मुगल काल और अंग्रेजी काल के दौरान हरियाणा को कई आक्रमणों तथा राजाओं के अहंकार का शिकार होना पड़ा।

जब मुगलों से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सत्ता हथियाई और उसका साथ देने वाले अधिकारियों को जागीरदार बना दिया गया। अनेक छोटे-छोटे राज्य हरियाणा क्षेत्र में स्थापित हुए ; जैसे - दुजाना, झज्जर, बहादुरगढ़, फरूखनगर, बल्लभगढ़, लौहारू व फिरोजपुर झिरका आदि। इसका कुछ भाग पटियाला, नाभा व जीन्द के राजाओं को दिया गया। झज्जर तथा दुजाना की रियासतें बहुत बड़ी थीं। पहली नारनौल तक तथा दूसरी हाँसी तक फैली हुई थी।

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद 1848 में अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार कर लिया। पंजाब का हरियाणा क्षेत्र से कोई लगाव नहीं था। रणजीत सिंह के बाद उनके करीबी श्याम सिंह अटारीवाल ने लाहौर को अंग्रेजों से वापिस लेने की कोशिश की परन्तु नाकामयाब रहे।

सर्वप्रथम 1768 के आस-पास एक अंग्रेज सैनिक अधिकारी जार्ज टॉमस ने हाँसी और झज्जर के बीच अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया, बाद में उसने पानीपत, करनाल और गोकलगढ़ पर भी आक्रमण किए, परन्तु 1768 के बाद यहाँ मराठाओं का अधिकार हो गया। लेकिन इसी बीच जार्ज टॉमस ने गुड़गांव को लूट लिया और हाँसी में अपना केन्द्र बना कर किला बनाया। बाद में उसने फतेहाबाद को भी जीत लिया।

संगीत : धर्म के पूरक के रूप में

डॉ० ऋचा भटनागर

सहायक प्राध्यापिका, संगीत विभाग

शोध सारांश

संगीत लिलत कलाओं में सर्वोत्तम है। यह एक ऐसी अमूर्त सौंदर्य की प्रतिष्ठा करती है, जिसका प्रभाव विश्वव्यापी है। नाद ब्रह्म स्वरूप है। सृष्टि का आरम्भ नाद से माना जाता है, जो ब्रहमांड व्यापी है। संगीत एक ऐसी दिव्य एवं अलौकिक शिक्त है, जिसके द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। संगीत आनंद की अनुभूति है एवं धर्म सत्य की उपलब्धि है। संगीत के अलावा ऐसी कोई भी कला नहीं है जो हमें ईश्वर के निकटतम ले जाए। धर्म चाहे कोई भी हो, ईश उपासना प्रत्येक धर्म का लक्ष्य है। प्रत्येक धर्म में मंत्रों, वाणियों, हिद्सों, प्रवचनों, स्तुतियों में संगीत को स्थान मिला है। सभी धर्मों तथा सन्त महापुरुषों ने संगीत को परम-पवित्र, कल्याणकारी तथा ईश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन माना है। वैदिक काल में जहां संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता था, वहीं दूसरी ओर जनरंजन करना भी इसका उद्देश्य था। संगीत अपनी आध्यात्मिकता सिहत आज भी मानव को शांति प्रदान करता है।

मुख्य-शब्द: संगीत, धर्म, परमात्मा, संबंध।



E-Commerce in India - An Emerging Trend

Pooja Chawla

Assistant Professor and Head, Department of Computer Science

E-Commerce or E-business has been playing a vital role in the future development of financial sectors. E-commerce is doing business online and electronically, showing tremendous business growth in our country. The main idea behind E-commerce is to extend the business horizon not only till the suppliers and distributors, but also directly to the consumers. E-commerce has a lot of benefits which add value to customer's satisfaction and leads to a higher business turnover resulting in higher income and profits. The present study has been undertaken to depict the future growth of E-commerce in India. It analyzes the present trend and opportunities offered by E-commerce to business persons producers and customers.

Keywords: E-commerce, Business, Electronic payment system.

Overview of Foreign Direct Investment (FDI) in Indian Economy

Dr. Neetu Aneja

Lecturer in Commerce

Abstract :- The main objective of the paper is to study examine and evaluate FDI in India. Almost every developed country of the world, in its initial stage of development, has made use of foreign capital to make up the deficiency of domestic saving technology gap and initial risk development of basic. Foreign capital has played an important role in the economic development of India. After independence foreign capital was used in India as a tool for promoting economic development and to make balance of payments favourable.

Awareness of Consumers Regarding Various Modes of Cashless Transactions

Mrs. Harsh Lecturer in Commerce

Abstract : The government wants India to go cashless but doing so is not easy. Cashless transactions have there downsides for consumers. But, for those with access to digital payments, rejecting cashless options or hesitating to embrace technology is also not the answer, especially in the wake of the cash crunch brought on by the government's demonetisation move. Researcher take objectives to find out the problem that check the awareness level of consumers regarding various modes of cashless transactions. Researcher takes secondary data for the present study. Researcher find out that in The Public Sector banks customers, 68.4 per cent out of total, use cashless transaction and only 31.6 per cent use cash transaction. From private sector banks, 75 per cent customers use cashless transaction and only 25 per cent customers' use cash transactions. The results show that private sector bank customer's percentage is more that use cashless transaction whenever most of account holder in public sector banks. The public sector banks should be convenience of own customer for more using cashless transaction.

Key words: Cashless Transactions, E-Banking and Demonetization.

Statement About Ownership and other Particulars of "ARCHA"

Form-IV (See Rule -8)

Place of Publication Sh. L.N. Hindu College, Rohtak 1.

2. Annual Periodicity of Publication

Printer's Name **Automatic Offset Press** 3.

Nationality Indian

Address Dayanand Math, Gohana Road, Rohtak

Principal, Dr. Vijay Kumar Arora 4. Publisheer's Name

Nationality Indian

Address Sh. L.N. Hindu College, Rohtak

5. Editor's Name Mrs. Madhu Arora

Nationality Indian

Sh. L.N. Hindu College, Rohtak Address

6. Name and Address of the Principal, Dr. Vijay Kumar Arora individual who owns the Sh. L.N. Hindu College, Rohtak

magazine and partners of shareholders holding more than one percent of the

total capital.

I, Dr. Vijay Kumar Arora, hereby declare that the particulars given above are correct to the best of my knowledge and belief.



Dr. Vijay Kumar Arora

(Signature of Publisher)

Various Committies













Various Committies















SH. L.N. HINDU COLLEGE, ROHTAK

Affiliated to M.D. University, Rohtak Reaccredited 'B' Grade by NAAC in 2016

Phone: +91-1262-265345, 9050015841, 9050406587

Website: www.lnhinducollege.com

e-mail: hindu_bca@yahoo.com, lnhinducollege@gmail.com